कलरव कक्षा-5

E-BOOKS DEVELOPED BY

1. Dr.Sanjay Sinha Director SCERT,U.P,Lucknow
2. Ajay Kumar Singh J.D.SSA,SCERT,Lucknow
3. Alpa Nigam(H.T)Primary Model School,Tilauli Sardarnagar,Gorakhpur
4.Amit Sharma(A.T)U.P.S Mahatwani,Nawabganj,Unnao
5. Anita Vishwakarma(A.T)P.S Saidpur,Pilibhit
6. Anubhav Yadav(A.T)P.S Gulariya,Hilauli,Unnao
7. Anupam Choudhary(A.T)P.S Naurangabad,Sahaswan,Budaun
8. Ashutosh Anand Awasthi(A.T)U.P.S Miyanganj,Barabanki
9. Deepak Kushwaha(A.T)U.P.S Gazaffarnagar,Hasanganz,Unnao
10.Firoz Khan(A.T)P.S Chidawak,Gulaothi,Bulandshahr
11.Gaurav Singh(A.T)U.P.S fatehpur Mathia,Haswa,Fatehpur
12.Hritik Verma(A.T)P.S Sangramkheda,Hilauli,Unnao
13.Maneesh Pratap Singh(A.T)P.S Premnagar,Fatehpur
14.Nitin Kumar Pandey(A.T)P.S Madhyanagar,Gilaula,Shravasti
15.Pranesh Bhushan Mishra(A.T)U.P.S Patha,Mahroni Lalitpur
16. Prashant Chaudhary(A.T)P.S Rawana,Jalilpur,Bijnor
17.Rajeev Kumar Sahu(A.T)U.P.S Saraigokul,Dhanpatganz,Sultanpur
18.Shashi Kumar(A.T)P.S Lachhikheda,Akohari,Hilauli,Unnao
19.Shivali Jaiswal(A.T)U.P.S Dhaulri,Jani,Meerut
20.Varunesh Mishra(A.T)P.S Madanpur Paniyar,Lambhua,Sultanpur

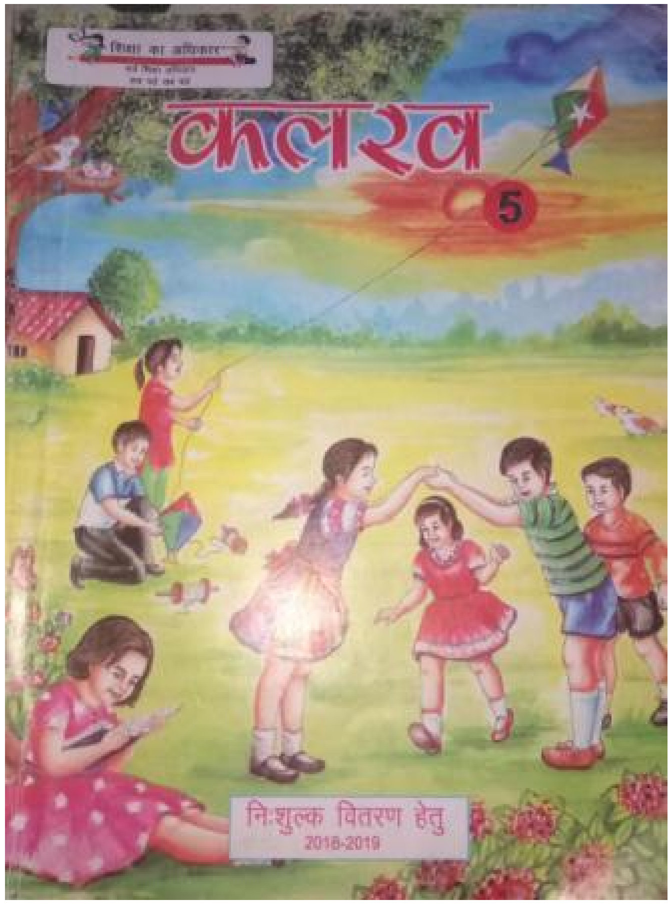
कलरव
5
निःशुल्क वितरण हेतु
2018-2019

1. विमल इन्दु की विशाल किरणें

विमल इन्दु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं।
अनादि तेरी अनन्त माया
जगत को लीला दिखा रही हैं।।

प्रसार तेरी दया का कितना
ये देखना हो तो देखे सागर।
तेरी प्रशंसा 11का राग प्यारे
तरंगमालाएँ गा रही हैं।।

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना
वो देख सकता है चन्द्रिका को।
तुम्हारे हँसने की द्दुन में नदियाँ
निनाद करती ही जा रही हैं।।

जो तेरी होवे दया दयानिद्दि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ।
सभी ये कहते पुकार कर के,
यही तो आशा दिला रही हैं।

- जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' जैसे विश्व विख्यात महाकाव्य की रचना की। इन्होंने अनेक ऐतिहासिक नाटकों, उपन्यासों और कथाओं की रचना भी की। चन्द्रगुप्त, कंकाल, तितली आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

अनादि = जिसका कोई आरम्भ न हो , हमेशा रहने वाला

चन्द्रिका=चाँदनी

स्मित=मन्दहास ,मुस्कान

अनन्त= जिसका अन्त न हो

प्रसार=फैलाव, विस्तार

मनोरथ = मन की कामना, अभिलाषा

निनाद= गुंजार, ध्वनि

दयानिद्धि = दया का भण्डार, ईश्वर

तरंगमालाएँ = लहरों के समूह

भाव-बोध :

उत्तर दो -

(क)ईश्वर की महिमा प्रकृति के किन-किन रूपों में दिखायी दे रही है? दिए गए उत्तरों को सही क्रम में लिखो -

- ईश्वर का प्रकाश = चाँदनी के रूप में
- उसकी दया का प्रसार = नदियों के निनाद में
- उसकी प्रशंसा के राग = विमल इन्दु की विशाल किरणों के रूप में
- ईश्वर का मन्द हास = सागर की लहरों के गान में
- ईश्वर के हँसने की द्दुन = सागर के रूप में

(ख) परमात्मा को 'दयानिद्धि' क्यों कहा गया है?

(ग) तरंगमालाएँ क्या कर रही हैं ?

(घ) प्रभु की दया की तुलना सागर से क्यों की गई है ?

2. पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ

(ख) तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
निनाद करती ही जा रही हैं। तरंगमालाएँ गा रही हैं।

3. सोच-विचार: बताइए-
(क) प्रकृति द्वारा निर्मित दस चीजों के नाम ।
(ख) मानव द्वारा निर्मित बीस चीजों के नाम ।

4. भाषा के रंग -
(क) नीचे लिखे शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए -(क) नीचे लिखे शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए -
जैसे - सागर: गागर
इंदु, धुन, माया, लीला, मिला

(ख) नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए -
जैसे - इंदु: चंद्रमा
प्रकाश, सागर, मनोरथ, जगत, तरंग

5. तुम्हारी कलम से -

सुबह-शाम के दृश्यों को देखकर जो छवि आपके मन में उभरती है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी -
कविता का अभ्यास कर कक्षा में भाव पूर्ण ढंग से सुनाइए ।

7. इस कविता को ध्यान पूर्वक पढ़िए-

पथ मेरा आलोकित कर दो।
नवल प्रात की नवल रश्मियों से मेरे उर का तम हर दो।।
मैं नन्हा सा पथिक विश्व के पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा सा विहग विश्व के नभ में उड़ना सीख रहा हूँ।
पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक मुझको ऐसे पग दो, पर दो।।
पाया जग से जितना अब तक और अभी जितना मैं पाऊँ,
मनोकामना है यह मेरी उससे कहीं अधिक दे जाऊँ।
धरती को ही स्वर्ग बनाने का मुझको मंगलमय वर दो।।

- **द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी**

- अब, इस कविता पर तीन प्रश्न बनाइए।
- कविता को मनचाहा शीर्षक दीजिए।

- कविता पर चित्र बनाइए।

2.पंच परमेश्वर

3U2L68

जुम्मन शेख और अलगू चौद्दरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन-देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते तो जुम्मन के भरोसे अपना घर छोड़ देते थे। इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था, जब दोनों बालक ही थे और जुम्मन के पिता जुमराती उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थीं। उनके पास थोड़ी सी जायदाद थी परन्तु उनके निकट सम्बन्द्यिों में कोई न था। जुम्मन ने लम्बे-चौड़े वायदे करके वह जायदाद अपने नाम लिखवा ली थी। जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री नहीं हुई, तब तक खाला की खूब खातिरदारी हुई। स्वादिष्ट पदार्थ खिलाये गए। रजिस्ट्री की मुहर लगते ही इस खातिरदारी पर भी मुहर लग गयी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियाँ देने के साथ कड़वी बातें भी सुनाने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गए।

कुछ दिन खाला ने सब सुना और सहा, पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने गृहस्वामिनी के प्रबन्द्द में दखल देना उचित न समझा।

कुछ दिन तक और यों ही रो-द्दोकर काम चलता रहा। अन्त में एक दिन खाला ने कहा, "बेटा तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लूँगी।"

जुम्मन ने द्दृष्टता के साथ उत्तर दिया, "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?" खाला बिगड़ गयीं। उन्होंने पंचायत करने की द्दमकी दी। जुम्मन बोले, "हाँ, जरूर पंचायत कर लो। फैसला हो जाय। मुझे भी रात-दिन की यह खटपट पसन्द नहीं।"

एक दिन सन्ध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा प्रबन्द्द कर रखा था। पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की, "पंचो, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भान्जे जुम्मन के नाम लिख दी थी। जुम्मन ने रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। सालभर तो मैंने रो-द्दोकर इसके साथ काटा, पर अब सहा नहीं जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा। मैं बेसहारा हूँ। तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह चलूँ। मैं पंचों की बात सिर-माथे चढ़ाऊँगी।"

सरपंच किसे बनाया जाय, इस प्रश्न पर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहा-सुनी हो गयी। अन्त में खाला बोलीं - "बेटा, पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने

दो, अलगू चौद्दरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच मानती हूँ।" जुम्मन शेख आनन्द से फूल उठे, परन्तु मन के भावों को छिपाकर बोले, "चलो, अलगू चौद्दरी ही सही।"

अलगू चौद्दरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा, "शेख जुम्मन! हम तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।" जुम्मन ने कहा, "खुदा गवाह है, आज तक मैंने खालाजान को कोई तकलीफ नहीं दी।"

अलगू चौद्दरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया है? अभी तो यह मेरे साथ बैठे थे। अब इतने प्रश्न मुझसे क्यों पूछते ह® ? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फैसला सुनाया, "जुम्मन शेख ! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह उचित मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाय। बस यही हमारा फैसला है। अगर खर्च देना मन्जूर न हो तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाय।"

फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फैसले की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे, पर इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा। वे इस ताक में थे कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौद्दरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाये थे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का? गाँव में समझू साहु थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौद्दरी से बैल खरीद लिया।

समझू साहु ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। न चारे की फिक्र, न पानी की। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। एक दिन साहुजी ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने जोर लगाया, पर वह आद्दे रास्ते में ही द्दरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

इस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब बैल का दाम माँगते, तब साहु-सहुवाइन दोनों ही झल्ला उठते। कहते मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं !

इसी तरह कई बार झगड़े हुए पर साहु जी ने बैल का दाम न चुकाया। लोगों ने साहु जी को समझाया, "भाई पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाय उसे स्वीकार कर लो।" साहु जी राजी हो गए तथा अलगू ने भी हामी भर ली।

उसी वृक्ष के नीचे पंचायत शुरू हुई। रामद्दन ने कहा, "चौद्दरी, बोलो किसको पंच मानते हो?" अलगू ने कहा, "समझू साहु ही चुन लें।"

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले, "मेरी ओर से जुम्मन शेख।"

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू का कलेजा द्दक-द्दक करने लगा, फिर भी

उन्होंने कहा, ”ठीक है, मुझे स्वीकार है।“

सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा - मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। सत्य से जौ-भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।

पंचों ने दोनों से सवाल-जवाब शुरू किया। बहुत देर तक दोनों अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। अन्त में जुम्मन ने फैसला सुनाया, ”अलगू चौद्दरी और समझू साहु ! पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू के लिए उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होंने बैल लिया था, उस समय उसे कोई बीमारी न थी। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का प्रबन्द्द नहीं किया गया।“

अलगू चौद्दरी फूले न समाए, उठ खड़े हुए और जोर से बोले, ”पंच परमेश्वर की जय“। साथ ही सभी लोगों ने दुहराया, ”पंच परमेश्वर की जय।“

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले से लिपट गए। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल द्दुल गया। मित्रता की मुरझायी हुई लता फिर हरी हो गयी।

- प्रेमचन्द

प्रेमचन्द हिन्दी में ‘कथा सम्राट’ के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने हिंदी तथा उर्दू में लगभग तीन सौ कहानियाँ तथा अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की। इनकी रचनाओं में ग्राम्य जीवन और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण हुआ है। इनके उपन्यासों में गोदान, गबन तथा कहानियों में ईदगाह, पूस की रात, दो बैलों की कथा, कफन आदि प्रमुख हैं। ‘मानसरोवर’ इनकी कहानियों का संग्रह है।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ -

स्वादिष्ट = जायकेदार
दृद्दष्टता = ढिठाई
गृहस्वामिनी =घर की मालकिन
कबूल = स्वीकार
दैवयोग = ईश्वर की इच्छा
जिरह = बहस
परिश्रम = मेहनत
सर्वोच्च = सबसे ऊँचा

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) जायदाद की रजिस्ट्री होते ही जुम्मन का व्यवहार बदल गया। इससे जुम्मन के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है ?
(ख) ”मैं अलग पका-खा लूँगी“ खाला ने ऐसा क्यों कहा ?
(ग) जुम्मन ने खाला को रोटी-कपड़ा देना क्यों कुबूल किया था ?
(घ) फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में क्यों आ गए ?
(ङ) सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में कौन-सा भाव पैदा हुआ ?

2. सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए -

(क) जुम्मन का मित्र होते हुए भी पंचायत में अलगू ने उनके खिलाफ फैसला दिया, क्योंकि -

- अलगू सच्चा मित्र नहीं था। ( )
- जुम्मन के घमंडी स्वभाव से अलगू नाराज था। ( )
- सरपंच का स्थान ग्रहण करने वाला व्यक्ति निष्पक्ष होकर न्याय करता है। ( )

(ख) जुम्मन शेख ने समझू साहु के विरुद्ध फैसला दिया कि बैल का पूरा दाम अलगू चैधरी को दें, क्योंकि -

- जुम्मन शेख ने सरपंच बनकर समझू साहु से बदला लिया। ( )
- जुम्मन शेख ने अपने मित्र अलगू चैधरी का पक्ष लिया। ( )
- बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का प्रबंधनहीं किया गया। ( )

3. कहानी से संबंधित वाक्य गलत क्रम में लिखे गए हैं, उन्हें सही क्रम में लिखिए-

- जुम्मन ने लंबे-चैड़े वायदे करके वह जायदाद अपने नाम लिखवा ली थी।
- थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले से लिपट गए।
- जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थीं।
- सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ।
- उनके पास थोड़ी जायदाद थी, परंतु उनके निकट संबंधियों में कोई न था।
- एक दिन संध्या के समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी।
- अलगू चैधरी ने जुम्मन से जिरह शुरू की।

4. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और उनके सामने खाली जगह में 'किसने-किससे कहा' लिखिए -

कथन किसने-किससे कहा

- बेटा तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपये ....

दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लूँगी।

- रुपये क्या यहाँ फलते हैं ? ....

- शेख जुम्मन! हम तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय ....
- तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।
- भाई पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाए उसे ....

स्वीकार कर लो।

- समझू के लिए उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। ....
- पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन। ....

5. नीचे लिखी पंक्तियों का आशय अपने शब्दों में लिखिए -

- रजिस्ट्री की मुहर लगते ही खातिरदारी पर भी मुहर लग गई।
- कुछ दिनों तक और यों ही रो-धोकर काम चलता रहा।
- जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?"
- जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा।

- ‘मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। सत्य से जौ-भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।

6. भाषा के रंग -

(क) मुहावरों का सही अर्थ से मिलान कर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

मुहावरा	अर्थ
मुहर लग जाना	चुप रह जाना
सिर माथे चढ़ाना	मन साफ हो जाना
सन्नाटे में आ जाना	पक्का हो जाना
कलेजा धक-धक करना	खुशी से स्वीकार करना
दिल का मैल धुल जाना	अधिक घबरा जाना

(ख) निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए -

निबाह, निठुर, पहर, घर, पूरा, भगत

7. तुम्हारी कलम से -

‘सरपंच कैसा होना चाहिए’ इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

8. अब करने की बारी -

(क) इस कहानी को अपने शब्दों में सुनाइए।

(ख) अपने आस-पास घटी किसी घटना/विवाद के बाद पंचों के फैसले के बारे में चर्चा कीजिए, जिससे विवाद का निपटारा हुआ हो।

(ग) कहानी पर अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।

9. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1. ....

2. ....

10. इस कहानी से -

(क)मैंने सीखा -..

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

3. मेरी शिक्षा

3UBH7V

पाँचवें या छठे बरस में मेरा अक्षरारंभ कराया गया था। उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार अक्षरारंभ मौलवी साहब ने बिस्मिल्लाह के साथ कराया था। जिस दिन अक्षरारंभ हुआ, मौलवी साहब आए; मिठाई बाँटी गई। हम तीन विद्यार्थी उनके सुपुर्द किए गए- एक मैं और दूसरे दो, अपने कुटुंब के ही चचेरे भाई। यमुना प्रसाद जी सबसे बड़े थे। वे हमारे लीडर थे। वे तमाम खेल और लड़कपन की शैतानी में आगे रहा करते थे। उनके एक चचा, जो मेरे भी चचा थे, बहुत मजाक पसंद थे। वह मेरे पिता जी के छोटे भाई थे, पर पिता जी के कई गुण उन्होंने भी सीखे थे। वह घोड़े की सवारी करते थे। बंदूक और गुलेल चलाना भी खूब जानते थे। फ़ारसी भी पढ़े थे और शतरंज भी बहुत खेलते थे।

मौलवी साहब जो हम लोगों को पढ़ाने आए, विचित्र आदमी थे। उनका बहुत-सी बातों पर दावा था। बलदेव चचा के मजाक के लिए वह एक बहुत ही उपयोगी साधन बन गए। चचा तरह-तरह की बातें मौलवी को सुनाते और उनको उत्साह देकर यह कहलवा देते कि वह भी, चाहे कोई भी काम क्यों न हो, जानते या कर सकते हैं। मौलवी साहब का दावा था कि वे शतरंज खेलना भी खूब जानते हैं। बलदेव चचा उन्हें शतरंज खेलाते पर वे कभी न जीतते। हम बच्चे इस मजाक को कौतूहल से सुनते।

इस प्रकार के मजाकों के बीच हम फ़ारसी पढ़ते रहे। कुछ महीने बाद मौलवी साहब चले गए। दूसरे मौलवी साहब बुलाए गए। वे बहुत गंभीर थे और अच्छा पढ़ाते भी थे। हफ्ते में साढ़े पाँच दिन फ़ारसी पढ़ाते थे। बृहस्पतिवार की दोपहर के बाद और शुक्रवार की दोपहर तक फ़ारसी से छुट्टी रहती थी, तब गिनती सिखाते थे। खेलने-कूदने के लिए भी समय दिया जाता था।

हम लोग खूब सबेरे उठकर मौलवी साहब के पास जाते थे। वे एक कोठरी में रहा करते थे।सामने आँगन में तख्तपोश पर बैठकर हम पढ़ा करते थे। सवेरे आकर पहले का पढ़ा हुआ पाठ दोहराया जाता। जो जितना जल्दी याद कर लेता, उसको उतना ही जल्द नया सबक पढ़ा दिया

जाता था। तब तक सूर्योदय हो जाता। हम अपना मुँह हाथ धो लेते और माँ के पास कुछ खाने के लिए पहुँच जाते। प्रायः आधा घंटे की छुट्टी मिलती। नाश्ता करके लौटने पर सबक याद करना पड़ता और सबक याद करके सुना देने के बाद मौलवी साहब हुक्म देते- किताब बन्द करो। किताब बंद करके तख्ती निकालनी होती। तख्ती भर जाती तो उसे धोना पड़ता। इस क्रिया में भी कुछ समय खेलने को मिलता। दोपहर को नहाने और खाने के लिए एक या डेढ़ घंटे की छुट्टी मिलती और खाकर फिर उसी तख्तपोश पर सोना पड़ता। मौलवी साहब चारपाई पर सोते। दोपहर के बाद दूसरा सबक मिलता और उसको याद करके सुनाने पर ही खेलने की छुट्टी मिलती।

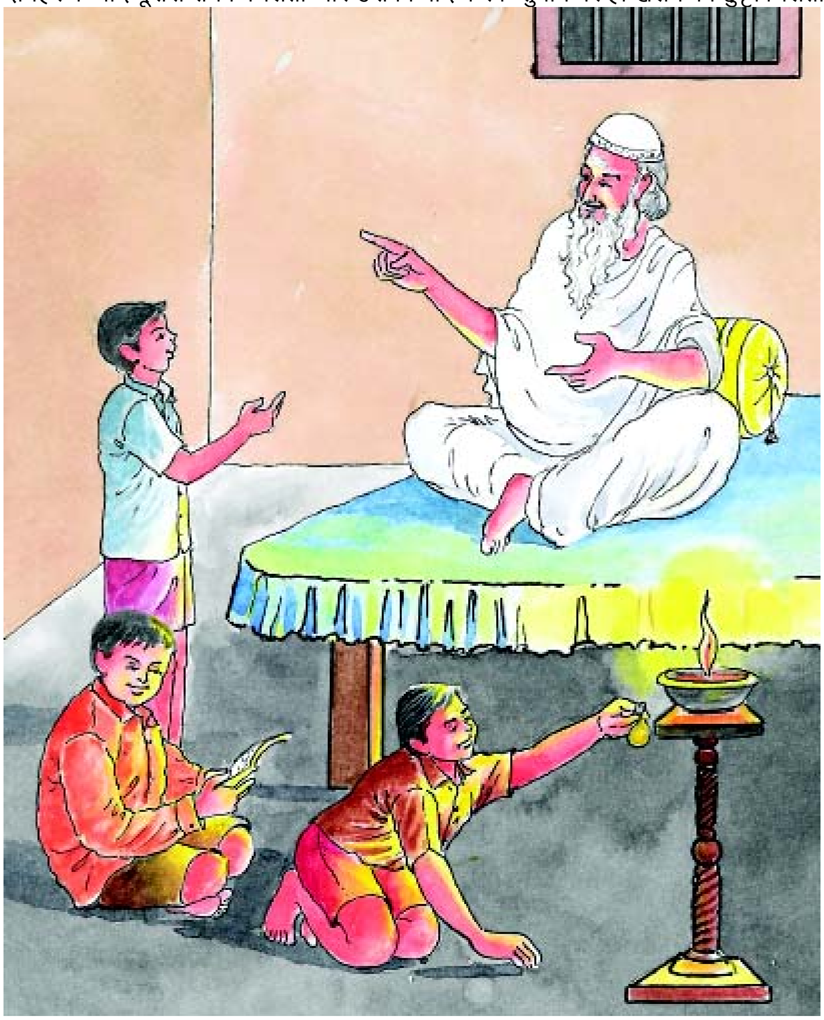

शाम को जल्द नींद आती। डर रहता कि मौलवी साहब हमें पलक झपकाते देख न लें, नहीं तो मार पड़ती। जल्दी छुट्टी के दो उपाय थे। खेल-कूद में जमना भाई लीडर थे। जल्दी छुट्टी पाने के लिए भी उपाय वही करते। पढ़ने के लिए तेल का दीया जलाया जाता था। जमना भाई रेत की छोटी पोटली बना लेते और छिपाकर उसे दीये में रख देते। वह शीघ्र ही तेल सोख लेती और दीया जल्द बुझने पर आ जाता। मौलवी साहब दाई पर गुस्सा होते कि तेल कम क्यों डाला; और वे मजबूर होकर किताब बंद करने का हुक्म दे देते।

और जो कुछ फारसी का ज्ञान हुआ, उन्हीं मौलवी साहब ने दिया। हम सब भी उनको प्यार करने लगे थे। जब घर छोड़कर छपरा अंग्रेजी पढ़ने के लिए जाना पड़ा तो मौलवी साहब को और हम लोगों को भी बहुत दुःख हुआ।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(आत्मकथा से)

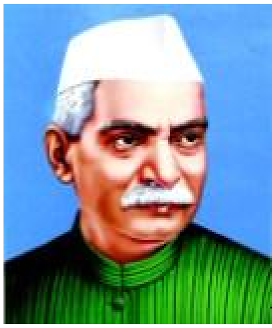डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। ये कुशल वक्ता, प्रशासक एवं साहित्यानुरागी थे।

अभ्यास

शब्दार्थ

बेखौफ = निडर
अक्षरारंभ = पढ़ने की शुरुआत
सबक = सीख,
जानकारी बिस्मिल्लाह = शुभारंभ
दरख्त = पेड़
सुपुर्द = सौंपना

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) बालक राजेंद्र प्रसाद की शिक्षा कब व कहाँ हुई ?
(ख) उनके साथ कौन-कौन पढ़ता था ?
(ग) पहले मौलवी साहब और दूसरे मौलवी साहब में क्या अंतर था ?
(घ) देर तक न पढ़ना पड़े, इसके लिए जमना भाई क्या चाल चलते थे ?

2. सोच-विचार: बताइए -

दूसरे वाले मौलवी साहब के बारे में ऐसा क्यों कहा गया कि "वे बहुत गंभीर थे और अच्छा पढ़ाते भी थे।"

3. भाषा के रंग -

(क) नीचे लिखे शब्दों को सही क्रम में लिखकर वाक्य बनाइए -

- कोठरी/करते/रहा/में/वे/एक/थे
- समय/भी/था/खेलने/-/के/लिए/कूदने/दिया/जाता
- आधा/प्रायः/मिलती/छुट्टी/घण्टे/की/थी
- चारपाई/साहब/सोते/पर/मौलवी/थे

(ख) छोटे-बड़े, इधर-उधर: यहाँ विलोम अर्थ देने वाले शब्दों की जोड़ी बनी है। इस प्रकार के शब्दों के जोड़े पुस्तक से ढँूढ़कर लिखिए।

(ग) धीरे-धीरे, तरह-तरह: यहाँ एक ही शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है, इस प्रकार के पाँच शब्दों के जोड़े पुस्तक से ढूँढ़कर लिखिए।

(घ) 'बेखौफ' शब्द में 'बे' उर्दू का उपसर्ग जुड़ा है। यह उपसर्ग शब्द में जुड़कर उसका अर्थ उलटा कर देता है। खौफ का अर्थ होता है - भय, परंतु बेखौफ का अर्थ निर्भय हो जाता है। इसी प्रकार इन शब्दों के अर्थ लिखिए-

बेदाग, बेकसूर, बेघर, बेवजह, बेहिसाब, बेमिसाल

4. तुम्हारी कलम से -

(क) आपका अक्षरारंभ किस उम्र में और कैसे हुआ ?

(ख) आप अपने स्कूल में कौन-कौन से विषय पढ़ते व सीखते हैं ?

(ग) आपको कौन-सा विषय सबसे अच्छा लगता है और क्यों ?

5. अब करने की बारी -

(क) डॉ. राजेंद्र प्रसाद स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। उनकी आत्मकथा पढ़िए।

(ख) **"सपने वो नहीं, जो आप सोते वक्त देखते हैं। सपने वो होते हैं जो आपको सोने नहीं देते।"** यह प्रसिद्ध वाक्य भारत के एक पूर्व राष्ट्रपति का है। पता कीजिए ये कौन थे?

6. **मेरे दो प्रश्न:** पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1. ....

2. ....

7. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा - ....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

यह भी जानिए -

जब कोई व्यक्ति अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं एवं अनुभवों को स्वयं ईमानदारी से लिखता है तो उसे **आत्मकथा** कहते हैं। आत्मकथा यानि अपने बारे में लिखी हुई कथा। क्या आपको भी अपने बचपन में घटी घटनाएँ याद हैं ? तो आप भी शुरू कर सकते हो अपनी आत्मकथा लिखना ! अपने बचपन की घटनाओं को याद कीजिए और लिखिए।

4.सरिता

3UKD9I

यह लघु सरिता का बहता जल।
कितना शीतल, कितना निर्मल,
हिमगिरि के हिम से निकल-निकल,
यह विमल दूद्द-सा हिम का जल,
कर-कर निनाद कल-कल, छल-छल,
तन का चंचल मन का विह्वल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।

ऊँचे शिखरों से उतर-उतर,
गिर-गिर गिरि की चट्टानों पर,
कंकड़-कंकड़ पैदल चलकर,
दिन-भर, रजनी-भर, जीवन-भर,
द्दोता वसुद्दा का अन्तस्तल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।

हिम के पत्थर वे पिघल-पिघल,
बन गए द्दरा का वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकल,
पी-पीकर अंजलि भर मृदु जल,
नित जल कर भी कितना शीतल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।

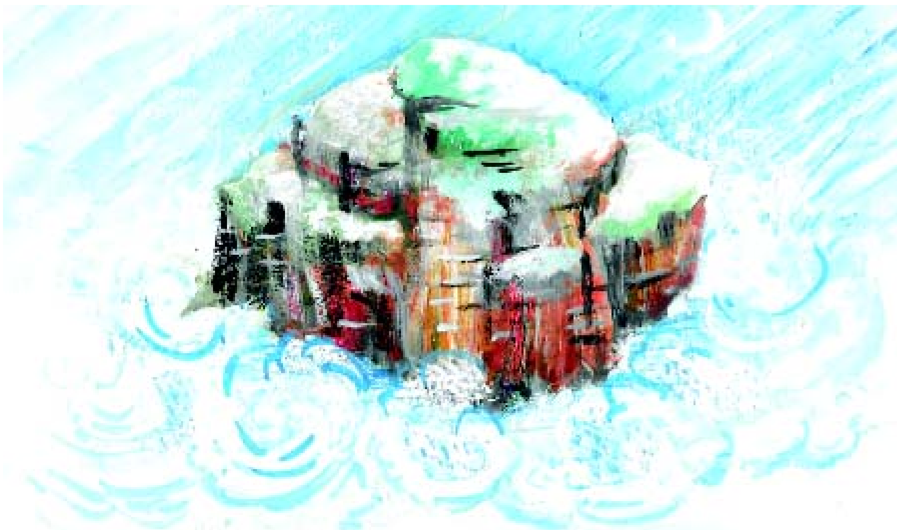

कितना कोमल, कितना वत्सल,
रे जननी का वह अन्तस्तल,
जिसका यह शीतल करुणा जल,
बहता रहता युग-युग अविरल,
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल।
यह लघु सरिता का बहता जल।।

- गोपाल सिंह नेपाली

चम्पारन (बिहार) में जन्मे गोपाल सिंह नेपाली को प्रकृति से बहुत प्रेम था। इनकी रचनाओं में यह प्रकृति प्रेम स्पष्ट झलकता है। उमंग, पंछी, नीलिमा, सावन आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

अभ्यास प्रश्न

शब्दार्थ

विमल = स्वच्छ, साफ
रजनी = रात
निनाद = ध्वनि, आवाज
वत्सल = पुत्रवत् स्नेह करने वाला
विह्वल = व्याकुल
अन्तस्तल = हृदय
वसुद्दा = पृथ्वी
अविरल = निरन्तर, लगातार

भाव बोध -

1. उत्तर दो -

(क) सरिता का जल कहाँ से आता है ?
(ख) सरिता का जल रात-दिन बहते हुए कौन-सा कार्य करता है ?
(ग) पथिक सरिता के जल से किस प्रकार सुख पाता है ?

(घ) कवि ने जननी के अन्तस्तल को कोमल क्यों कहा है ?
(ङ) सरिता के जल को 'तन का चंचल' क्यों कहा गया है ?

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'तन का चंचल मन का विह्वल, यह लघु सरिता का बहता जल'
(ख) 'दिन-भर, रजनी-भर, जीवन-भर, धोता वसुधा का अंतस्तल,'
(ग) 'नित जलकर भी कितना शीतल'
(घ) 'बहता रहता युग-युग अविरल'

3. सोच-विचार: बताइए -

क्या कारण हैं - नदियों का जल उद्गम स्थल पर शुद्ध होता है जो आगे चलकर प्रदूषित हो जाता है ?

4. भाषा के रंग -

(क) कल-कल, छल-छल समान ध्वनि के शब्द हैं जिनका एक साथ दोहरा प्रयोग हुआ है। इससे भाषा में सुंदरता बढ़ी है। कविता में आए इस प्रकार के अन्य शब्द लिखिए।
(ख) कविता की पंक्तियों के अंत में समान तुक वाले शब्द आए हैं जैसे, विकल - निकल, जल-छल। इसी प्रकार समान तुक वाले शब्दों के जोड़े बनाइए।
(ग) कविता में सरिता के जल के लिए अनेक विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे - शीतल, निर्मल आदि। ऐसे ही पाँच और विशेषण शब्दों को कविता से ढूँढ़कर लिखिए।

(घ) दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

सरिता - नदी, तरंगिणी पर्वत - ...., ...
जल - ...., ... वसुधा - ...., ...

5. अनुमान और कल्पना
यदि नदियों का जल सूख जाए तो क्या होगा ?

6. तुम्हारी कलम से
'जल ही जीवन है।' इस कथन के संबंध में अपने विचारों को दस पंक्तियों में लिखिए।

7. अब करने की बारी
(क) कविता का अभ्यास कर प्रभावपूर्ण ढंग से कक्षा में सुनाइए।
(ख) पहाड़ से निकलती हुई नदी का चित्र बनाइए।

(ग) अपने क्षेत्र में बहने वाली नदियों के नाम लिखिए।

5.लाल बहादुर शास्त्री

बच्चो! आप के विद्यालय में दो अक्टूबर को दो महान विभूतियों का जन्मदिन मनाया जाता है- एक मोहन दास करमचंद गांधी और दूसरे ‘जय जवान-जय किसान’ का नारा देने वाले लाल बहादुर शास्त्री। लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 ई0 को मुगलसराय (तत्कालीन वाराणसी वर्तमान चंदौली) के साधारण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम शारदा प्रसाद तथा माता का नाम रामदुलारी देवी था। मात्र डेढ़ वर्ष की अवस्था में पिता का देहांत हो जाने के कारण अनेक अभावों और कठिनाइयों को झेलते हुए वे जीवन पथ पर आगे बढ़े। वे स्वतंत्र भारत के पहले रेल मंत्री बने। उसके बाद उद्योग मंत्री तथा स्वराष्ट्र मंत्री भी बने। जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद ये सर्वसम्मति से भारत के दूसरे प्रधानमंत्री भी बने। देशवासियों के स्वाभिमान को जगाने वाले महान लोकप्रिय नेता लाल बहादुर शास्त्री का निधन 10 जनवरी 1966 को ताशकंद (रूस) में हुआ था।

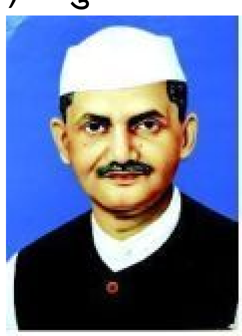

लाल बहादुर शास्त्री जी का व्यक्तित्व बहुत ही व्यावहारिक एवं संतुलित था। वे जो कहते थे, उसे पहले स्वयं करते थे। इसका उल्लेख उनके जीवन की कई घटनाओं में मिलता है। आइए, उनमें से कुछ प्रसंगों के बारे में जानें -

प्रसंग-1

शास्त्री जी उन दिनों रेलमंत्री थे। एक बार उन्हें बनारस के पास सेवापुरी जाना पड़ा। छोटे कद का होने के कारण शास्त्री जी को गाड़ी से प्लेटफार्म पर उतरने में काफी दिक्कत हुई। यह देखकर वहाँ खड़ी कुछ औरतें हँस कर कहने लगीं कि अब महसूस हो रहा होगा कि महिलाओं को प्लेटफार्म पर उतरते समय कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। प्लेटफार्म पर पहुँचते ही शास्त्री जी ने स्टेशन मास्टर को बुलाया और उनसे कहा कि क्या वे एक फावड़े का इंतजाम कर सकते हैं? फावड़ा तुरंत लाया गया। शास्त्री जी ने फावड़ा लेकर उस नीचे प्लेटफार्म के दूसरी ओर जमीन खोदनी शुरू कर दी और मिट्टी प्लेटफार्म पर डालने लगे। यह देखकर वहाँ जो लोग खड़े थे वे भी फावड़ा और उसी तरह की चीजें ले आए और शास्त्री जी का अनुसरण करने लगे। सभी को तब सुखद अचरज हुआ, जब तीन घंटों के अंदर वह नीचा प्लेटफार्म मानक स्तर तक ऊँचा बन गया।

प्रसंग-2

यह प्रसंग भी उस समय का है, जब शास्त्री जी रेलमंत्री थे और सरकारी काम से इलाहाबाद जा रहे थे। शास्त्री जी की कार रेल फाटक से थोड़ी ही दूर थी कि लाइनमैन ने फाटक बंद कर दिया। शास्त्री जी के स्टाफ का एक सदस्य लाइनमैन की ओर दौड़कर गया और उससे कहा कि कार में रेलमंत्री बैठे हैं, तुम तुरंत फाटक खोल दो। लाइनमैन ने फाटक खोलने से साफ मना कर दिया और बोला कि मैं नहीं जानता कि कौन रेलमंत्री है और कौन प्रधानमंत्री। मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हूँ। जब आने वाली गाड़ी गुजर जाएगी, फाटक खोल दूँगा। स्टाफ के अफसर ने लौटकर कहा“ श्रीमान्, वह आदमी बड़ा जिद्दी है। उसके विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।” दूसरे दिन जब लाइनमैन की तरक्की कर उसे आगे का ग्रेड दिया गया तो सभी लोग अचंभे में पड़ गए।

प्रसंग-3

यह प्रसंग उन दिनों का है जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री थे। एक बार उनका ड्राइवर सुबह निश्चित समय पर नहीं आया। उन्होंने कुछ समय प्रतीक्षा की फिर हाथ में फाइल लेकर पैदल ही दफ्तर की ओर चल दिए। उनका दफ्तर घर से करीब एक किलोमीटर दूर था। इस बात से सचिवालय में हड़कंप मच गया। ड्राइवर से जवाब तलब किया गया। जवाब में उसने कहा कि एकाएक उसका छोटा बच्चा गंभीर रूप से बीमार हो गया था और उसे भागकर डॉक्टर के पास जाना पड़ा। शिकायती फाइल जब शास्त्री जी के पास पहुँची तो उन्होंने उस पर टिप्पणी लिखी कि ''उसके लिए उसके बेटे के जीवन का महत्व और किसी भी कार्य से अधिक महत्वपूर्ण है।''

प्रसंग-4

यह घटना उस समय की है, जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री थे। एक दिन खाने की मेज पर परिवार के सभी सदस्य बहुत गंभीर थे और बिना कुछ बोले चुपचाप खाना खा रहे थे। जब शास्त्री जी ने इस बारे में पूछा तो भी वे चुप रहे। उनके जोर देने पर उनके बेटे ने कहा ''बाबू जी, आजकल आप हमें बहुत कम समय देते हैं।'' शास्त्री जी ने जवाब दिया ''तुम जानते हो कि प्रधानमंत्री बनने के पहले सिर्फ तुम लोग ही मेरे परिवार के सदस्य थे। प्रधानमंत्री बनने के बाद यह पूरा देश मेरा परिवार है। अगर इसे ध्यान में रखें तो तुम्हारे साथ जो समय बीतता है, वह देश के करोड़ों लोगों के साथ बीतने वाले समय के अनुपात की दृष्टि से बहुत ज्यादा है।''

प्रसंग-5

शास्त्री जी के प्रधानमंत्री बनने के फौरन बाद एक विपक्षी दल ने प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन की अगुवाई महिलाएं कर रही थीं। अनेक महिलाएं अपनी गोद में बच्चे लिए हुए थीं। प्रधानमंत्री आवास के सामने पहुँच कर उन्होंने बहुत ऊँची आवाज में चिल्लाना शुरू कर दिया। तेज गरमी के कारण प्रदर्शन करने वाले पसीना-पसीना हो रहे थे। एकाएक शास्त्री जी उठ खड़े हुए। उन्होंने एक टेª उठाई, उसमें गिलास रखे और वाटर कूलर के पास जाकर एक-एक करके उनमें पानी भरा। इसके बाद

वे हाथ में टेª लेकर फाटक की ओर चल दिए। सुरक्षा बलों ने मदद देने को कहा लेकिन उन्होंने सख्ती से मना कर दिया।

वे सीधे एक महिला प्रदर्शनकारी के पास पहुँचे। महिला की गोद में एक छोटा सा बच्चा था जो रो रहा था। उन्होंने पिता की तरह महिला को डाँटते हुए कहा,'' तुम इस छोटे बच्चे की माँ हो। क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि यह बच्चा प्यासा है, इसीलिए रो रहा है ?" उन्होंने बच्चे को अपनी गोद में लिया और टेª माँ के हाथ में पकड़ा दी। फिर एक गिलास उठाया और बच्चे को पानी पिलाने लगे। महिलाओं ने उनके पैर छूने शुरू कर दिए। कुछ ही क्षणों में भीड़ हटने लगी और लोगों को यह बिल्कुल याद न रहा कि वे वहाँ किस उद्देश्य से आए थे। जब सिर्फ चार-पाँच आदमी बच गए तब शास्त्री जी ने उनसे अनुरोध किया कि वे अंदर चलें और इस संबंध्ा में बातचीत करें।

अभ्यास

शब्दार्थ

प्राचीर = दीवार
पुश्तैनी = पुरखों की
प्रतिष्ठा = सम्मान
आर्थिक = धन संबंधी
निधन = मृत्यु
स्तब्ध = जड़, सन्न

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) ड्राइवर की शिकायती फाइल पर शास्त्री जी ने क्या लिखा ?
(ख) शास्त्री जी ने लाइनमैन की तरक्की क्यों कर दी ?
(ग) प्रदर्शनकारी विरोध करने की जगह शास्त्री जी का गुणगान क्यों करने लगे ?
(घ) पाठ से शास्त्री जी की किन-किन विशेषताआंे का पता चलता है ?

2. सोच-विचार: बताइए -

- यदि आप लाइनमैन होते और रेल फाटक बंद करने के दौरान रेलमंत्री रेलफाटक के समीप आ गए होते तो आप क्या करते ?
- लाल बहादुर शास्त्री के जीवन का कौन-सा प्रसंग आपको सबसे अच्छा लगा, क्यों?
- प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री स्वयं महिला प्रदर्शनकारी के बच्चे को पानी पिलाने लगे। इससे उनके स्वभाव की किस विशेषता का पता चलता है ?
- यदि आपको अपने गाँव/मोहल्ले का प्रधान/सभासद बना दिया जाए तो आप अपने स्कूल के लिए क्या-क्या करेंगे ?

3. भाषा के रंग -

(क) नीचे प्रत्येक पंक्ति में दो शब्द दिए गए हैं। पढ़कर सोचिए कि दोनों का अर्थ एक जैसा है या एक दूसरे से उलटा। यदि यह शब्द समानार्थक है तो स पर घेरा खींचिए, यदि विलोम (विपरीतार्थक) हैं तो वि पर घेरा खींचिए। उदाहरण देखिए -

- सुंदर - खूबसूरत (स)
- मृदुल - कटु स वि
- विजय - पराजय स वि
- स विश्वास - अविश्वास स वि
- स यातना - पीड़ा स वि
- स पक्ष - विपक्ष स वि
- स आरंभ - अंत स वि
- स कठिनाई - मुश्किल स वि

(ख) निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए -
सुखद, आश्चर्य, सुरक्षाबल, स्वभाव, प्रदर्शन
(ग) निम्नलिखित विशेषण शब्दों से वाक्य बनाइए -
दयालु, कोमल, चतुर, श्रेष्ठ, कुछ, बनारसी, पाँच।

4. तुम्हारी कलम से

(क) लाल बहादुर शास्त्री के जीवन पर पाँच वाक्य लिखिए।
(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम हैं। आपके घर-स्कूल के आस-पास इन दिशाओं में क्या-क्या है?

दिशा घरके पास स्कूल के पास
पूर्व
पश्चि
उत्तर
दक्षिण

5. अब करने की बारी -

पता कीजिए इन महापुरुषों के लोकप्रिय नारे कौन से थे ?
महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, लोकमान्य तिलक, लाल बहादुर शास्त्री, सुभाष चंद्र बोस।

6. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.
....
....

2.
....
....

7. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -
....
(ख) मैं करूँगी/करूँगा -
....

कितना सीखा-1

1. शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखिए -
सीतल, निबाह, जयदाद, वनारस, घोसला, मश्तिस्क, सोर

2. नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए अर्थ बताइए-
प्रसार, स्मित, निनाद, चंद्रिका, मनोरथ, बेसहारा, दैवयोग, उद्गार, प्राचीर, पुश्तैनी, आंदोलन, आक्रमण, विह्वल, वसुधा, अंतस्तल, वारि, अविरल।
3. उचित स्थान पर विराम चिह्न लगाइए-
अलगू जब बैल का दाम माँगते तब साहु सहुवाइन दोनों ही झल्ला उठते कहते मुर्दा बैल दिया था उस पर दाम माँगने चले हैं
4. निम्नलिखित गद्यांश पर चार प्रश्न बनाइए -
लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्टूबर 1904 ई. को मुगलसराय के साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद तथा माता का नाम रामदुलारी देवी था। वे भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने।
5. उत्तर दीजिए -
(क) 'विमल इंदु की विशाल किरणें' शीर्षक कविता के आधार पर बताइए मनोरथ कब पूरे होते हैं ?
(ख) जुम्मन में सरपंच का आसन ग्रहण करने पर कौन-सा भाव पैदा हुआ ?
(ग) जल्दी छुट्टी पाने के लिए जमना भाई क्या उपाय करते थे ?
(घ) व्याकुल पथिक सरिता के जल से किस प्रकार सुख पाता है ?
(ङ) "बाबू जी आजकल आप हमें बहुत कम समय देते हैं।" बेटे के ऐसा कहने पर शास्त्री जी ने क्या जवाब दिया ?
6. सरपंच के आसन पर बैठते समय अलगू चैधरी और जुम्मन शेख के मन में जिम्मेदारी का भाव न पैदा हुआ होता तो कहानी का क्या अंत होता ? सोचकर लिखिए।

7. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) विमल इंदु की विशाल किरणें, प्रकाश तेरा बता रही हैं।
(ख) जिसका यह शीतल करुणा जल, बहता रहता युग-युग अविरल।

8. बताइए/ सुनाइए -

- याद की गई कविता

- कोई एक कहानी

अपने आप-1
महर्षि वाल्मीकि

संस्कृत भाषा के आदि कवि और रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि के जन्म के बारे में प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उपनिषद् के विवरण के अनुसार महर्षि कश्यप और अदिति के नवम् पुत्र वरूण से इनका जन्म हुआ था। एक बार ध्यान में बैठे इनके शरीर को दीमकों ने बाँबी बनाकर ढक लिया। तपस्या पूरी करके जब वे दीमक की बाँबी से बाहर निकले तो लोग इन्हें वाल्मीकि कहने लगे। दीमक की बाँबी को भी वल्मीक कहते हैं।

तमसा नदी के तट पर महर्षि वाल्मीकि का आश्रम था। एक दिन इसी नदी के तट पर इनके सामने व्याध ने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से एक को मार डाला। तब दयालु महर्षि वाल्मीकि के मुख से इस करुण दृश्य को देखकर एक छंद निकला। यह संस्कृत भाषा में प्रथम अनुष्टुप छंद का श्लोक था। भगवान श्री राम की कथा के आधार पर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य की रचना की थी। सीता जी ने अपने वनवास का अंतिम समय महर्षि के आश्रम में व्यतीत किया था। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही लव और कुश का जन्म हुआ था। लव-कुश की शिक्षा-दीक्षा महर्षि वाल्मीकि की देखरेख में ही हुई थी। आश्विन मास की शरद पूर्णिमा को महर्षि वाल्मीकि का जन्म दिवस मनाया जाता है। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार, वाल्मीकि के महर्षि बनने से पहले उनका नाम रत्नाकर था। नारद मुनि से भेंट होने के बाद उनके जीवन की दिशा बदल गई।

महर्षि वाल्मीकि ने प्रथम महाकाव्य ‘रामायण‘ की रचना करके प्राणियों को सद्भावना के पथ पर चलने को प्रेरित किया।

6. प्रकृति की सीख

3V45CT

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।।

- सोहन लाल द्विवेदी

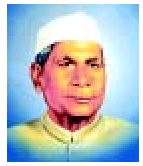

फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक कस्बे में जन्मे कवि सोहन लाल द्विवेदी की कविताओं में राष्ट्र-प्रेम तथा राष्ट्रीय जागरण का स्वर मुखर है। ‘दूधबतासा’ तथा ‘शिशु-भारती’ इनके प्रसिद्ध बालगीतों के संग्रह हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

तरल तरंग = पानी की चपल या चंचल लहर।

मृदुल = कोमल

उमंग = जोश, उत्साह

धैर्य = धीरज

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) पर्वत क्या संदेश दे रहा है ?

(ख) तरंग क्या कहती है ?

(ग) धैर्य के संबंध में पृथ्वी का क्या संदेश है ?

(घ) संसार को ढक लेने की सीख कौन दे रहा है ?

2. नीचे स्तम्भ ‘क’ में प्रकृति के कुछ अंगों के नाम लिखे गए हैं। स्तम्भ ‘ख’ में उनसे मिलने वाली सीख गलत क्रम में लिखी गई हैं, उन्हें सही क्रम में लिखिए -

‘क’ ’ख’

पर्वत कभी धैर्य न छोड़ो

सागर ढक लो तुम सारा संसार

तरंग मन में गहराई लाओ

पृथ्वी हृदय में मृदुल उमंग भर लो

नभ   ऊँचे बन जाओ

3. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) सागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ।

(ख) पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो, कितना ही हो सिर पर भार।

(ग) भर लो, भर लो अपने मन में, मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

(घ) नभ कहता है फैलो इतना, ढक लो तुम सारा संसार।

4. सोच-विचार:बताइए -

हम सब हर समय कुछ न कुछ नया सीखते रहते हैं। हमारे आस-पास बहुत कुछ ऐसा होता है, जो सीखने में मदद देता है। बताइए, आपके आस-पास ऐसी कौन-कौन सी चीजें हैं जो आपको कुछ न कुछ सिखाती हैं।

5. तुम्हारी कलम से -

लिखिए, क्या सीख मिलती है -

- वृक्षों से
- फूलों से
- नदियों से
- कोयल से

6. अब करने की बारी -

(क) पर्वत और लहराते हुए सागर का चित्र बनाइए।

(ख) 'प्रकृति वर्णन' से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।

(ग) इस कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।

7. मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

....

....

2.

....

....

8. इस कविता से -

(क) मैंने सीखा -

....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

- महात्मा गांधी

7.जीवन के रंग

3VD1EG

1. रमइया की हरी-भरी दुनिया

कुछ लोग उसे सनकी कहते हैं, कुछ जुनूनी तो कुछ और। मगर रमइया को इससे फर्क नहीं पड़ता। वह अपनी साइकिल पर ढेरों पौधे लिए रोज सुबह घर से निकल पड़ता है; गीत गाता है और सबसे पेड़ उगाने को कहता है। रमइया अपने सपने की धुन में मगन है। उसका सपना है हरी-भरी धरती का, जंगल बचाने का, पेड़ लगाने का। रमइया जानता है कि इस सपने को कैसे पूरा करना है। किसी की शादी हो तो उपहार में पौधा देता है; जन्मदिन हो तो पौधा भेंट करता है। जहाँ जो भी मिल जाए उसे एक पौधा थमा देता है।

कई लोगों को उस पर शक हुआ कि कौन है यह आदमी। कुछ दिन पहले तक तो गुजारे के लिए दूध बेचता था और अब दूध के साथ-साथ पौधे भी लिए घूमता है। कुछ लोगों की शिकायत पर वन विभाग के अधिकारियों ने उसे बुलवाया। अधिकारी कुछ पूछ पाते, उससे पहले ही रमइया ने एक पौधा उनकी ओर बढ़ाया और बोला - जी पहले यह नीम का पौधा लीजिए। दाँतों के लिए इसकी दातुन बहुत ही लाभदायक होती है। इसके पत्ते जलाने

से मच्छर दूर भाग जाते हैं। यह पौधा अपने घर के पास में लगाइएगा। अधिकारी ने और कुछ पूछने की जरूरत नहीं समझी।

रमइया का यह जुनून कैसे शुरू हुआ इसके पीछे भी एक कहानी है। वैसे तो उसे बचपन से पेड़-पौधे पसंद थे मगर अपने मास्टर जी की एक बात उसे हमेशा याद रही। मास्टर जी कहते थे - पेड़ हमें ताजी हवा, फल-फूल, छाया और बहुत कुछ देते हैं, जबकि बदले में बहुत थोड़ी-सी देखभाल माँगते हैं। इंसान होता तो इतना सब देने की बड़ी कीमत माँगता। रमइया ने कागज का नोट बनाकर उस पर पेड़ों की तस्वीर लगाई और उसके नीचे लिखा - 'पेड़ की कीमत पैसों से बढ़कर है।'

एक बार रमइया की बेटी को तेज सिर दर्द हुआ। दवा लेने पर कुछ दिन तो ठीक रही लेकिन फिर यह दर्द रोज होने लगा। रमइया ने कारण खोजा तो पता चला कि बेटी के स्कूल में बाहर बैठकर पढ़ाई होती है। वहाँ पेड़ नहीं थे जिसके कारण उसकी बेटी ही नहीं बल्कि कई बच्चों के साथ ऐसा हो रहा था। रमइया ने सोचा कि क्यों न वहाँ पर इतने पौधे लगा दिए जाएँ कि बच्चे छाँव में बैठकर पढ़ें। यही विचार रमइया के जुनून का कारण बन गया। रमइया अपने हाथों से अब तक सैकड़ों पौधे लगा चुका है। स्कूल, दफ्तर, मंदिर-मस्जिद जहाँ भी जाता है पेड़ों के गुण बताता है। नए-नए तरीकों से लोगों को पेड़ लगाने के लिए मनाता है। उसने बेटी-बेटा की शादी के कार्ड पर पेड़ों के महत्व का संदेश लिखा। नारा लगाया - **'धरती का अब करो शृंगार। पेड़ लगाओ सब दो-चार।।'** रमइया के इस जुनून में धीरे-धीरे बहुत लोग शामिल हो रहे हैं। वे कहते हैं - दस रमइया मिल जाएँ तो धरती बच जाए, जंगल भर जाएँ, खुशहाली आ जाए।

2. जंगल की आग

एक बार एक जंगल में आग लग गई। सभी जानवर आग बुझाने में जुट गए। जिसके हाथ में जो भी पात्र आया वह उसमें पानी भर कर आग में डालने लगा। सभी को आग बुझाने में जुटा देख, एक नन्ही गौरैया भी अपनी चोंच में पानी भर-भर कर आग में डालने लगी।

एक कौवा दूर सुरक्षित डाल पर बैठा तमाशा देख रहा था। वह गौरैया के पास आकर बोला- "नन्हीं गौरैया! क्यों बेकार मेहनत कर रही हो ? तुम्हारी नन्ही चोंच का बूँद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में क्या सहायता कर पाएगा?"

गौरैया बोली - यह तो मैं भी जानती हूँ, परंतु यदि कभी इस आग के बारे में बातें होंगी, तो मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं, बल्कि आग बुझाने वालों में लिया जाएगा।

अभ्यास

शब्दार्थ

पाठ में जिन शब्दों के अर्थ तुम्हें नहीं पता हैं, उन्हें छाँटकर लिखिए तथा शिक्षक/शब्दकोश की सहायता से इन शब्दों के अर्थ पता कीजिए।

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) रमइया के अंदर पेड़ लगाने का जुनून कैसे पैदा हुआ ?

(ख) रमइया का सपना क्या है ?

(ग) रमइया अपना सपना पूरा करने के लिए क्या-क्या करता है ?

(घ) रमइया ने कौन सा नारा दिया ?

(ङ) आग लगने पर नन्हीं गौरैया क्या कर रही थी ?

(च) कौवे ने गौरैया से क्या कहा ?

(छ) गौरैया ने कौवे को क्या जवाब दिया ?

2. सोच-विचार: बताइए -

(क) पेड़ थोड़ी सी देखभाल के बदले हमें क्या-क्या देते हैं ?
(ख) रमइया ने पेड़ लगाकर अपना सपना पूरा किया। आपका सपना क्या है ? इसे पूरा करने के लिए आप क्या करेंगे ?
(ग) अगर आपको पेड़ लगाने हों तो किस-किस के लगाओगे ? यही पेड़ क्यों लगाओगे ?
(घ) पेड़ कहाँ-कहाँ लगाओगे ? और इनकी देखभाल कैसे-कैसे करोगे ?

3. भाषा के रंग -

(क) 'वहाँ' शब्द में चंद्रबिंदु (अनुनासिक) तथा 'जंगल' शब्द में केवल बिंदी (अनुस्वार) लगा है। पाठ में आए हुए अनुस्वार और अनुनासिक लगे शब्दों को छाँटकर लिखिए-

अनुनासिक (ँ) शब्द ...., ..., ..., ...
अनुस्वार (ं) शब्द ...., ..., ..., ...

(ख) उदाहरण के अनुसार पानी के पर्यायवाची शब्दों में क्रमशः 'ज', 'द' व 'धि' जोड़कर कमल, बादल व समुद्र के पर्यायवाची बनाइए-

पानी कमल बादल समुद्र

जल जल+ज = जलज ....
वारि ....
नीर ....

(ग) 'ती' लगाकर पुलिंग से स्त्रीलिंग में बदलिए -

बुद्धिमान बुद्धिमती
रूपवान ....
गुणवान ....

श्रीमान ....

भाग्यवान   ....

शीलवान ....

(घ) विलोम लिखिए-

जागना .... उठना ....

रोना .... चढ़ना ....

कोमल .... पराजय ....

(ङ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

गौरैया बोली - यह तो .... भी जानती हूँ, परंतु यदि कभी इस .... के बारे में .... होगी, तो मेरा नाम आग .... वालों अथवा .... देखने वालों में नहीं, बल्कि .... बुझाने वालों में लिखा जाएगा।

(च) अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

पेड़ लगाना, सपने देखना, आग बुझाना, पेड़ों की देखभाल करना,

उपहार में पौधे देना, तमाशा देखना, कोशिश जारी रखना।

4. तुम्हारी कलम से -

(क) पाठ में एक वाक्य है - 'दस रमइया मिल जाएं तो धरती बच जाए'। सोचिए और लिखिए कि हम किन-किन तरीकों से लोगों को रमइया की भाँति पेड़ लगाने को जागरूक कर सकते हैं ?

(ख) अपने बड़ां े से पता करके लिखिए -

- आपके आस-पास के पेड़ किसने लगाए हैं ?
- किस व्यक्ति ने सबसे ज्यादा पेड़ लगाए हैं ?
- यदि वह व्यक्ति जीवित है तो उनसे मिलकर पूछिए कि उन्हें पेड़ लगाने की प्रेरणा किससे मिली ?

5. अब करने की बारी -

(क) गौरैया और कौवा के चित्र बनाइए ।
(ख) तालिका के अनुसार पेड़-पौधों के नाम लिखिए -

छायादार	फलदार	कीमती	लकड़ी	औषधीय	सजावटी

(ग) पेड़ों के महत्व से संबंधित एक पोस्टर बनाकर और उसे ऐसी जगह पर लगाइए जहाँ बहुत से लोग आते-जाते पढ़ सकें।
(घ) हरा - भरा स्कूल: बच्चे छाँव में पढ़ सकें इसके लिए रमइया ने बहुत से पौधे लगा दिए। आप भी बना सकते हैं अपने स्कूल को हरा-भरा, जानें कैसे -

- अपने साथियों के साथ स्कूल में उन जगहों को तलाश कीजिए, जहाँ पेड़ लगाए जा सकते हैं।
- बरसात के मौसम में अपने साथियों के साथ मिलकर इन जगहों पर अपनी-अपनी पसंद के पौधे लगाइए।
- अब इन पौधों की नियमित देखभाल कीजिए। आप देखेंगे कुछ ही दिनों में आपका स्कूल कितना हरा-भरा हो गया है।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1. ....

2. ....

8. इस पाठ से -
(क) मैंने सीखा - ....
(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

यह भी जानिए -

आग कभी भी कहीं भी लग सकती है लेकिन हम इसके प्रति जागरूक नहीं रहते हैं। कहीं भी आग लगने पर तत्काल -

- किसी बड़े को सूचित करें।

- आग लगने पर सबसे पहले सभी इलेक्ट्रिक स्विच आॅफ (बंद) कर दें।
- यदि आग तैलीय पदार्थ में लग जाए तो उस पर पानी कभी न डालें।
- आग लगने पर सबसे पहले रसोई गैस सिलेंडर की नॉब को बंद कर दें और उसे खुले स्थान पर पहुँचा दें।
- इलेक्ट्रॉनिक चीज में आग लगने पर उस पर बालू डालकर आग बुझाएँ।
- अगर कोई आग से जल गया है तो उसका खुद से उपचार करने के बजाय जल्दी से जल्दी डॉक्टर को दिखाएँ।
- भीषण आग लगने पर अग्नि शमन दल को बुलाने के लिए 101 तथा एम्बुलेंस के लिए 108 नम्बर पर सूचित करें।

8.मैं और मेरा देश

हमारे देश के महान सन्त स्वामी रामतीर्थ एक बार जापान गए। वे रेल में यात्रा कर रहे थे। एक दिन ऐसा हुआ कि उन्हें खाने को फल न मिले। उन दिनों फल ही उनका भोजन था। गाड़ी एक स्टेशन पर ठहरी। वहाँ भी उन्होंने फलों की खोज की, किन्तु पा न सके। उनके मुंह से निकला - ”जापान में शायद अच्छे फल नहीं मिलते!“

एक जापानी युवक प्लेटफार्म पर खड़ा था। उसने ये शब्द सुन लिए। सुनते ही वह भागा और कहीं दूर से एक टोकरी ताजे फल ले आया। उसने वे फल स्वामी रामतीर्थ को भेंट किए और कहा, ”लीजिए, आपको फलों की जरूरत थी।“

स्वामी जी ने समझा यह कोई फल बेचने वाला है। उन्होंने

उससे फलों के दाम पूछे, पर उसने दाम लेने से इनकार कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उसने कहा, ”आप इनका मूल्य देना ही चाहते हैं तो अपने देश में जाकर किसी से यह न कहिएगा कि जापान में अच्छे फल नहीं मिलते।

"स्वामी जी युवक का यह उत्तर सुनकर मुग्द्ध हो गए। उस युवक ने अपने इस कार्य से अपने देश का गौरव न जाने कितना बढ़ा दिया।"

इस गौरव की ऊँचाई का अनुमान दूसरी घटना सुनकर ही पूरी तरह लगाया जा सकता है। किसी देश का एक युवक जापान में शिक्षा लेने आया। एक दिन वह सरकारी पुस्तकालय से कोई पुस्तक पढ़ने के लिए लाया। इस पुस्तक में कुछ दुर्लभ चित्र थे। इन चित्रों को उस युवक ने पुस्तक में से निकाल लिया और पुस्तक वापस कर दी। किसी जापानी विद्यार्थी ने उसे देख लिया और पुस्तकालय को उसकी सूचना दे दी। पुलिस ने तलाशी लेकर वे चित्र उस विद्यार्थी के कमरे से बरामद किए और उस विद्यार्थी को जापान से निकाल दिया गया।

अपराद्धी को दण्ड मिलना ही चाहिए, पर मामला यहीं तक नहीं रुका और उस पुस्तकालय के बाहर बोर्ड पर लिख दिया गया कि पुस्तकालय में इस विद्यार्थी का प्रवेश तो वर्जित है ही, उसके देश के निवासियों का भी प्रवेश वर्जित

है।

जहाँ एक युवक ने अपने काम से अपने देश का सिर ऊँचा किया था, वहीं दूसरे युवक ने अपने काम से अपने देश के मस्तक पर कलंक का ऐसा टीका लगाया, जो न जाने कितने वर्षों तक संसार की आँखों में उसे लांछित करता रहा।

जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं तो हमारे माथे पर ही कलंक का टीका नहीं लगता, बल्कि देश का भी सिर नीचा होता है और उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। जब हम कोई श्रेष्ठ कार्य करते हैं तो उससे हमारा ही सिर नहीं ऊँचा होता, बल्कि देश का भी सिर ऊँचा होता है और उसका गौरव बढ़ता है। इसलिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आये।

क्या आप चलती रेलों में, मुसाफिर खानों में, क्लबों में, चौपालों पर और मोटरबसों में कभी ऐसी चर्चा करते हैं कि हमारे देश में यह नहीं हो रहा है, वह नहीं हो रहा है और यह गड़बड़ है, यह परेशानी है ? साथ ही, क्या आप अपने देश की तुलना किसी अन्य देश के साथ करते हैं कि कौन-सा देश श्रेष्ठ है और कौन-सा देश हीन है ? यदि हाँ, तब आप को चिन्ता होगी कि देश की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

क्या आप कभी केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकते हैं ? अपने घर का कूड़ा बाहर फेंकते हैं ? अपशब्दों का प्रयोग करते हैं ? इद्दर की उद्दर, उद्दर की इद्दर लगाते हैं ? अपने घर, दफ्तर, गली को गन्दा रखते हैं ? होटलों, द्दर्मशालाओं में या दूसरे ऐसे ही स्थानों में, जीनों में, कोनों में पीक थूकते हैं ? उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में ठेलम-ठेल करते हैं, निमन्त्रित होने पर विलम्ब से पहुँचते हैं या वचन देकर भी घर आने वालों को समय पर नहीं मिलते और इसी तरह शिष्ट व्यवहार के विपरीत आचरण करते हैं।

यदि आपका उत्तर 'हाँ' है, तो आप के द्वारा देश के सम्मान को भयंकर आघात लग रहा है और राष्ट्रीय संस्कृति को गहरी चोट पहुँच रही है।

यदि आपका उत्तर 'नहीं है', तो आपके द्वारा देश का सम्मान बढ़ेगा और संस्कृति भी सुरक्षित रहेगी।

- कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'

कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 को सहारनपुर जिले के देवबंद गाँव में हुआ। ये हिंदी के जाने माने निबंधकार थे। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- जिंदगी मुसकाई, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे। 9 मई 1995 को इनका निधन हो गया।

अभ्यास

शब्दार्थ

आग्रह = अनुरोध
श्रेष्ठ = बहुत ही अच्छा
मुग्द्द = मोहित
आघात = चोट
दुर्लभ = कठिनाई से प्राप्त
सुरक्षित = अच्छी तरह रक्षा किया हुआ
लांछित = कलंकित
संस्कृति = शुद्ध आचरण की परम्परा
गौरव = बड़प्पन
अपशब्द = गाली

1.**बोध प्रश्न:**उत्तर लिखिए-

(क) स्वामी राम तीर्थ ने स्टेशन पर फलों की खोज क्यों करनी पड़ी?

(ख)जापानी युवक स्वामी जी के लिए फल क्यों ले आया ?

(ग)स्वामी जी द्वारा फलों का मूल्य दिये जाने पर युवक ने क्या कहा ?

(घ)युवक और उसके देशवासियों का पुस्तकालय मे प्रवेश क्यों वर्जित कर दिया गया?

2. वाक्यों को पढ़िए और सोचकर लिखिए - अच्छी आदत/

गलत आदत

(क) केला खाकर छिलका रास्ते में फेंकना।

....

(ख) अपने घर का कूड़ा बाहर सड़क पर फेंकना।

....

(ग) शौचालय का प्रयोग करना और साबुन से हाथ धोना।

....

(घ) पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ना। ....

(ङ) अपना घर, गली, स्कूल, बस, ट्रेन को गंदा करना।

....

(च) पौधे लगाना और उनकी देखभाल करना।

....

(छ) यातायात के नियमों का पालन करना।

....

(ज) उत्सवों, मेलों, रेलों और खेलों में धक्का-मुक्की करना।

....

(झ) अनावश्यक पानी न बहाना। ....

(ञ) हर दिन समय से स्कूल आना। ....

3. सोच-विचार: बताइए -

(क) आप अपने स्कूल/गाँव/मोहल्ले का नाम ऊँचा करने के लिए क्या-क्या करेंगे ?

(ख) अपने विद्यालय को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए आप

क्या-क्या करेंगे ?

4. भाषा के रंग

(क) वचन के अनुसार क्रिया का रूप बदलिए:

- पुलिस ने एक चित्र बरामद किया।   पुलिस ने कई चित्र बरामद किए।
- बालक ने एक खिलौना खरीदा

  ....
- बालिका ने एक पुस्तक खरीदी

  ....
- रमेश ने एक रोटी खाई।

  ....

(ख) रेखा द्वारा विलोम शब्द को जोड़िए -

ताजा   सुलभ
श्रेष्ठ   स्वीकार करना
बढ़ा देना   पुरस्कार
सुरुचि   अरक्षित
दुर्लभ   बासी
सुरक्षित   हीन
दण्ड   देना
अस्वीकार करना   कुरुचि

(ग) मुहावरों के अर्थ समझकर उनका वाक्यों में प्रयोग

कीजिए -

सिर ऊँचा करना = सम्मान बढ़ाना

कलंक का टीका लगाना = बदनामी कराना

प्रतिष्ठा पर आँच आना = सम्मान घटना

इधर की उधर लगाना = एक से दूसरे की शिकायत करना

(घ) अंग्रेजी भाषा के बहुत से शब्द हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। पाठ में आए ऐसे अंग्रेजी शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए, जैसे - रेल

5. तुम्हारी कलम से -

इस पाठ को पढ़ने के बाद बनी समझ को अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी -

(क) महापुरुषों के जीवन की प्रेरक घटनाओं के बारे में पढ़िए।

(ख) स्वयं की एवं आस-पास की सफाई के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं ? सूची बनाइए।

(ग) देश-प्रेम की घटनाओं से जुड़े अन्य प्रसंग अपने शिक्षक से सुनिए।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1. ....

2..

8. इस पाठ से -

(क)मैंने सीखा -

....

....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

....

”मैं हिंद का हूँ, हिंद मेरा है - प्यारा वतन। वतन के लिए प्यार ही मेरा ईमान है। मैं एक ईमानदार वतनपरस्त रहकर हिंद की मिट्टी में मिल जाना चाहता हूँ।“

- अमीर खुसरो (प्रसिद्ध सूफ़ी संत और कवि)

9.तीन सवाल

एक राजा था। वह बहुत समझदार और धुन का पक्का था। वह जो सोचता उसका हल ढूँढ़कर ही चैन लेता। किसी भी काम में अपनी पराजय उसे बहुत अखरती थी। वह सोचता, क्या उपाय किया जाए, जिससे वह कभी न हारे।

एक दिन उसके मन में तीन सवाल उठे। पहला सवाल था - किसी कार्य को करने का सही समय कौन-सा होता है ? दूसरा सवाल था - किसकी बात सुननी चाहिए और किसे टालना चाहिए? और सबसे बड़ा तीसरा सवाल था - सबसे आवश्यक कार्य कौन-सा है?

अपने इन तीन सवालों का उत्तर पाने के लिए राजा ने अपने राज्य में घोषणा करवाई - ”जो भी इन तीन सवालों का उत्तर देगा उसे यथेष्ट पुरस्कार दिया जाएगा।“ यह घोषणा होते ही दूर-दूर से लोग राजा के पास आने लगे।

पहले प्रश्न के उत्तर में कुछ लोगों ने कहा - किसी कार्य को शुरू करने से पहले सोच लेना चाहिए कि कार्य कितने दिन या महीने में पूरा होगा, फिर कार्य करने का समय और तरीका निश्चित करना चाहिए और उसी के अनुसार कार्य करना चाहिए। ठीक समय पर कार्य पूरा करने का यही एक सही तरीका है।

कुछ और लोगों का मानना था कि कार्य का समय निश्चित करना कठिन है, लेकिन बेकार के कार्यों में समय नष्ट न करें, जो भी आस-पास हो रहा हो उस काम में लग जाएँ। कुछ लोगों ने बताया - राजा अकेले प्रत्येक कार्य शुरू करने का समय कैसे निश्चित कर सकता है ? राजा के पास सलाहकार होने चाहिए। उनकी सहायता से राजा निश्चित कर सकता है कि कार्य कब और कैसे किया जाए।

लेकिन कुछ और लोग भी थे। उनका कहना था - हर कार्य का समय पहले से सोचना कठिन है। आलस्य में समय न बिताएँ। जो भी काम सामने हो उसे पूरा कर लें। किसी ने कहा कि कभी-कभी सलाह लेने का समय ही नहीं होता, जबकि जवाब

तुरंत चाहिए इसलिए उत्तर केवल जादूगर ही दे सकते हैं। बस, वे जादू से सब कुछ जान कर राजा को बता देंगे।

इसी तरह दूसरे सवाल के भी कई जवाब थे। कुछ लोगों का कहना था - राजा के लिए सलाहकार बहुत जरूरी होते हैं। कुछ पुजारी और कुछ वैद्य को जरूरी बता रहे थे। किसी ने राजा के लिए सबसे अधिक आवश्यक सैनिकों को माना।

तीसरे प्रश्न के भी कई उत्तर थे। कुछ लोगों ने ज्ञान-विज्ञान को सबसे जरूरी कार्य बताया तो कुछ ने रणनीति और किसी ने दान-धर्म को।

सारे उत्तर अलग- अलग थे। राजा को एक भी उत्तर सही नहीं लगा। राजा ने सुना था कि पास के जंगल में वर्षों से एक साधु तप कर रहे हैं। वे केवल साधारण जनों से मिलते हैं। उनके ज्ञान की चर्चा दूर-दूर तक थी। अपने सवालों का जवाब पाने के लिए राजा ने उनसे मिलने का निश्चय किया।

दूसरे दिन राजा ने राजसी वस्त्र उतारकर साधारण कपड़े पहने। कुछ अंगरक्षकों को साथ ले लिया। घोड़े पर सवार होकर राजा जंगल की ओर चल दिया। काफी देर बाद पेड़ों के झुरमुट में उसे साधु की झोपड़ी दिखाई दी। राजा घोड़े से उतर गया। उसने अंगरक्षकों को वहीं खड़े रहने का आदेश दिया और पैदल ही साधु के पास पहुँचा।

राजा ने देखा साधु बड़ी लगन से झोपड़ी के सामने की जमीन खोद रहे थे। उनका शरीर दुबला-पतला था। कुदाल से खोदते समय वे जोर-जोर से साँस ले रहे थे। राजा को पास आता देखकर साधु रुक गए। उन्होंने राजा का अभिवादन किया, फिर अपने काम में लग गए।

राजा बोला, ”मैं आपके पास अपने कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा में आया हूँ। मेरा पहला प्रश्न है, किसी काम की शुरुआत करने के लिए सही समय कौन सा है? दूसरा, मुझे किन लोगों की जरूरत सबसे ज्यादा है ? मुझे किन पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए ? और तीसरा, यह कैसे पता लगे कि सबसे आवश्यक कार्य क्या है ? मुझे सबसे पहले क्या करना चाहिए?“

सवाल सुनकर भी साधु ने कोई जवाब नहीं दिया। वे काम में जुटे रहे।

राजा कुछ देर चुपचाप खड़ा देखता रहा। साधु कुदाल चलाते, मिट्टी हटाते और हाँफ उठते। यह देख राजा का मन पसीज उठा। वह बोला, ”आप कुदाल मुझे

दीजिए। कुछ देर मैं खोद दूँ।“

साधु ने चुपचाप कुदाल उसे थमा दी। खुद जमीन पर एक तरफ बैठ गए। एक घंटा बीता, दूसरा घंटा बीता। राजा खोदता रहा। सूरज पेड़ों के पीछे छिपने लगा। तब कुदाल एक तरफ रखकर राजा साधु से बोला, ”मैं आपके पास तीन प्रश्न लेकर आया हूँ। आपने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया। यदि आप मेरे एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं जानते तो मुझे बताएँ। मैं लौट जाऊँगा।“

इतना सुनकर भी साधु चुप रहे। तभी किसी के दौड़कर आने की आवाज सुनाई दी। साधु ने कहा, ”आओ, देखते हैं, कौन आया है?“ राजा ने मुड़कर

देखा। एक आदमी दौड़ता हुआ वहीं आ रहा था। वह दर्द से कराह रहा था। उसके पेट से खून बहकर पैरों पर गिर रहा था। राजा के पास आकर वह कुछ बुदबुदाया और बेहोश हो गया। राजा और साधु ने मिलकर उसे भूमि पर लिटाया। उसके कपड़े ढीले किए। उसके पेट में बहुत बड़ा घाव हो गया था। राजा ने उसका घाव धोकर पट्टी बाँधी। पर वह पट्टी खून से भीग गई। राजा ने फिर से खून साफ किया और दूसरी पट्टी बाँधी। दो-तीन बार पट्टियाँ बदलीं। तब कहीं खून बहना बंद हुआ। उस आदमी की चेतना लौटी तो उसने पानी माँगा। राजा ने ताजा पानी लाकर उसे पिलाया।

संध्या हो गई थी। हवा भी ठंडी हो चली थी। बाहर लेटा हुआ आदमी ठंड से काँप उठा। राजा और साधु ने मिलकर उसे झोपड़ी के भीतर सुलाया। वह आँखें बंद किए चुपचाप बिस्तर पर लेटा रहा। यह सब करते-करते राजा बहुत थक गया था। देहरी पर बैठते ही वह गहरी नींद में सो गया। दूसरे दिन सुबह उसकी आँख खुली। पहले तो उसे समझ में नहीं आया कि वह कहाँ है ? सामने लेटा हुआ बीमार आदमी कौन है ? वह उसे एकटक देखता रहा।

धीमी आवाज में उस आदमी ने राजा से कहा, ”मुझे माफ कर दीजिए।“ राजा पहले तो अचकचाया, फिर बोला, ”मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम मुझसे माफी क्यों माँग रहे हो ?“

”आप मुझे नहीं जानते, मैं आपको जानता हूँ। मैं आपका शत्रु हूँ। आपने मेरे भाई को फाँसी की सजा सुनायी थी। उसकी संपत्ति जब्त कर ली थी। मैंने तभी आपसे प्रतिशोध लेने की कसम खाई थी। मुझे मालूम हुआ आप साधु के पास

अकेले आए हैं। मैंने सोचा था, जब आप वापस लौटेंगे तब मैं आपकी हत्या कर दूँगा लेकिन पूरा दिन बीतने पर भी आप नहीं लौटे। जब मैं आपको खोजता हुआ इस तरफ आ रहा था आपके अंगरक्षकों ने मुझे पहचान लिया। उन्होंने मुझे मारने की कोशिश की पर मैं बच गया। अगर आपने मेरी मरहम-पट्टी न की होती तो मैं मर ही गया होता। आपने मेरी जान बचाई है। अगर मैं जीवित बचा और आपने चाहा तो जीवनभर आपकी सेवा करूँगा। मुझे क्षमा करें।"

सारी बात सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि शत्रु इतनी आसानी से मित्र बन सकता है। राजा ने उसे क्षमा कर दिया। उसे विश्वास दिलाया कि लौटकर वह उसकी देखभाल का पूरा इंतजाम करेगा।

राजा झोपड़ी से बाहर आया। साधु के पास जाकर बोला, "मैं अंतिम बार आपसे अपने सवालों का हल माँग रहा हूँ।"

साधु घुटनों के बल बैठे उन क्यारियों में बीज बो रहे थे जिन्हें कल तैयार किया गया था। साधु ने सिर उठाकर राजा से कहा, "राजन, तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब मिल चुके हैं।"

राजा हैरान हुआ। उसने कहा, "मैं समझा नहीं।"

साधु बोला, "क्या तुम्हें मालूम नहीं? तुम समझ नहीं सके? अगर कल तुम्हारे मन में मेरे लिए दया न आई होती तो तुम चले गए होते। तुमने ये क्यारियाँ तैयार न की होतीं तो राह में यह आदमी तुम पर हमला करता। मेरे पास न रुकने के लिए तुम पछताते।"

"जब तुम क्यारियाँ तैयार कर रहे थे, वही सबसे सही समय था। तब सबसे महत्व का आदमी मैं था। उस समय मेरा काम सबसे जरूरी काम था।"

"जब वह आदमी दौड़कर हमारे पास आया और हमने उसकी मरहम-पट्टी की, वही सबसे सही समय था। अगर तुम उसकी मरहम-पट्टी न करते तो उसकी मृत्यु हो जाती। इसलिए उस समय वही सबसे महत्व का आदमी था। तुमने उसके लिए जो भी किया, उस समय वही तुम्हारा सबसे जरूरी कार्य था।"

"याद रखना, सबसे सही समय वही होता है जब हमारे पास किसी भी तरह की शक्ति होती है। सबसे महत्व का आदमी वह होता है जिसके साथ हम होते हैं। कोई नहीं जानता कब क्या होगा। सबसे जरूरी काम है, अपने सामने संकट में पड़े

आदमी की सहायता करना। हमें जीवन इसलिए मिला है कि दूसरों के काम आएँ। इसी में जीवन की सफलता है।" इतना कहकर साधु चुप हो गए।

साधु का उत्तर पाकर राजा को संतोष हुआ। राजा ने आदर से उनको प्रणाम किया और उनसे विदा लेकर अपने महल की ओर चल पड़ा।

- लिओ टॉलस्टाय

लिओ टॉलस्टाय प्रख्यात रूसी लेखक थे। इन्होंने अनेक विश्वप्रसिद्ध कथा एवं उपन्यास लिखे जिनमें मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण हुआ है।

अभ्यास

शब्दार्थ

यथेष्ट = भरपूर, जितना चाहिए उतना
सलाहकार = सलाह या राय देने वाला
अंगरक्षक = सुरक्षा के लिए नियुक्त सिपाही
प्रतिशोध = बदला लेने की भावना से किया जाने वाला काम
मन पसीज उठा = मन में दया का भाव उत्पन्न हुआ
रणनीति = युद्धनीति

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) राजा के मन में उठने वाले तीन सवाल क्या थे ?
(ख) राजा ने साधु से मिलने के लिए क्या किया ?
(ग) राजा का शत्रु उनका मित्र कैसे बन गया ?
(घ) घायल व्यक्ति ने होश आने पर अपने बारे में राजा से क्या बताया ?
(ङ) राजा को अपने प्रश्नों के क्रमशः क्या-क्या उत्तर मिले ?

2. सोच - विचार: बताइए -
(क) राजा की जगह तुम होते तो -

- साधु की कुटिया पर पहुँचकर क्या करते ?
- घायल व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करते ?

(ख) आपके लिए सबसे जरूरी काम क्या है ? इसे आप कैसे पूरा करेंगे ?

3. अनुमान और कल्पना -
यदि साधु ने तुरंत सीधे-सीधे प्रश्नों का उत्तर दे दिया होता तो क्या होता ?

4. भाषा के रंग
(क) नीचे लिखे उपसर्गों को जोड़कर शब्द बनाइए -

जैसे - प्रति + शोध = प्रतिशोध अनु + चर = अनुचर
प्रति + कूल = ...
+ वाद = ...
+दिन = ...
+घात = ...
अनु + करण = ...
+ कूल = ...
+वाद = ...
+रूप = ...

(ख) नीचे लिखे अनुच्छेद में उचित स्थान पर विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

सारे उत्तर अलग अलग थे राजा को एक भी उत्तर सही नहीं लगा वह साधु के पास गया उसने देखा साधु बड़ी लगन से जमीन खोद रहे हैं पास जाकर राजा ने कहा मैं

आपके पास अपने प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा में आया हूँ मेरा पहला प्रश्न है किसी कार्य को शुरू करने का सही समय कौन सा है

(ग) स्तम्भ ‘क’ में ‘उपसर्ग’ तथा स्तम्भ ‘ख’ में ‘शब्द’ दिए गए हैं। जोड़कर सार्थक शब्द बनाइए-

उपसर्ग
अप, अव, आ,निर्, प्र, सु

शब्द
जीवन, मान, गुण, यश,हरण, तार, बल, गमन, मल,दोष, आदर, हार, लेख,ख्यात, गम, पुत्र

वे शब्दांश जो मूल शब्द के पहले जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे: अति+अधिक = अत्यधिक

(घ) दिए गए शब्दों के समानार्थक शब्दों को अक्षर-जाल से खोजिए। इन्हें ऊपर से नीचे तथा बाएँ से दाएँ ढूँढ़ सकते हैं -

पा	घो	र	पं	क	ज
व	ड़ा	सा	ज	न	क
क	म	ल	ल	क	ता
ग	न	र	ध	ज	रा
ग	नी	र	र	ल	प
न	भ	अ	म्ब	र	ति

चंद्रमा =..
अग्नि =..
अश्व =..
आकाश =..
आम =..
मनुष्य =..
पानी =..
कमल =..
सोना =..
पिता =..
बादल =..

(ङ) विभा का काम देखकर माँ का चेहरा **खुशी से खिल उठा**।
'खुशी से खिल उठा' मुहावरा है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर बन जाती है और पढ़ने वाले को आनंद आता है। रिक्त स्थानों पर उचित मुहावरों का प्रयोग कीजिए-

(घोड़े बेचकर सोना, हाथ-पैर फूलना, दाँतों तले उँगली दबाना, सिर पर पैर रखकर भागना, पेट में चूहे कूदना)।

- सिपाही को देखकर चोर ....
- अचानक सामने शेर को देखकर उसके ....
- पकवानों की महक नाक में आते ही ....
- नट को पतली रस्सी पर चलते देखकर लोगों ने ....
- परीक्षा समाप्ति के दिन वह ....

(च) नीचे दिए गए वाक्यों में से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण शब्दों को छाँटकर निर्धारित खानों में लिखिए -

- रसोइये ने अपनी मैली धोती नहीं बदली।
- क्या आप मेरी बड़ी बहन से मिली हैं ?
- जो परिश्रम करेगा वही मीठे फल खाएगा।
- वह धीरे-धीरे नदी के किनारे पहुँचा।
- छोटा बच्चा जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

संज्ञा सर्वनाम विशेषण क्रिया क्रिया विशेषण शब्द

5. तुम्हारी कलम से

- साधु की जीवन शैली पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए ।

6. अब करने की बारी

- पेड़-पौधों के बीच एक झोपड़ी का चित्र बनाइए ।

7. मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

....
....

2.

....
....

8. इस कहानी से -

(क) मैंने सीखा -

....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

10. चेतक की वीरता

3H5NJE

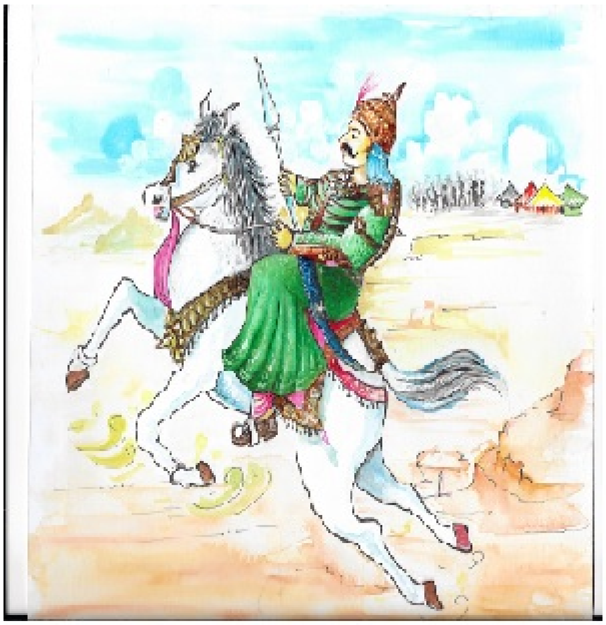

रण-बीच चैकड़ी भर-भरकर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था।

जो तनिक हवा से बाग हिली,

लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ठहर गया।
विकराल वज्रमय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।

भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।

- श्यामनारायण पांडेय

वीर रस के सुविख्यात कवि श्यामनारायण पांडेय का जन्म (सन् 1907-1991) जनपद-मऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। श्यामनारायण पांडेय जी ने चार उत्कृष्ट महाकाव्य रचे , जिनमें 'हल्दी घाटी' और 'जौहर' विशेष चर्चित हुए।

अभ्यास

शब्दार्थ

रण = युद्ध
अरि-मस्तक = शत्रु का सिर
चैकड़ी = चैपायों की दौड़
निराला = अनोखा
तनिक = थोड़ा-सा या थोड़ी-सी
कौशल = निपुणता
निर्भीक = निडर
करवाल = तलवार
नद = बड़ी नदी
विकराल = भयंकर
वज्रमय = बहुत कठोर
निषंग = तरकश
हय = घोड़ा
बैरी = दुश्मन
घहर = सहसा आ पहुँचना

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) चेतक किसके इशारे पर मुड़ जाता था ?
(ख) चेतक की टापों का दुश्मन पर क्या असर होता था ?
(ग) चेतक शत्रु की सेना पर किस प्रकार टूट पड़ता था ?
(घ) चेतक किस तरह की चाल से निराला दिखाई पड़ता था ?
(ङ) चेतक को कोड़े नहीं लगाने पड़ते थे, क्यों ?
(च) क्या देखकर बैरी समाज दंग रह गया ?
(छ) हम राणा प्रताप को क्यों याद करते हैं ?

2. इन पंक्तियों के अर्थ लिखिए -
(क) राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था।
(ख) विकराल वज्रमय बादल-सा, अरि की सेना पर घहर गया।

3. कविता के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -
(क) महाराणा प्रताप के घोड़े का नाम .... था।
(ख) घोड़े की बहादुरी से .... दंग रह गया।
(ग) चेतक .... का इशारा पाते ही मुड़ जाता था।
(घ) युद्ध क्षेत्र में .... भर-भर कर चेतक निराला बन गया था।

4. सोच-विचार: बताइए -
चेतक को निराला क्यों कहा गया ?

5. भाषा के रंग -
(क) नीचे दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द कविता से खोजकर लिखिए -
निराला कोड़ा चाल लहर ढंग
(ख) नीचे लिखे शब्दों को सही क्रम में रखकर वाक्य बनाइए -

- सरपट / दौड़ता / घोड़ा / है
- पाला / से / का / हवा / चेतक / था / पड़ा
- बहादुर / था / बहुत / घोड़ा / चेतक

- जाता था / उड़ / महाराणा प्रताप को / चेतक / लेकर

(ग) स्त्रीलिंग शब्द लिखिए -
घोड़ा = ... ठहरा = ...
दौड़ा = ... गिरा = ...

(घ) कविता में आए युद्ध से संबंधित शब्दों को लिखिए।

6. तुम्हारी कलम से -
कविता में चेतक की वीरता के बारे में बहुत-सी बातें बताई गई हैं। इनमें से कोई-सी चार बातें लिखिए जो आपको बहुत पसंद आई हों।

7. अब करने की बारी -
(क) चेतक पर सवार राणा प्रताप का चित्र बनाइए।
(ख) कविता का हाव-भाव के साथ सस्वर वाचन का अभ्यास कर कक्षा में सुनाइए।
(ग) राणा प्रताप से संबंधित और जानकारी पुस्तकालय से पता कीजिए।

8. मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1.
....
....
2.
....
....

9. इस कविता से -
(क) मैंने सीखा -
....
.....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

कितना सीखा-2

1. नीचे लिखे शब्दों के विलोम लिखिए-
नई, खुली, मुश्किल, पसंद, सम्मान, शत्रु, प्रिय, दिन, भारी

2. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो तुकांत शब्द लिखिए-
अंग - .... घोड़ा - ....
तरंग - .... भार - ....

3. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए -
(क) वह घोड़े का सवारी करता थे।
(ख) टोकरी में ताजी फल थे।
(ग) वहाँ कुछ और लोग भी था।
(घ) पेड़ का कीमत पैसा से बढ़कर है।

4. नीचे लिखे पंक्तियों के भाव लिखिए-
(क) पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी ऊँचे बन जाओ।
(ख) राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।

5. इन शब्दों में 'ता' और 'वाला' प्रत्यय जोड़कर कर लिखिए -
सुंदर, कोमल, मिठाई, एक, फल,
सफल, फेरी, कवि, कायर, दूध
6. उत्तर दीजिए -

(क) पर्वत के संदेश 'तुम भी ऊँचे बन जाओ' से आप क्या समझते हो ?
(ख) रमइया को पौधे लगाने का जुनून कैसे प्रारंभ हुआ ?

(ग) हमें अपने देश व समाज की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए क्या-क्या नहीं करना चाहिए।
(घ) राजा का तीसरा सवाल क्या था ? साधु ने उसका क्या उत्तर दिया ?
(ङ) चेतक की क्या-क्या विशेषताएँ थीं ?

7. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
सिर ऊँचा करना, इधर की उधर लगाना, आँख का तारा होना।

8. स्वच्छता संबंधी आदतें कौन-कौन सी हैं ? सूची बनाइए।
9. अपने घर या आस-पास के किसी पालतू पशु की विशेषताओं को लिखिए।
10. 'जोर-जोर', 'जब-जब' जैसे पाँच शब्दों के जोड़े बनाइए।
11. नीचे दिए गए शब्दों को छाँटकर उपयुक्त खानों में लिखिए -
गाँव, रँगना, बकरी, पीला, सुंदरता, कम, केशव , तुम देवता, सुंदर, जहर, रंग, पढ़ता, मैं, टोकरी, चलना, उसने, मीठा, बिल्ली, दिल्ली, हमने, खेलना, पुस्तक, खेल।

संज्ञा शब्द
सर्वनाम शब्द
विशेषण शब्द
क्रिया शब्द

अपने आप - 2
कोई ला के मुझे दे

कुछ रंग भरे फूल

कुछ खट्टे-मीठे फल

थोड़ी बाँसुरी की धुन

थोड़ा जमुना का जल -
कोई ला के मुझे दे !
एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात -
कोई ला के मुझे दे !
एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी -
कोई ला के मुझे दे !
एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा सा जवाब -
कोई ला के मुझे दे !

दामोदर अग्रवाल

दामोदर अग्रवाल ने बच्चों के लिए अनेक सुंदर रचनाओं का सृजन किया है। आप हिंदी के प्रतिष्ठित कवि हैं।

11. मैं और हॉकी

(हॉकी हमारे देश का राष्ट्रीय खेल है। इस खेल की ओलंपिक प्रतियोगिताओं में भारत प्रायः विजयी होता आया है। अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हॉकी खिलाड़ी कुँवर दिग्विजय सिंह 'बाबू' ने हेलसिंकी (फिनलैंड) में हुए हॉकी मैच का संस्मरणात्मक परिचय दिया है।)

बहुत से लोगों का ऐसा विचार है कि खेल-कूद में समय नष्ट होता है और स्वास्थ्य के लिए व्यायाम कर लिया जाए, यही काफी है। पर यह ठीक नहीं। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है, साथ-साथ मनुष्य कुछ ऐसे गुण भी सीखता है, जिनका जीवन में विशेष महत्व होता है और जो व्यायाम से नहीं प्राप्त हो सकते, जैसे - घमंड न करना, हारने में साहस न छोड़ना, दूसरे से चोट लग जाए तो उसे सहन कर लेना, विशेष ध्येय के लिए नियमपूर्वक कार्य करना आदि। लोग सफलता न पाने पर साहस छोड़ बैठते हैं और दोबारा प्रयास नहीं करते। परंतु खिलाड़ी ऐसा नहीं करता। हार के बाद भी वह प्रयास करता रहता है कि हारी बाजी जीत लेता है।

दृढ़ संकल्प द्वारा अपने देश की सेवा का मेरा स्वप्न उस दिन पूरा हुआ जिस दिन मैं हेलसिंकी (फिनलैंड) के मैदान में अपनी हॉकी-टीम को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक में जिता सका। उस दिन के 'जन गण मन' का मधुर वादन आज कई वर्ष के पश्चात् भी मेरे कानों में गूँज रहा है।

यूँ तो खेल मेरे सारे कुटुम्ब को प्रिय है, परंतु यह कहना भी आवश्यक है कि मेरे पिता स्वर्गीय राय बहादुर रघुनाथ सिंह खेल में विशेष रुचि रखते थे। मेरे पास बहुत-सी तस्वीरों के साथ एक तस्वीर ढाई साल की उम्र की है जिसमें मैं हॉकी और बॉल लिए बैठा हूँ।

मेरे खेल का प्रारंभ बाराबंकी में हुआ। मेरे बड़ों का कहना है कि कमाई का काफी पैसा मेरे घर के मोटरखाने का फाटक बनवाने में खर्च हुआ, क्योंकि वह हर महीने मेरी हॉकी की गेंद से टूटता था। कुछ ऐसी ही कहानी लखनऊ के कान्यकुब्ज कॉलेज में छात्रावास की दीवारें भी कहती हैं। मुझे यह आज तक ठीक से याद है कि जब मैं बाराबंकी से लखनऊ पढ़ने आया तो मेरे सामान में सबसे अधिक हॉकी स्टिक की महत्ता थी। अपने कॉलेज की टीम में खेलने का मुझे उसी साल सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् 1936 में मैं देहली के एक टूर्नामेंट में खेलने गया, जिसमें देश के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी मो. हुसैन फुल बैक खेल रहे थे। उस दिन खेल पर मुझे एक सुंदर उपहार मिला। मेरा साहस और प्रयास बढ़ता गया। मेरी सदैव इच्छा होती रही कि किस प्रकार खेलूँ कि जिससे इस खेल के सबसे उच्च स्तर पर पहुँच जाऊँ। सन् 1936-40 में मुझको अपने प्रदेश की ओर से खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् 1946-47 में मुझको पहली बार भारत की टीम की ओर से खेलने का अवसर मिला। उस समय पाकिस्तान और भारतवर्ष का विभाजन नहीं हुआ था।। सन् 1947 में सुप्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचंद के नेतृत्व में मैं ईस्ट अफ्रीका गया और वहाँ स्थान-स्थान पर कई मैच खेले और उनसे खेल के विषय में बहुत कुछ सीखा। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् 1948 में मुझे लंदन में वर्ल्ड-ओलंपिक में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस खेल में पहली बार भारतवर्ष और इंग्लैंड दोनों ने अंतरराष्ट्रीय हॉकी में भाग लिया। अब जब मैं यह लिख रहा हूँ तो मुझे ठीक से याद है कि लाखों की भीड़ में भारतवर्ष के थोड़े से आदमियों ने किस तरह से चीख-चीखकर अपने देश का साहस बढ़ाया था। खेल के शुरू होने के थोड़ी देर बाद जब भारतवर्ष के खिलाड़ी अच्छा खेलने लगे और उन्होंने इंग्लैंड के ऊपर दो गोल कर दिए तो अंग्रेज जनता भी भारतीय टीम की हर चाल की सराहना करने लगी। खेल समाप्त होने पर हम लोगों को वहाँ से निकलने में दो घंटे से ऊपर समय लगा। इतनी देर में वे लोग भारतीय टीम की प्रशंसा करते रहे और किसी ने हस्ताक्षर माँगे, किसी ने खाने पर तो किसी ने चाय पर आमंत्रित किया।

सन् 1952 में मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। मेरे प्रयास तथा लगन को पुरस्कार मिला और मुझे भारतवर्ष की टीम का नेतृत्व करने का सुयोग मिला। इस बार ओलंपिक के खेल फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुए। मैं एक अजीब परिस्थिति में था। जहाँ एक ओर मेरी मनोकामना पूरी हुई, वहाँ दूसरी ओर इतनी बड़ी जिम्मेदारी से मेरा जी घबराने लगा। परंतु अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर मैं लक्ष्य की ओर बढ़ा। कुछ दैनिक पत्रों ने यह घोषणा की कि शायद इस बार भारत विजेता न हो। पर इन बातों से हम लोगों का साहस न छूटा। लगन अवश्य बढ़ गई।

हेलसिंकी में बड़ी ठंडक पड़ती है इसीलिए 20 दिन पहले हम लोगों की टीम डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन पहुँच गई। इसके पश्चात् हम लोग हेलसिंकी पहुँचे। इस देश में एक अजीब बात है। गरमी में वहाँ 20 घंटे दिन रहता है और 4 घंटे थोड़ा-सा अँधेरा और रात। इसके ठीक विपरीत यहाँ जाड़े में लंबी रातें और छोटे दिन होते हैं। हम लोगों को परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने में कुछ समय लगा।

सेमी फाइनल में भारत का सामना ब्रिटेन से हुआ। ब्रिटेन के एक गोल के विरुद्ध भारत ने तीन गोल किए और वह विजयी घोषित हुआ। मुझे आज तक याद है कि सेमी फाइनल के बाद जो दो दिन का अवकाश मुझे मिला, वह किस तरह कटा। परंतु साहस और धैर्य ने साथ नहीं छोड़ा।

फाइनल मैच में हमारी टीम का मुकाबला नीदरलैंड की टीम से हुआ। यद्यपि पहले से ही किसी के मन में संदेह नहीं रह गया था कि विजय-श्री भारत को मिलेगी तथापि नीदरलैंड की टीम ने प्रशंसनीय कौशल का प्रदर्शन किया। खेल आरंभ होने के पंद्रह मिनट तक दोनों टीमें बराबर रहीं। इसके बाद हमारी टीम ने गोल करना शुरू किया और पंद्रह मिनट के अंतराल पर उस पर चार गोल किए। हाफ टाइम के बाद नीदरलैंड की टीम ने और भी चैकस खेल दिखाया और उसने एक गोल भी किया। लेकिन इसके विरुद्ध हमारी टीम ने और दो गोल किए। इस तरह हमने नीदरलैंड के एक गोल के विरुद्ध उसे छह गोल से हराया।

प्रेक्षकों का कहना था कि हमारी विजय का सबसे बड़ा कारण गेंद पर हमारा नियंत्रण था। हमारे खिलाड़ी गेंद को वश में करके उसे केवल 'ड्रिबुल' करते या 'पास' देने में ही दक्ष नहीं थे बल्कि दूसरों से प्राप्त गेंद को भी वे बड़ी शीघ्रता और कुशलता से अपने नियंत्रण में कर लेते थे। उनमें यह भी कौशल था कि बहुत संकुचित स्थान में गेंद के साथ पैंतरेबाजी दिखा सकते थे। तीसरे, हमारी टीम का हर खिलाड़ी अपने स्थान के महत्व को समझता था और उसे प्रतिरक्षा और आक्रमण के मौके की पूरी पहचान थी।

'जन गण मन' हमेशा प्रिय होता है, पर उस दिन की बात और ही थी। आखिरकार वह दिन आया जब मैं 'विक्ट्री स्टैंड' पर खड़ा हुआ। मैंने अपने भाग्य को सराहा कि हॉकी में विश्वविजयी होने के भारत के गौरव की मैं रक्षा कर सका। उस दिन मुझे यह विश्वास हो गया कि यदि मनुष्य अपना धैर्य और साहस न छोड़े और निरंतर प्रयास करता रहे तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वदेश लौटने पर मुझे 'पद्मश्री' की उपाधि मिली, जिसे मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ।

'बाबू' के नाम से प्रसिद्ध कुँवर दिग्विजय सिंह (2 फरवरी, 1922-27 मार्च, 1978) का जन्म बाराबंकी जनपद में हुआ। ये हॉकी के ख्याति प्राप्त खिलाड़ी रहे। दिग्विजय सिंह के नाम पर हजरतगंज, लखनऊ में स्थित सेन्ट्रल स्टेडियम का नाम 'के0डी0 सिंह बाबू स्टेडियम' किया गया।

अभ्यास

शब्दार्थ

ध्येय = लक्ष्य, उद्देश्य

दृढ़ संकल्प = पक्का निश्चय

नियंत्रण = वश में रखना
व्यवधान = बाधा
अंतरराष्ट्रीय = संपूर्ण विश्व का
संकुचित = तंग/सँकरा

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क) पाठ में खेलकूद के क्या-क्या लाभ बताए गए हैं ?
(ख) लेखक का स्वप्न कब पूरा हुआ ?
(ग) "जन गण मन हमेशा प्रिय होता है लेकिन उस दिन की बात और ही थी"। लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है ?
(घ) लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या होना आवश्यक है ?

2. तुम्हारी कलम से -

- आपको कौन-सा खेल पसंद है ?
- यह खेल ही क्यों पसंद है ?
- इस खेल को कैसे खेला जाता है ?
- इस खेल को कितने लोग एक साथ खेलते हैं

3. सोहनी ने अखबार को जैसे ही खोला उसमें से एक कागज नीचे गिरा। सोहनी ने उसे उठाया और पढ़ने लगी। आप भी पढ़िए इस कागज पर क्या लिखा था -

तृतीय स्वर्गीय चंद्रिका देवी स्मृति क्रिकेट टूर्नामेंट

दिनांक - 12 नवम्बर, 2017

समय - प्रातः 8 बजे से

स्थान - स्पोर्ट्स स्टेडियम, ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)

आपको यह जानकर अपार हर्ष होगा कि पिछले वर्षों की भाँति इस बार भी स्वर्गीय चंद्रिका देवी की स्मृति में क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन ऊपर दिए गए कार्यक्रम के अनुसार किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि भारी संख्या में उपस्थित होकर आयोजन की शोभा बढ़ाएं तथा खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करें।

स्वागतोत्सुक

स्वर्गीय चंद्रिका देवी स्मृति क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजन समिति, ठाकुरद्वारा

अब जरा इन सवालों के उत्तर दीजिए -

- कागज में किस बारे में लिखा है ?
- कागज पर लिखी सूचना को पढ़कर सोहनी को क्या करना चाहिए ?
- आपने भी मैदान में अथवा टेलीविजन पर कोई न कोई मैच देखा होगा। उस मैच के बारे में अपने अनुभव संक्षेप में बताइए।

4. अब करने की बारी:

(क) पता कीजिए और लिखिए -

- हमारे देश का राष्ट्रीय खेल कौन सा है ?
- राष्ट्रीय खेल दिवस कब मनाया जाता है ?
- राष्ट्रीय खेल दिवस किसकी याद में मनाया जाता है ?

(ख) कुछ वर्ष पहले हॉकी पर आधारित एक हिंदी फिल्म आई थी ‘चक दे इंडिया’। क्या आपने वह फिल्म देखी है ? नहीं, तो अपने माता-पिता अथवा शिक्षक से अनुरोध कीजिए कि वह कंप्यूटर, प्रोजेक्टर या अन्य किसी माध्यम से आपको फिल्म दिखाएँ। देखने के बाद लिखें -

- फिल्म में किन-किन खेलों की झलक देखने को मिली ?
- फिल्म की कौन-सी दो घटनाएँ आपको सबसे अच्छी लगीं ?
- फिल्म की कौन-सी बातें आप अपने जीवन में उतारना चाहेंगे?

5. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

....

....

2.

....

....

6. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -

....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

12. चिड़िया का दाना

प्राचीन काल में कहानियों द्वारा ही लोग अपने बच्चों को विभिन्न देशों और लोक संस्कृतियों का ज्ञान देते थे। इन कहानियों में उस समय की स्थितियों और अनुभवों का वर्णन मिलता है। एक लोक-कथा इस प्रकार है:-

एक दिन प्रातः एक चिड़िया दाना चुगने निकली। खेत में उसे मटर का एक दाना पड़ा मिला। वह उसे उठा लाई और बहुत खुश हुई। उसने सोचा कि डटकर भोजन करेगी, मगर फिर उसके मन में आया कि भोजन करने के पहले नहा लूँ। वह नहाने के लिए नदी की ओर उड़ चली; मगर समस्या यह थी कि मटर के दाने को कहाँ छुपाए ? इसे जमीन पर ही छोड़ दे तो चीटियाँ खा जाएँगी या कोई और पक्षी ले उड़ेगा। उसने मटर के दाने को पुल की मेड़ पर रख दिया और उसकी मरम्मत कर रहे एक बढ़ई से कहा, ”भइया, जरा इसे देखते रहना।“

चिड़िया ने नदी से लौटकर बढ़ई से पूछा तो वह बोला, ”मैं तुम्हारा नौकर थोड़े ही हूँ। मुझे तो सरकार से वेतन मिलता है। तुम्हारा मटर का दाना गिर गया होगा।“

चिड़िया बहुत निराश हुई। उसे लगा कि दूसरे पक्षी भी अपने घोंसलों से निकल चुके हैं और उन्होंने उस दाने को खा लिया होगा। वह सोच ही रही थी कि एक सिपाही उधर से निकला। वह उसके पास गई और बोली, 'सिपाही जी, एक गरीब चिड़िया की मदद कीजिए। मेरा मटर का दाना कहीं गुम हो गया है। एक बढ़ई पुल की मरम्मत कर रहा था। मैंने उससे कहा कि दाने का ध्यान रखे लेकिन उसने या तो दाना चुरा लिया है अथवा वह कहीं गिर गया है।"

सिपाही बोला, "ऐ घमंडी चिड़िया, तेरी यह मजाल कि मुझे जाते हुए रोके ! .... मेरा काम कानून और शांति बनाए रखना है। उसी की मुझे तनख्वाह मिलती है। तुम मरो या जियो, मुझे इससे क्या !"

चिड़िया को डाँट पड़ी तो वह डर गई।

तभी उधर से एक थानेदार निकला। उसने उसे रोका और सारी कहानी बताकर कहा,"थानेदार जी, क्या आप मुझ गरीब की सहायता नहीं करेंगे ?"

थानेदार दहाड़ा, ”तुम्हारी यह हिम्मत कि मुझे रोक रही हो ? जानती नहीं, मंत्री जी दौरे पर आ रहे हैं, और मुझे सारा बंदोबस्त करना है, उन्होंने मेरे काम को पसंद न किया तो मेरी तरक्की कैसे होगी ? तुम्हारा मटर का दाना खो गया है तो मुझे क्या?“ यह कहकर थानेदार भी चल दिया।

चिड़िया सोचने लगी कि यह कैसा देश है, जहाँ लोग इतने स्वार्थी हैं कि किसी और की समस्या की जरा भी चिंता नहीं करते ? वह यह सोच ही रही थी कि उसे घोड़े पर सवार मंत्री आता दिखाई दिया। उसने उसे रोका और बोली, ”मंत्री जी, क्या आप मुझ गरीब पर दया नहीं करेंगे ? मेरा मटर का दाना गुम हो गया है और इधर से जितने भी सरकारी कर्मचारी निकले, वे मेरी सहायता करने से इनकार कर रहे हैं।”

मंत्री बोला, ”मैं तुम्हारी सहायता तो करना चाहता हूँ लेकिन मेरे पास समय नहीं है। राजा इधर आएंगे तो उनका स्वागत मुझे ही करना है।“ यह कहकर मंत्री भी वहाँ से खिसक लिया।

चिड़िया को इस बात से खुशी हुई कि किसी ने उससे भलमनसाहत से बात तो की। वह सोच ही रही थी कि इतने में स्वयं राजा हाथी पर सवार होकर उधर से निकला। चिड़िया ने उसे रोका और बोली, ”राजा जी, आप तो इस देश के मालिक हैं। क्या आप मेरी सहायता करेंगे?“

राजा को यह बात अच्छी नहीं लगी कि कोई छोटी-सी चिड़िया ऐसी धृष्टता करे। वह तो अपनी प्रजा को दर्शन देने जा रहा था और चिड़िया उसे रोक रही थी। उसने चिड़िया की किसी बात का उत्तर नहीं दिया। राजा का अंगरक्षक चिल्लाया, ”हट जाओ!“ ... और राजा का हाथी चल दिया।

अब चिड़िया को विश्वास हो गया कि कुछ नहीं हो सकता। वह सोचने लगी कि राजा से बड़ा कौन है। ऐसे

क्रूर राजा के रहते मैं अपना मटर का दाना छोड़कर नहाने क्यों गई? ...... सोचती हुई वह निराश बैठी थी कि उसने देखा एक चींटी जा रही है। उसने जाकर चींटी को सारी कहानी बताई।

चींटी बोली, ”बहन, मैं अभी जाती हूँ।“ चींटी हाथी के पास गई और उसके कान में बोली, ”तुमने सुना ही होगा कि चिड़िया ने राजा से क्या कहा। मैं चाहती हूँ कि तुम राजा को चिड़िया की सहायता करने पर मजबूर करो, नहीं तो मैं तुम्हारी सूँड़ में काट लूँगी।“

हाथी ने यह धमकी सुनी तो राजा से बोला, "आप चिड़िया की बात सुन लीजिए, नहीं तो वह मुझे काट लेगी। उसने मुझे काट लिया तो मैं आपको गिरा दूँगा, तब हो सकता है आपकी हड्डी-पसली टूट जाए या आप गिरकर मर जाएं।"

राजा अचंभे में पड़ गया, मगर उसके सामने और कोई चारा नहीं था। उसने तुरंत मंत्री को बुलाया और कहा कि वह चिड़िया की बात सुन ले। मंत्री थानेदार के पास गया और बोला, "शांति बनाए रखना तुम्हारा काम है, क्या तुम नहीं जानते हो कि बढ़ई और तुम्हारे सिपाही ने चिड़िया के साथ क्या किया और तुमने भी उसकी कोई मदद नहीं की। जल्दी से कुछ करो नहीं तो नौकरी से निकाल दिए जाओगे।"

थानेदार सिपाही के पास गया और उसे डाँटा। सिपाही ने बढ़ई की गर्दन नापी। बढ़ई गया और जाकर मटर का दाना ढूँढ़ लाया। अब चिड़िया ने खूब

छककर भोजन किया।

अभ्यास

शब्दार्थ

तनख्वाह = वेतन

अभियुक्त = जिसके ऊपर किसी प्रकार के अपराध का आरोप लगा हो।

भलमनसाहत = सज्जनता

क्रूर = निर्दयी

बंदोबस्त = इंतजाम, व्यवस्था

वायदा = वचन

धृष्टता = ढिठाई करना / उदंडता करना

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) चिड़िया को दाना बढ़ई के पास क्यों छोड़ना पड़ा ?

(ख) दाना खो जाने के बाद चिड़िया न्याय के लिए किस-किस के पास गई ?

(ग) चिड़िया ने राजा से क्या कहा ?

(घ) चींटी ने किस प्रकार चिड़िया की मदद की ?

2. अपना दाना वापस पाने के लिए चिड़िया कई लोगों के पास गई किंतु इन लोगों ने चिड़िया को झिड़क दिया। लिखें कि इन लोगों ने चिड़िया को क्या कहकर झिड़क दिया -

व्यक्ति **क्या कहकर झिड़क दिया?**

- बढ़ई - ....
  ....
- सिपाही - ....
  ....

- थानेदार - ....

- मंत्री - ....

- राजा - ....

3. सोच-विचार: बताइए -

(क) किसी का कोई जरूरी सामान नहीं मिल रहा है। आप उसकी मदद कैसे करेंगे ?

(ख) आपकी क्या राय है ?

- असली दोषी कौन था ?
- मटर के एक दाने के लिए चिड़िया की भाग-दौड़ के विषय में।

(ग) यदि चींटी भी मदद करने से इंकार कर देती तो चिड़िया और किसके पास जाती ?

4. भाषा के रंग -

(क) समानार्थक शब्द लिखिए -

खुश, थानेदार, मदद, तरक्की, घमंडी

(ख)

- बढ़ई हँसकर बोला।
- अंगरक्षक जोर से चिल्लाया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'हँसकर' तथा 'जोर से' शब्द क्रमशः 'बोला' और 'चिल्लाया' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को **क्रिया-विशेषण** कहते हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों में से 'क्रिया-विशेषण' शब्द चुनकर लिखिए -

- चिड़िया बहुत निराश हुई।
- उसने मंत्री से अपनी कहानी रो-रो कर कही।
- हाथी बोला, 'मैं अपनी पीठ से आप को धड़ाम से पटक दूँगा।'
- चिड़िया ने छककर भोजन किया।

(ग) विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए -
चिड़िया ने नदी से लौटकर बढ़ई से पूछा तो वह बोला मैं तुम्हारा नौकर थोड़े ही हूँ मुझे तो सरकार से वेतन मिलता है तुम्हारा मटर का दाना गिर गया होगा

5. तुम्हारी कलम से -
अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोक-कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी -
(क) आपके घर या आस-पास में बड़े-बुजुर्ग अक्सर ऐसी लोक-कथाएँ सुनाते होंगे। गुरु जी से कहकर अपने गाँव के किसी बड़े-बुजुर्ग को विद्यालय में बुलाइए और उनसे लोक कथाएँ सुनिए।
(ख) विभिन्न प्रदेशों की लोक-कथाएँ पुस्तकालय से पढ़िए।

7. मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1.
....
....
2.
....

....

8. इस कहानी से -
(क) मैंने सीखा -

....
(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

यह भी जानिए -
लोक-कथाओं की तरह ही लोक जीवन में थोड़े शब्दों में बड़ी बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए लोकोक्तियाँ प्रचलित होती हैं जैसे -
"अधजल गगरी छलकत जाय", "थोथा चना बाजे घना"

13.सरदार वल्लभभाई पटेल

बंबई (मुंबई) की एक सभा में सिंह की तरह गरजते हुए एक देशभक्त ने कहा था कि, ”अंग्रेज भारत को जितनी जल्दी आजाद कर दें, उतना ही अच्छा। यदि देरी की गई, तो यह उन्हीं के लिए खराब बात होगी।“ यह सिंह गर्जना करने वाले व्यक्ति थे लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल।

वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के पेटलाद तालुके के करमसद गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम झबेर भाई पटेल और माता का नाम लाड़बाई था। झबेर भाई किसान थे।

सरदार पटेल के बचपन की एक घटना है। उनकी आँख के पास एक फोड़ा निकल आया। बहुत दवा दी गई पर ठीक न हुआ। किसी व्यक्ति ने सलाह दी कि लोहे की सलाख खूब गर्म करके फोड़े में धँसा दी जाए तो फोड़ा फूट जाएगा। सलाख गर्म की गई किंतु किसी में यह साहस न होता था कि गरम सलाख को फोड़े में धँसाए। भय यह था कि कहीं आँख में न लगे। इस पर बालक वल्लभ ने कहा,

”देखते क्या हो, सलाख ठंडी हो रही है।“ और फिर स्वयं ही उसे लेकर फोड़े में धँसा दिया। बालक के इस साहस को देखकर उपस्थित लोगों ने कहा कि यह बालक आगे चलकर बहुत ही साहसी होगा। बाईस वर्ष की उम्र में उन्होंने नाडियाद स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की। फिर मुख्तारी परीक्षा पास करके गोधरा में मुख्तारी करने लगे।

कुछ समय बाद वल्लभभाई वकालत पढ़ने के लिए विदेश चले गए। जहाँ वह रहते थे, वहाँ से पुस्तकालय ग्यारह मील दूर था। वह नित्य प्रति सवेरे उठकर उस पुस्तकालय में जाते और शाम को पुस्तकालय के बंद होने पर ही वहाँ से उठते। अपने इसी अध्ययन के फलस्वरूप वह उस साल वकालत की परीक्षा में सर्वप्रथम रहे। इस पर उन्हें पचास पौंड का पुरस्कार भी मिला।

विदेश से लौटकर वह अहमदाबाद में वकालत करने लगे और थोड़े ही समय में अत्यंत प्रसिद्ध हो गए। इसी समय वह गांधी जी के संपर्क में आए। उन्होंने वकालत छोड़ दी और पूरी तरह तन-मन-धन से देश की सेवा में जुट गए।

सर्वप्रथम वल्लभभाई ने गोधरा में हुए प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन में गुजरात की बेगार-प्रथा को समाप्त करने के लिए एक प्रस्ताव पास कराया। इस सम्मेलन में पहली बार भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया गया। वल्लभभाई के प्रयासों के फलस्वरूप गैरकानूनी बेगार प्रथा बंद हो गई। वल्लभभाई ने नागपुर के झंडा सत्याग्रह का नेतृत्व भी किया। इस सत्याग्रह के कारण अंग्रेज सरकार को समझौते के लिए झुकना पड़ा। इस सत्याग्रह के बाद उनका नाम सारे भारत में फैल गया।

सन् 1927 में बारदोली का प्रसिद्ध सत्याग्रह शुरू हुआ। किसानों पर सरकार ने लगान की दर बढ़ा दी। किसान वल्लभभाई के पास गए। इस तरह उनके नेतृत्व में आंदोलन प्रारंभ हो गया। उन्होंने गाँव वालों को इस तरह संगठित किया कि लगान मिलना तो दूर, गाँवों में अंग्रेज अफसरों को भोजन, रिहाइश और सवारी तक मिलना मुश्किल हो गया।

अंग्रेज सरकार ने इसके विरोध में बहुत अत्याचार किए। गरीब किसानों के घरों के ताले फौज के जरिए तुड़वाकर, सामान जब्त करके मालगुजारी वसूल करने की कोशिश की गई पर सरकारी खजाने में एक कौड़ी भी जमा न हुई। हजारों लोग जेल गए। उनकी गाय, भैंस तक जब्त कर ली गई पर उन्होंने सिर न झुकाया। यहाँ

तक कि जब्त किए गए सामान को उठाने वाला कोई मजदूर नहीं मिलता था और न जब्त की गई जायदाद की नीलामी में बोली लगाने वाला कोई आदमी। महीनों तक यही हाल रहा। अंत में सरकार को झुकना पड़ा।

सन् 1929 में लाहौर में पूर्ण स्वराज्य की माँग की गई। अंग्रेज सरकार ने इसे नहीं माना। गांधी जी ने फिर से सत्याग्रह का नारा दिया और 12 मार्च को प्रसिद्ध डांडी यात्रा शुरू कर दी। इसके बाद 6 अप्रैल को नमक कानून तोड़कर उन्होंने नमक सत्याग्रह आरंभ किया। सरदार पटेल ने इस सत्याग्रह में भाग लिया। वह गिरफ्तार कर लिए गए और उनको तीन माह की कैद और 500 रु0 जुर्माने की सजा दी गई। सरदार पटेल ने जुर्माना स्वीकार न कर उसके स्थान पर तीन सप्ताह और जेल में ही काटे।

सन् 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हो गया। अंग्रेज सरकार ने अपनी ओर से भारत के इस युद्ध में शामिल होने की घोषणा कर दी। इसका सर्वत्र विरोध हुआ। सरदार पटेल 17 नवम्बर 1940 को व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान गिरफ्तार हुए, पर स्वास्थ्य खराब होने के कारण नौ महीने बाद रिहा कर दिए गए। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के सिलसिले में अगस्त 1942 में वह फिर गिरफ्तार किए गए। अन्य सभी नेताओं के साथ 15 जून 1945 को वह भी छोड़े गए।

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। सरदार पटेल ने गृहमंत्री का कार्यभार सँभाला। स्वतंत्रता के बाद देश के सामने कई समस्याएँ आईं। सरदार पटेल ने अपनी सूझबूझ से इन सभी पर काबू पा लिया।

जिस कार्य के लिए सरदार पटेल को सदैव याद किया जाएगा, वह था देशी रियासतों का एकीकरण। जब अंग्रेज भारत छोड़कर जाने लगे तो देशी रियासतों को यह आजादी दे गए कि वह चाहें तो आजाद रह सकते हैं, चाहें तो भारत या पाकिस्तान में मिल जाएँ। सरदार पटेल ने इस विकट समस्या को अपनी दृढ़ता और सूझबूझ से हल कर दिखाया और लगभग 600 रियासतों को भारतीय संघ का अटूट अंग बनाकर भारत के मानचित्र को नवीन स्वरूप प्रदान किया। संपूर्ण भारत में एकता स्थापित हो गई, इसलिए उन्हें भारत का लौहपुरुष कहा जाता है।

सरदार पटेल स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् केवल ढाई वर्ष जीवित रहे। वह अंतिम समय तक कठिन परिश्रम करते रहे। 15 दिसम्बर 1950 को दिल के दौरे से

मुंबई (बंबई) में उनका निधन हो गया। भारत निर्माण में सरदार वल्लभ भाई के अविस्मरणीय योगदान के कारण वर्ष 1991 में भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

सरदार पटेल की सफलता का मूल मंत्र था - कर्तव्यपालन और कठोर अनुशासन। अपने पचहत्तरवें जन्म दिवस पर उन्होंने राष्ट्र को संदेश दिया था- "उत्पादन बढ़ाओ, खर्च घटाओ और अपव्यय बिल्कुल न करो।"

अभ्यास

शब्दार्थ

देशभक्त = देश के प्रति प्रेम तथा भक्ति का भाव रखने वाला
अपव्यय = फिजूलखर्ची
जुर्माना = दंड
लौहपुरुष = वल्लभभाई पटेल को उनके साहस एवं मन की दृढ़ता के लिए लोगों द्वारा दी गई उपाधि
नासूर = वह घाव जो जल्दी भरता नहीं
गैरकानूनी = नियम विरुद्ध
बेगार-प्रथा = बिना मजदूरी के बलपूर्वक कराया जाने वाला काम
जायदाद = संपत्ति
जनसेवा = जनता की सेवा
सत्याग्रह = सत्य के प्रति आग्रह
निरंतर = लगातार

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) वल्लभ भाई पटेल का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
(ख) बारदोली का सत्याग्रह आंदोलन क्यों हुआ ?
(ग) बारदोली के सत्याग्रह आंदोलन में सरकार क्यों झुकी ?
(घ) वल्लभभाई पटेल की देश को सबसे बड़ी देन क्या है ?

2. पटेल जी के उस कथन को लिखिए -

- जिसे उन्होंने बम्बई (मुम्बई) की सभा में कहा था।
- जिसे उन्होंने अपने पचहत्तरवें जन्मदिवस पर कहा था।

3. इस पाठ को कितने अनुच्छेदों में लिखा गया है ? प्रत्येक अनुच्छेद की मुख्य बात एक-एक वाक्य में लिखिए।

4. सोच-विचार: बताइए -

(क) बेगार प्रथा क्यों बुरी थी ?

(ख) नमक कानून क्यों तोड़ा गया ?

(कठिनाई होने पर शिक्षक की मदद ले सकते हैं।)

5. भाषा के रंग -

(क) नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया-विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए -

- वह निरंतर बढ़ता जा रहा था।
- वल्लभभाई ने काम बड़ी लगन से किया।
- उनका नाम सारे भारत में तेजी से फैल गया।

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य पूरा कीजिए -

जैसे - वह .... से बोल रही थी। वह जोर-जोर से बोल रही थी।

- लड़का .... बोल रहा था।
- शेर की दहाड़ सुनकर गीदड़ .... काँपने लगा।
- धावक .... रुक गया।
- राहगीर .... थक गया।

(ग) वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए -

- साहस से युक्त व्यक्ति
- लोहे की तरह मजबूत तन-मन वाला पुरुष

- वकालत करने वाला
- अनाप-शनाप व्यय करने वाला
- जरूरी कार्यों के लिए व्यय करने वाला

(घ) नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
सत्याग्रह, आंदोलन, सूझबूझ, परिश्रम, सेनानी, सफलता

(ङ) नीचे लिखे अशुद्ध शब्दों की वर्तनी ठीक कीजिए -
अनुसाशन, स्वराज, सत्यागृह, अंर्तराष्ट्रीय, रगंना, श्रृंगार, सवतंत्रता

(च) नीचे दिए गए कथनों को शुद्ध करके लिखिए -

- उनकी स्वास्थ्य रहता था ठीक नहीं।
- सरदार पटेल स्वतंत्रता संग्राम के महान सेना थे।
- वल्लभभाई के गैरकानूनी प्रयास से बेगार प्रथा हो गई बंद।

(छ) पाठ में से ऐसे पाँच वाक्य छाँटकर लिखिए जिनकी शुरुआत सर्वनाम शब्दों से हुई है। जैसे - वह अपना सारा समय अध्ययन में ही लगाते थे।

(ज) नीचे दिए गए दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाइए -
जैसे - सन् 1929 में लाहौर में पूर्ण स्वराज की माँग की गई। सरकार ने इसे नहीं माना। सन् 1929 में लाहौर में की गई पूर्ण स्वराज की माँग को सरकार ने नहीं माना।

- उनकी आँख के पास एक फोड़ा निकल आया। वह बढ़ता ही जा रहा था।
- किसी में साहस न होता था कि गरम सलाख को फोड़े में धँसाए। भय था कि कहीं आँख में न लग जाए।
- सरदार पटेल के सामने अनेक समस्याएँ आईं। उन्होंने बहुत सूझबूझ से सब पर काबू पा लिया।

6. तुम्हारी कलम से -
सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ? संक्षेप में लिखिए।

7. अब करने की बारी -
(क) देश की आजादी तथा नव निर्माण में हाथ बँटाने वाले दस महापुरुषों के बारे में जानकारी संकलित कीजिए।
(ख) महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभभाई पटेल का चित्र कला की कॉपी में बनाइए।

8. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1. ....

2. ....

9. इस पाठ से -
(क) मैंने सीखा - ....
(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

14.भक्ति-नीति माधुरी

मीराबाई

बसौ मोरे नैनन में नन्दलाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुन तिलक दिये भाल।
मोहनि मूरति साँवरी सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर-सुधा-रस मुरली राजत, उर वैजन्ती माल।।
छुद्र घण्टिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेवाड़ के पास 'चोकड़ी' गाँव में हुआ था। ये बचपन से ही कृष्ण भक्त थीं। इनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति प्रेमभाव का वर्णन है।

तुलसीदास

का बरषा जब कृषी सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने ।।1।।

पर उपदेस कुसल बहुतेरे।
जे आचरहिं ते नर न घनेरे।। 2।।

कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव-दैव आलसी पुकारा।। 3।।

हित अनहित पसु पच्छिउ जाना।
मानुष तनु गुन ग्यान-निधाना।। 4।।

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।5।।

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।6।।

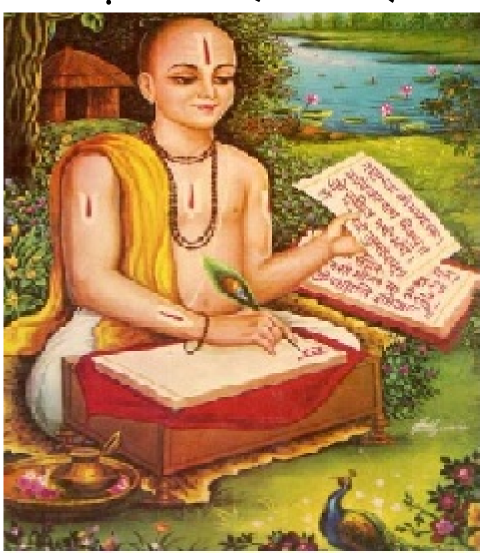

तुलसीदास का जन्म सन् 1532 बांदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था। रामचरितमानस' जानकी मंगल, विनय पत्रिका, वैराग्य संदीपनी आदि इनकी अन्य प्रमुख रचनाओं में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का अद्‌भुत समन्वय हुआ है। इनकी मृत्यु सन् 1632 में हुई थी।

रसखान

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी।।

वा छबि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।।

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर के तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि के सुख, नन्द की गाय चराय बिसारौं।।
नैनन ते रसखानि जबै, ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।
कोटिक ये कलधौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारौं।।

रसखान का जन्म सन् 1533 ई. जिला हरदोई में हुआ था। रसखान कृष्ण भक्त थे। इन्होंने अपनी कृतियों में कृष्ण के विविध रूपों का सुंदर वर्णन किया है। इनकी रचनाओं में सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, रसखान शतक प्रमुख हैं। इनकी मृत्यु सन् 1618 में हुई थी।

अभ्यास

शब्दार्थ

कछोटी = लंगोटी
बिलोकत = देखना
कोटी = करोड़ों
लकुटी = लाठी
कामरिया = कंबल
बिसारौं = भुला देना
तड़ाग = तालाब
निहारौं = देखना
कलधौत = सोना

कुँजन = कुंजों या झुरमुटों पर
करील = कीकर, एक काँटेदार झाड़ी
निधाना = खजाना
मानस = ‘राम चरित मानस’ (वह महान ग्रंथ, जिसकी रचना तुलसीदास ने की है)

सुमति = अच्छे विचार
अरुन = लाल
कादर = कायर
दैव = भाग्य
सरिस = समान
अधमाई = नीचता
मकराकृत = मछली का आकार
कटि = कमर
भाल = मस्तक
अधर = होंठ
सुधा = अमृत
राजत = शोभित
उर = हृदय
छुद्र घण्टिका = छोटी-छोटी घंटियाँ या घुँघरू
भगत बछल = भक्त वत्सल, भक्त को स्नेह देने वाले

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क) मीरा ने कृष्ण के किन गुणों का बखान किया है ?
(ख) तुलसीदास ने सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा अधर्म किसे बताया है ?
(ग) रसखान ने तीनों लोकों का राज्य किस बात पर न्यौछावर करने को कहा है?
(घ) रसखान ने कौवे को भाग्यशाली क्यों कहा है ?
(ङ) रसखान ने कृष्ण की कैसी छवि का वर्णन किया है ?

2. नीचे लिखी काव्य पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) 'काग के भाग बड़े सजनी, हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।'
(ख) 'कोटिक ये कलधौत के धाम, करील की कुंजन ऊपर वारौं।'
(ग) समय चूकि पुनि का पछिताने।
(घ) जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।
(ङ) मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।

3. सोच-विचार: बताइए -
आप ऐसे लोगों को कौन-सा दोहा सुनाएंगे -

- जो अपना काम समय पर नहीं करते और बाद में पछताते हैं।
- जो आलसी हैं।
- जो स्वयं नहीं करते, किंतु दूसरों को उपदेश देते रहते हैं।
- जो दूसरों को कष्ट पहुँचाते रहते हैं।

3. भाषा के रंग -
(क) 'बरषा' तद्भव शब्द है जिसका तत्सम रूप 'वर्षा' है। इसी प्रकार नीचे लिखे तद्भव शब्दों के तत्सम रूप को कोष्ठक से छाँटकर लिखिए -
(कुशल, कायर, धर्म, भाग्य, श्याम, मक्खन, आधार, धूलि)

तद्भव   तत्सम
कादर ....
स्याम ....
धरम ....
अधारा ....
भाग ....
माखन ....
धूरि ....
कुसल ....

(ख) अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए -

- का बरषा ....।

  .... का पछिताने।

- जहाँ सुमति ....।

  जहाँ कुमति ....।

- परहित सरिस ....।

  पर पीड़ा सम ....।

4. अब करने की बारी

(क) पता करें - कृष्ण के बाल रूप का वर्णन और किन-किन कवियों ने किया है।
(ख) पाठ में आए सवैयों को कंठस्थ करें और बालसभा में सुनाएँ।
(ग) अपने शिक्षक/माता-पिता के मोबाइल फोन पर इन कवियों की रचनाओं को सुनें तथा वैसे ही गाकर प्रस्तुत करने का अभ्यास करें।

5. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1. ....

....
2.
....
....

6. इस पाठ से -
(क) मैंने सीखा -
....
(ख) मैं करूँगी/करूँगा -
....

शिक्षण संकेत -
कक्षा को दो वर्गों में बाँटकर अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन कराएँ।

15. पत्र

न्यूयॉर्क
20 मार्च, 1895

प्रिय नित्या,

तुम्हारा 17 जनवरी का पत्र मिला। तुम प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हो, यह पढ़ कर बड़ा अच्छा लगा लेकिन एक बात ध्यान में रखना-जीतने पर घमंड से बचना और प्रथम न आने पर मन छोटा मत करना। जीत महत्वपूर्ण है लेकिन अपनी पूरी क्षमता से प्रतियोगिता में भाग लेना भी अपने आप में एक उपलब्धि है। तुमने सेंट्स एवं डॉलर की फरमाइश की है, जरूर लाऊँगा। अस्मि का दाखिला तुम्हारे स्कूल में हो गया, ये अच्छा हुआ। अब तुम्हें एक दूसरे से भिड़ंत और स्नेह का आदान-प्रदान करने के लिए शाम का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। अस्मिता का अंग्रेजी लहजे में बोलने का शौक बुरा नहीं। बस एहतियात ये रखो कि हिंदी बोलो तो हिंदी, अंग्रेजी बोलो तो अंग्रेजी। हर वाक्य में दो भाषाओं की खिचड़ी अधकचरेपन की निशानी है। सिर्फ यदा-कदा तालमेल होना चाहिए। यहाँ बर्फ पिघल गई है। वसंत आने को है। वसंत के स्वागत में कौन-सा राग गाते हैं- मैं नहीं जानता। अस्मिता को आशीर्वाद।

सस्नेह
नरेन्द्रनाथ

स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था। इन्होंने देश-विदेश में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का प्रचार किया। अल्पायु में ही अपने

ज्ञान एवं आदर्शों से संपूर्ण संसार को प्रभावित किया। इन्होंने शिकागो में अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में अपने व्याख्यान से समूचे संसार को चमत्कृत कर दिया था।

अभ्यास

शब्दार्थ

प्रतियोगिता - होड़
क्षमता - योग्यता,शक्ति
फरमाइश - माँग
लहजा - बोलने का ढंग (शब्दों के उच्चारण का खास ढंग)
शौक - लालसा, रुचि
एहतियात - सावधानी, चैकसी
अधकचरा - अधूरा, अकुशलता
यदा-कदा - कभी-कभी

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क) पत्र किसने लिखा ?......................................
(ख) किसको लिखा ?.....................................
(ग) कब लिखा ? ....
(घ) किस स्थान से लिखा ?.................................

2. पत्र में नरेंद्रनाथ जी ने किस बात पर ध्यान रखने के लिए लिखा है-

- प्रतियोगिता में भाग लेते समय
- बोलते समय

3. सोच-विचार: बताइए -
(क) वसंत ऋतु के आने पर वातावरण में क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं ?
(ख) आपको कौन सी ऋतु सबसे अच्छी लगती है और क्यों ?

(ग) इस ऋतु में कौन-कौन से त्योहार मनाए जाते हैं ?

4. अब करने की बारी -

(क) चित्र को देखकर उससे संबंधित ऋतु पर चार पंक्तियों की कविता लिखिए।

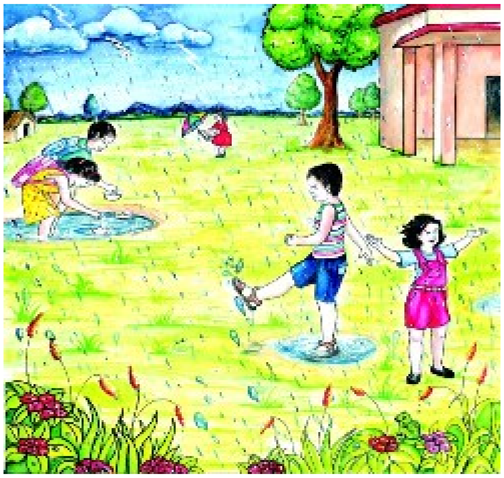

(ख) अपनी पसंद की ऋतु से संबंधित कोई गीत या कविता सुनाइए।

(ग) अपने जन्मदिन पर दोस्तों को बुलाने के लिए एक निमंत्रण पत्र बनाइए।

(घ) अपने मित्र को विद्यालय की स्वच्छता या शौचालय के उपयोग पर एक पत्र लिखिए।

(ङ) इनके बारे में पता करिए और जानिए कि इस प्रकार के पत्र कब और कैसे लिखे जाते हैं-

- बधाई पत्र
- संवेदना पत्र
- निमंत्रण पत्र
- प्रार्थना पत्र

5. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

....
....

2.

....

....

6. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -

....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

....

कितना सीखा-3

1. नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए अर्थ बताइए -
सत्याग्रह, अपव्यय, तनख्वाह, धृष्टता, बिलोकत, तड़ाग, फरमाइश, निद्ंद्व, अत्युक्ति।

2. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए -

- साहस से युक्त व्यक्ति ....
- जो सबको प्रिय हो ....
- जिसके पास धन न हो ....
- विद्या प्राप्त करने वाला ....
- सत्य बोलने वाला ....
- शिक्षा देने वाला ....

3. दो-दो वाक्य बनाइए -

(क) जिसमें 'और' व 'लेकिन' दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

(ख) जो प्रश्नवाचक हो।

(ग) जिसमें क्रिया-विशेषण शब्द का प्रयोग हुआ हो।

(घ) जिसमें सर्वनाम शब्द का प्रयोग हुआ हो।

4. नीचे लिखे दो-दो वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य बनाइए -
(क) बाहर तेज धूप है। अभी खेलने मत जाओ।
(ख) वह बहुत देर तक सोता रहा। उसे स्कूल पहुँचने में देर हो गई।

5. नीचे लिखे शब्दों से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटकर लिखिए -
निद्र्वंद्व, प्रतिवाद, प्रतिभावान, अनुकरणीय, अनुगृहीत

6. उत्तर दीजिए -
(क) सरदार पटेल को किस कार्य के लिए सदैव याद किया जाएगा ?
(ख) 'चिड़िया का दाना' कहानी के आधार पर बताइए हाथी की किस बात पर राजा अचंभे में पड़ गया ?
(ग) 'समय चूकि पुनि का पछिताने से क्या आशय है ?

7. अपने स्कूल में 26 जनवरी के अवसर पर अपने दोस्तों को बुलाने के लिए निमंत्रण पत्र लिखिए।
8. तुम्हें कौन-कौन से खेल पसंद हैं ? उनके नाम लिखिए।
9. नीचे लिखे शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए -
सत्यगृह, देसभक्त, मख्खियाँ, अतिथी, तरूण, चीडीया, हडडी, क्रषि
10. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

- परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
- काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन-रोटी।
- अधर-सुधारस, मुरली राजत, उर वैजंती माल।

11. (क) आठ पंक्ति की कोई कविता सुनाइए।
(ख) पढ़ी या सुनी गई कोई कहानी सुनाइए।
12. अपने गाँव/मुहल्ले में साफ-सफाई की समस्या पर अपने प्रधान/सभासद को एक पत्र लिखिए।

13. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द वर्ग पहेली में लिखे गए हैं। इन्हें खोजकर लिखिए-

छोटा - ...., कम - ...., पतला - ....,
दिन - ...., ऊँचा - ...., अँधेरा - ....,
सुबह - ...., अंदर - ...., ठंडा - ....,
मीठा - ...., मोटा - ....

शा	ज्या	दा	य	उ
म	ख	ट्टा	रा	जा
नी	बा	प	त	ला
चा	ह	मो	टा	ब
ग	र	म	य	ड़ा

अपने आप-3
मैं ए.टी.एम. हूँ

मैं ए.टी.एम. हूँ। मेरा पूरा नाम है - आटोमेटेड टेलर मशीन। कुछ लोग मुझे मनी मशीन, कैश मशीन और कैश प्वाइंट कहते हैं। इतना ही नहीं, कुछ लोग प्यार से मुझे 'एनी टाइम मनी' भी कह देते हैं।

कुछ वर्ष पहले तक लोगों को अपना पैसा निकालने के लिए बैंक जाना होता था। कई बैंक घरों से दूर होते हैं, इसमें बहुत समय भी लगता था। लेकिन मेरे आ जाने के बाद बैंकों ने अपने खाताधारकों को सुविधा दे दी है कि वे मेरे द्वारा कभी भी अपना पैसा निकाल सकते हैं। आजकल तो मैं पैसा निकालने के अलावा पैसा जमा करने, खाता बैलेंस पता करने, दूसरों के खाते में पैसा भेजने जैसे कई अन्य काम भी झटपट कर दे रहा हूँ।

मुझे प्रयोग में लाने के लिए बैंक अपने खाताधारक को एक प्लास्टिक कार्ड देते हैं, जिसे ए.टी.एम. कार्ड कहते हैं। इसमें कार्ड का नंबर और कुछ गोपनीय जानकारी होती है। इसके प्रयोग के लिए बैंक एक गोपनीय नंबर भी देता है जिसे पिन (पर्सनल आइडेंटिफिकेशन नंबर) कहते हैं।

मेरा उपयोग बहुत आसान है। मेरी सुविधा प्राप्त करने के लिए मशीन में बने खाँचे में अपना ए.टी.एम. कार्ड डालें। तुरंत कंप्यूटर स्क्रीन पर भाषा चुनने के लिए

विकल्प आएगा। आपको हिंदी या अंग्रेजी जो भी भाषा चुननी है उसके सामने का बटन दबाएं या स्क्रीन को टच (स्पर्श) करें। इसके बाद स्क्रीन पर पिन नंबर डालने का विकल्प आएगा। उसमें अपना गोपनीय नंबर डालें। अब स्क्रीन पर आएगा कि आपको क्या सेवा चाहिए - पैसा निकालना है, खाते में बैलेंस पता करना है या अन्य कोई। अगर आप पैसा निकालते हैं तो विद्ड्राल (निकासी) का बटन दबाएं। मैं अब पूछूँगा कि आपको कितना रुपया निकालना है। खाली जगह में उतनी संख्या भर दें जितना रुपया चाहिए। फिर मैं पूछूँगा कि क्या आपको इस निकासी की पर्ची चाहिए, यदि हा,ँ तो हाँ का बटन दबा दें। थोड़ी देर में आप देखेंगे कि आपके द्वारा चाहा गया रुपया और पर्ची बाहर आ रहे हैं।

इसके बाद भी स्क्रीन पर कुछ निर्देश आते रहेंगे। उन्हें पढ़ते हुए अपनी आवश्यकता के अनुसार विकल्प चुनकर स्क्रीन को टच (स्पर्श) करते अथवा बटन दबाते रहें।

यह तो हुई मेरे इस्तेमाल की बात। पर मुझे प्रयोग करते समय कुछ सावधानियाँ भी जरूरी हैं जैसे कि अपना पिन नंबर कभी किसी को न बताएं। न ही किसी के सामने मशीन में अपना पिन नंबर दर्ज करें।

हमेशा एक बार में एक ही व्यक्ति मेरा प्रयोग करें। भीड़ होने पर अंदर से लोगों को बाहर जाने को कह दें।

पर्ची देखने के बाद अपने साथ ले जाएं अथवा कूड़ादान में डालें। किसी भी प्रकार की गंदगी न फैलाएं।

16.विजय पथ

कछुआ और खरगोश में गहरी मित्रता थी। दोनों साथ-साथ रहते और खेलते थे। एक दिन खरगोश ने कछुआ से कहा-मित्र क्यों न एक दिन हमारी तुम्हारी दौड़ हो जाए। मैं तैयार हूँ- कछुआ बोला। दोनों ने अपने साथियों को बुलाकर दौड़ का रास्ता और गंतव्य स्थल तय किया, फिर एक निश्चित दिन पर दौड़ की घोषणा हुई।

दौड़ के दिन की घोषणा होने पर खरगोश एकदम निश्ंिचत था। उसे पूरा विश्वास था कि कछुआ उससे दौड़ जीत ही नहीं पाएगा। उधर कछुए ने अपनी तैयारियाँ तेज कर दीं। वह दौड़ जीतने को लेकर योजना बनाने में जुट गया।

दौड़ के लिए निश्चित दिन पर कछुआ और खरगोश निर्धारित स्थान पर दौड़ के लिए उपस्थित हुए। गिलहरी ने सीटी बजाकर दौड़ प्रारंभ की। कछुआ धीरे-धीरे चला जबकि खरगोश तेजी से दौड़ता हुआ बहुत आगे निकल गया। एक पेड़ के पास पहुँचकर खरगोश ने सोचा कि कछुआ तो अभी बहुत पीछे होगा, क्यों न मैं थोड़ी देर पेड़ की छाया में आराम कर लूँ। 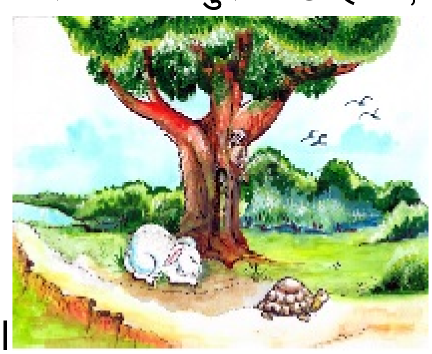 उसे विश्वास था कि कुछ देर के बाद वह तेज रफ्तार में दौड़कर अपने गंतव्य स्थान तक कछुआ से पहले ही पहुँच जाएगा। खरगोश पेड़ की छाया में बैठ गया। मंद-मंद पवन बह रही थी। पेड़ पर चिड़ियाँ चहचहा रहीं थीं। ऐसे सुहावने वातावरण में खरगोश को नींद आ गई। उधर कछुआ अपनी मंद गति से लगातार गंतव्य की ओर चलता रहा।

गंतव्य स्थान पर पहुँचकर कछुए ने इधर-उधर देखा उसे खरगोश कहीं दिखाई न दिया। उधर खरगोश की नींद खुली तो उसने गर्दन घुमाकर दूर तक देखा। उसे कछुआ कहीं न दिखा। अरे! अभी कछुआ यहाँ तक पहुँचा ही नहीं- खरगोश ने सोचा और गंतव्य की ओर तेजी से दौड़ चला।

गंतव्य स्थल पर पहुँचकर देखता है कि कछुआ वहाँ पहले से ही मौजूद है और उसे तमाम जानवर मालाएँ पहना रहे हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ-

पाठ में आए कठिन शब्दों को छाँटिए और उनका अर्थ शब्दकोश से ढूँढ़कर लिखिए।

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) खरगोश ने कछुआ से क्या कहा ?

(ख) दौड़ के लिए क्या-क्या निर्धारित किया गया ?

(ग) पेड़ के नीचे पहुँचकर खरगोश ने क्या सोचा ?

(घ) दौड़ में कौन जीता और क्यों ?

2. सोच-विचार: बताइए -

कछुए के जीतने पर बहुत से पत्रकार उसका इंटरव्यू लेने पहुँचे। कछुए ने सभी के सवालों का प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया।

- अगर आप भी होते वहाँ, तो कछुए से कौन-कौन से सवाल पूछते ?
- खरगोश से कौन-कौन से सवाल पूछते ?

3. अनुमान और कल्पना -
(क) अगर यह दौड़ अगली बार हो तो क्या परिणाम होगा ?
(ख) कछुए ने अपनी जीत की बात फोन पर अपने माता-पिता और भाई-बहिन को बताई। कक्षा में अभिनय करते हुए बताइए कि कछुए ने किससे क्या-क्या बातें बताई होंगी ?
(ग) खरगोश ने पेड़ के नीचे सोते-सोते सपना देखा। सोचें और लिखें -खरगोश ने क्या सपना देखा होगा ?

4. तुम्हारी कलम से -
(क) दौड़ के अगले दिन सभी समाचार-पत्रों में इस दौड़ की खबर छपी। खबर के साथ कछुए का फोटो भी लगा हुआ था। आप संवाददाता होते तो अपने अखबार के लिए इस समाचार को किस प्रकार लिखते ? सोचकर लिखिए और चित्र भी बनाइए।
(ख) क्या आपने भी कभी किसी दौड़ में हिस्सा लिया है ? नहीं भी लिया तो दौड़ देखी होगी। उस दौड़ के बारे में अपने अनुभव लिखिए।

5. अब करने की बारी -
(क) कछुए को दौड़ में जीतने पर उसके दोस्तों ने बधाई संदेश भेजे। आप भी बनाएं-

- कछुए के लिए बधाई पत्र
- खरगोश के लिए सांत्वना पत्र

(ख) दौड़ प्रतियोगिता को देखने के लिए दूर-दूर से तमाम पशु-पक्षी आए। उन सभी को बुलाने के लिए निमंत्रण-पत्र भेजे गए थे। जंगल में जगह-जगह पोस्टर भी लगाए गए थे।
अपने साथियों के साथ मिलकर बनाइए कछुआ और खरगोश की दौड़ का पोस्टर।
(ग) कछुआ और खरगोश की दौड़ चल रही है और आप दौड़ को देख रहे हैं। इस दौड़ का आँखों देखा हाल सुनाइए।

6. मेरे दो प्रश्न: कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1..

....

2..

....

7. इस कहानी से -

(क) मैंने सीखा -..

(ख) मैं करूँगी/करूँगा

-..

17.झाँसी की रानी की समाधि पर

इस समाधि में छिपी हुई है,
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की,
दिव्य आरती फेरी।

यह समाधि यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।
अन्तिम लीला स्थली यही है,
लक्ष्मी मरदानी की।।

यहीं कहीं पर बिखर गयी वह,
भग्न विजय माला-सी।
उसके फूल यहीं संचित हैं,
है यह स्मृति शाला-सी।।

सहे वार पर वार अंत तक,

लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब,
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की,
आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते ।।

पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती,
है वीरों की बानी।।

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी ।
खूब लड़ी मरदानी वह थी,
झाँसी वाली रानी।।

- सुभद्रा कुमारी चैहान

सुभद्रा कुमारी चैहान का जन्म सन् 1904 (प्रयाग) में हुआ था। इनकी रचनाओं में राष्ट्र-भक्ति, प्रेम और प्रकृति का सुंदर चित्रण मिलता है। इनकी रचनाओं में मुकुल, त्रिधारा, बिखरे मोती, झाँसी की रानी एवं वीरों का कैसा हो वसंत आदि प्रमुख हैं। इनकी मृत्यु 1948 में हुई थी।

अभ्यास

शब्दार्थ

दिव्य = चमकती हुई, अति सुंदर
मूल्यवती = बहुत कीमती
लघु = छोटी
निहित = छिपा कर रखी हुई
भग्न = टूटी हुई
निशीथ = अर्धरात्रि
संचित = इकट्ठा
क्षुद्र जंतु = छोटे जीव-जंतु
फूल = चिता जलने के बाद बची हड्डियों के अवशेष
गिरा = वाणी

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) रानी की समाधि किन-किन बातों की याद दिलाती है ?
(ख) 'रानी की समाधि में स्वतंत्रता की आशा की चिनगारी छिपी है' - ऐसा क्यों कहा गया है ?
(ग) रानी की समाधि तथा अन्य समाधियांे में क्या अंतर है ?

(घ) युद्ध भूमि में बलिदान के बाद वीर का मान बढ़ जाता है। इस कथन के समर्थन में कवि ने क्या उदाहरण दिया है ?

2. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -
(क) पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती,
है वीरां◌े की बानी।।
(ख) बढ़ जाता है मान वीर का,
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की,
भस्म यथा सोने से ।।

3. सोच- विचार: बताइए-
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम इतिहास में अमर क्यों है ?

4. भाषा के रंग -
'क' वर्ग में दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द 'ख' वर्ग से मिलान कीजिए -

(क)	(ख)
स्वतन्त्र	वाणी
रण	राख
गाथा	एकत्र
संचित	स्वाधीन
गिरा	कहानी
भस्म	युद्ध

5. तुम्हारी कलम से -

अपने आस-पास की किसी महिला के द्वारा किए गए बहादुरी के कार्यों को अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी -
(क) सुभद्राकुमारी चैहान ने झाँसी की रानी पर ही एक और कविता लिखी है। उसे पुस्तकालय से खोजकर पढ़िए।
(ख) कविता की आठ पंक्तियाँ याद कर कक्षा में हाव-भाव के साथ सुनाइए।
(ग) आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों का बलिदान देने वाले कुछ अन्य वीरों के नामों की सूची बनाइए।

7. मेरे दो प्रश्न: कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1...
2...

8. इस कविता से -
(क) मैंने सीखा -...
(ख) मैं करूँगी/करूँगा
-...

18.अंधेर नगरी

पात्र-*महन्त, कुँजड़िन, नारायणदास, हलवाई, गोबर्धनदास, शिष्य, राजा, फरियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला, भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, सिपाही।*

स्थान - शहर से बाहर सड़क

(महंत जी और दो चेले बातें कर रहे हैं)

महंत - बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे।

नारायणदास - गुरु जी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो।

महंत - बच्चा गोबर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

(गोबर्धनदास जाता है)

गोबर्धनदास - (कुँजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव है ?

कुँजड़िन - बाबा जी, टके सेर।

गोबर्धनदास - सब भाजी टके सेर ! वाह ! वाह ! बड़ा आनन्द है। यहाँ सभी चीजें टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई, मिठाई क्या भाव।

हलवाई - टके सेर।

गोबर्धनदास - वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। सब टके सेर। क्यों बच्चा, इस नगरी का नाम क्या है ?
हलवाई - अंधेर नगरी।
गोबर्धनदास - और राजा का नाम क्या है ?
हलवाई - अनबूझ राजा।
गोबर्धनदास - वाह ! वाह !
अंधेर नगरी अनबूझ राजा,
टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।
हलवाई - तो बाबा जी, कुछ लेना हो ले लें।
गोबर्धनदास - बच्चा, भिक्षा माँग कर सात पैसा लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।
(महंत जी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोबर्धनदास आता है)
महंत - बच्चा गोबर्धनदास, क्या भिक्षा लाया, गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबर्धनदास - गुरु जी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।
महंत - बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीजें टके सेर मिलती है, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन सा राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है।

गोबर्धनदास - अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।
महन्त - तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भी नहीं रहूँगा।
गोबर्धनदास - गुरु जी, मैं तो इस नगर को छोड़कर नहीं जाऊँगा और जगह दिन भर माँगो तो भी पेट नहीं भरता। मैं तो यहीं रहूँगा।
महंत - देख मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना (यह कहते हुए महंत चले जाते हैं।)
(राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' का शब्द होता है।)
राजा - कौन चिल्लाता है, उसे बुलाओ तो।
(दो नौकर एक फरियादी को लाते हैं)
फरियादी - दुहाई ! महाराज, दुहाई।
राजा - बोलो क्या हुआ ?
फरियादी - महाराज, कल्लू बनिये की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे

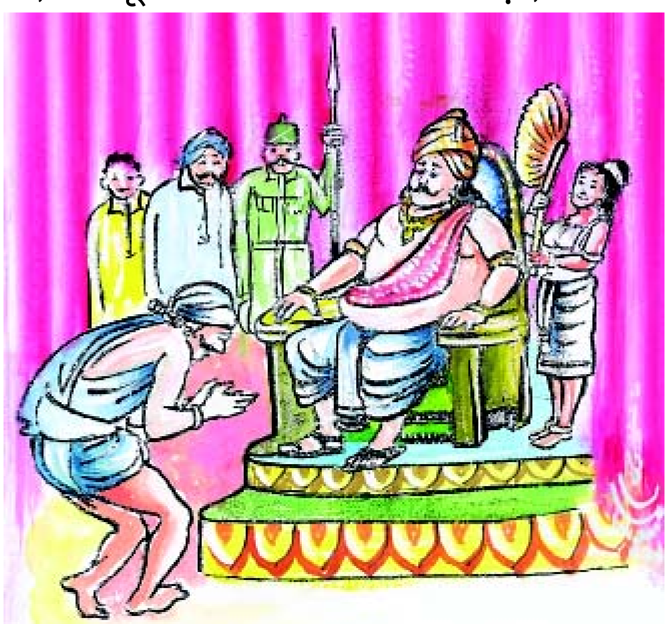

दब गई। न्याय हो।
राजा - कल्लू बनिये को पकड़ लाओ।
(नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिये को पकड़ लाते हैं)
राजा - क्यों रे बनिये, इसकी बकरी क्यों दब कर मर गई ?
कल्लू - महाराज मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा - अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।
(कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़ लाते हैं)
राजा - क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई ?
कारीगर - महाराज, चूने वाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।
राजा - अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ।
(कारीगर निकाला जाता है। चूने वाला पकड़ कर लाया जाता है)
राजा - क्यों रे चूने वाले, इसकी बकरी कैसे मर गई ?
चूने वाला - महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमजोर हो गया।
राजा - तो भिश्ती को पकड़ो।
(भिश्ती लाया जाता है)
राजा - क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई ?
भिश्ती - महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।
राजा - अच्छा, भिश्ती को निकालो, कसाई को लाओ।
(लोग भिश्ती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं)
राजा - क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मसक क्यों बनाई ?
कसाई - महाराज, गड़रिये ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मसक बड़ी बन गई।
राजा - अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिये को लाओ।
(कसाई निकाला जाता है। गड़रिया लाया जाता है)
राजा - क्यों रे गड़रिये, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची ?
गड़रिया - महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।
राजा - इसको निकालो, कोतवाल को पकड़ कर लाओ।
(कोतवाल को पकड़ कर लाया जाता है)

राजा - क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूमधाम से क्यों निकाली कि गड़रिये ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी ?

कोतवाल - महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा - कुछ नहीं महाराज, महाराज। ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।

(सभी कोतवाल को पकड़ कर ले जाते हैं)

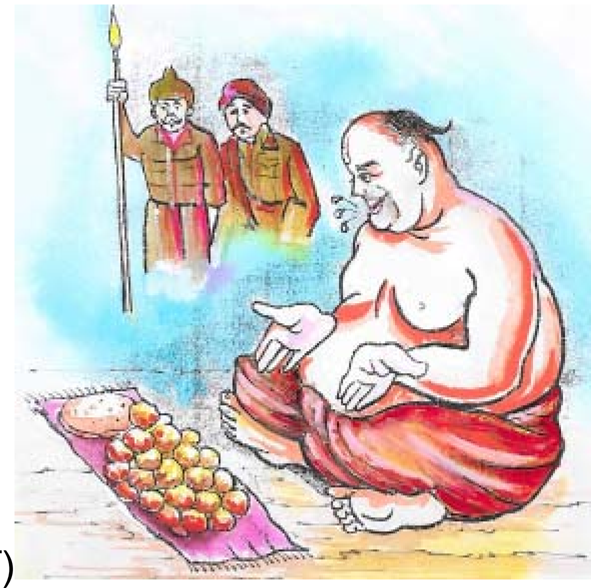

(गोबर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है)

गोबर्धनदास - गुरु जी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या? खाते-पीते मस्त पड़े हैं।

(चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं)

सिपाही - चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मजा मिलेगा।

गोबर्धनदास - (घबड़ाकर) हैं, यह आफत कहाँ से आई, अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ते हो?

सिपाही - बात यह है कि कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब उसे फाँसी देने को ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सजा होना जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोबर्धनदास - दुहाई परमेश्वर की ! अरे मैं नाहक मारा जाता हूँ। अरे यहाँ बड़ा ही अंधेर है। गुरु जी तुम कहाँ हो, आओ मेरे प्राण बचाओ !

(गोबर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं)

गोबर्धनदास - हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं।

सिपाही - अबे, चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है।

गोबर्धनदास - हाय! मैंने गुरु जी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरु जी, कहाँ हो बचाओ, गुरु जी ! गुरु जी !

महंत - अरे बच्चा गोबर्धनदास, तेरी यह क्या दशा है ?

गोबर्धनदास - (हाथ जोड़कर) गुरु जी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरु जी, बचाओ।

महन्त - कोई चिंता नहीं, (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो। (सिपाही उसे थोड़ी देर के लिए छोड़ देते हैं, गुरु जी चेले को कान में समझाते हैं)

गोबर्धनदास - तब तो गुरु जी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे।

महंत - नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।

(इस प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं)

राजा - यह क्या गोलमाल है ?

सिपाही - महाराज, चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है ?

राजा - (गुरु से) बाबा जी, बोलो। आप फाँसी क्यों चढ़ते हैं ?

महंत - राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री - तब तो हम ही फाँसी चढ़ेंगे।

गोबर्धनदास - नहीं, हम। हमको हुक्म है।
कोतवाल - हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।
राजा - चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी करो। (राजा को लोग फाँसी पर लटका देते हैं) पर्दा गिरता है।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र
('अंधेर नगरी' नाटक का संक्षिप्त अंश)

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) ने नाटक, कविता, निबंध, आख्यान आदि लिखकर खड़ी बोली हिंदी का विकास किया। इनकी रचनाओं में भारत जननी, अंधेर नगरी, सुलोचना, मुद्राराक्षस, कश्मीर कुसुम आदि प्रमुख हैं। इन्होंने अनेक पत्रों का भी प्रकाशन किया।

अभ्यास

शब्दार्थ

टका = ताँबे का पुराना सिक्का गुलाम = दास, नौकर
कसूर = अपराध, दोष, गलती भाजी = साग-सब्ज़ी
हुज्जत = विवाद, बहस, झगड़ा सबब = कारण

1. बोध प्रश्न - उत्तर लिखिए
(क) अंधेर नगरी के सभी पात्रों के नाम बताइए ।
(ख) महंत अंधेर नगरी को क्यों छोड़कर चला गया ?
(ग) शिष्य गोबर्धनदास अपने गुरु के साथ क्यों नहीं लौटा ?
(घ) सिपाही गोबर्धनदास को क्यों फाँसी देना चाहते थे ?
(ङ) गोबर्धनदास की जान कैसे बची ?
(च) इस एकांकी में किन-किन बातों पर व्यंग्य किया गया है ?

2. सोच-विचार: बताइए -
(क) बकरी के मरने का असली दोषी कौन था ?
(ख) नगर को अंधेर नगरी क्यों कहा गया है ?

3. अनुमान और कल्पना -
महंत ने अपने शिष्य के कान में क्या कहा होगा, जिसके फलस्वरूप कोतवाल मंत्री और राजा सबके सब स्वयं फाँसी पर चढ़ने के लिए उतावले हो गए।

4. भाषा के रंग
(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक से उपयुक्त शब्द चुन करके कीजिए -

- नगर तो बड़ा सुंदर है पर .... भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो। (भोग, रुपये, कपड़े, भिक्षा)
- सात पैसे भीख में मिले थे उसी से .... मिठाई मोल ली है। (तीन सेर, साढ़े तीन किलो, साढ़े तीन सेर)
- अंधेर नगरी .... राजा, टके सेर भाजी, टके सेर ....। (मंत्री, मिठाई, खाजा, सिपाही, अनबूझ राजा)

- इस समय ऐसी शुभ घड़ी में जो मरेगा .... जाएगा। (नरक, सीधा शहर, सीधा स्वर्ग, सीधे अपने घर)

(ख) नीचे लिखे शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए -
दिवार, गोबर्धनदास, गणेरिया, भिस्ती, फाँसी, हूज्जत, महंथ

(ग) निम्नलिखित विशेषण और विशेष्य शब्द दिए गए हैं उनके सही जोड़े बनाइए-
विशेषण- सुंदर, टका सेर, चैपट, अंधेर, बड़ी, शुभ
विशेष्य- भेड़, राजा, नगरी, घड़ी, नगर, भाजी

5. तुम्हारी कलम से -
इस एकांकी से हमें क्या सीख मिलती है ? संक्षेप में लिखिए।

6. अब करने की बारी
(क) एकांकी को कहानी के रूप में लिखिए
(ख) एकांकी का कक्षा में अभिनय कीजिए।
(ग) नीचे लिखी कथा को ध्यान से पढ़िए -

एक आदमी की भेंट एक देवता से हो गई। वह देवता के सामने अपना दुखड़ा रोने लगा। देवता ने उँगली से एक पत्थर की ओर इशारा किया। पत्थर सोने का बन गया, पर सोने का पत्थर मिलने के बाद भी वह आदमी संतुष्ट न हुआ। देवता ने उँगली से एक मूर्ति की ओर इशारा किया। मूर्ति भी सोने की बन गई। उस आदमी को फिर भी संतोष न हुआ। देवता ने पूछा-”तुम आखिर चाहते क्या हो ?“ उस आदमी ने कहा, ”क्या आप मुझे अपनी उँगली दे सकते हैं ?“

- इस कहानी का उचित शीर्षक लिखिए।
- सही विकल्प पर ✓ निशान लगाइए -

आदमी ने देवता से उँगली माँगी क्योंकि -
(क) उस आदमी के उँगली न थी। ( )

(ख) उस आदमी को सन्तोष न था। ( )
(ग) वह उँगली सोने की थी। ( )

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1...
....
2...
....

8. इस पाठ से -
(क) मैंने सीखा -...
(ख) मैं करूँगी/करूँगा
-...

19.किन्नौर देश की ओर

478HRQ

रामपुर (हिमाचल प्रदेश में स्थित) से 17 मई को प्रस्थान किया।

यद्यपि मेरे पास एक ही खच्चर का सामान था, किंतु पहाड़ में अकेला खच्चर ले नहीं जाया जा सकता, इसलिए सामान के लिए दो खच्चर और सवारी के लिए एक घोड़े का प्रबंध किया था। अभी कुछ दूर ही गए होंगे कि घोड़ा ठमकने लगा। साथ चलने वाले लड़के से पूछा - 'घोड़े की पीठ तो कटी नहीं है ?' लड़के ने पहले इधर-उधर करना चाहा, किंतु जोर देने पर बोला - 'हाँ, पीठ कटी है।' मैंने घोड़े को लड़के के हवाले करके कहा- 'इसे तुरंत अस्तबल में ले जाकर दूसरा घोड़ा बदलकर ले

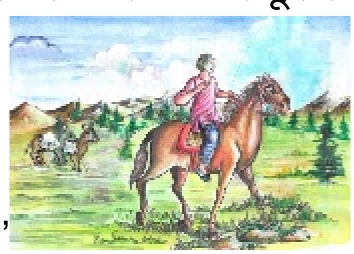

आओ। मैं गौरा में प्रतीक्षा करूँगा।'

तीन-साढ़े तीन घंटे में गौरा डाक बंगले में पहुँच गया। गौरा रामपुर से ढाई हजार फीट से अधिक ऊँचा है, इसलिए रास्ते में चढ़ाई भी पड़ी। दो-तीन घंटे में घोड़े के आ जाने की पूरी उम्मीद थी किंतु घोड़ा कहाँ आने वाला था ? रास्ता भी कड़ी चढ़ाई, उतराई का था। धूप भी तेज थी। मत पूछिए, अंतिम चार मील ने क्या

गति बना दी किंतु हिम्मत छोड़ने की बात न थी। रास्ते में बुशहरी नारियाँ डाँडेपर के किसी मेले से खूब बनी-ठनी लौटी आ रही थीं, कोई गीत गा रही थी, किंतु यहाँ देखने-सुनने के लिए दिल कहाँ था? आगे बढ़ तो रहा था, किंतु हर पाँव घंटे पर जान पड़ता था। फिर भी, 21 मील की यात्रा करके सूर्यास्त के समय सराहन के

डाक बंगले पर पहुँच गया।

बंगला बंद था। मालूम हुआ चैकीदार साहब मेला गए हुए हैं, आज रात को शायद ही लौटें। खैर, कोली बूढ़ा कुछ बीमार था, इसलिए वह मेला न जा सका था, नहीं तो उस थकान में सात हजार फीट की ऊँचाई पर रात में बाहर घास पर बैठना बहुत प्रिय नहीं लगता। बूढ़ा कहीं से कुर्सी ले आया। पूछताछ करने पर मेट के पास चाभी निकल आई। थोड़ी देर बाद दौलतराम भी खच्चरों को हाँके आ पहुँचे। जान पड़ता था, वह हमसे भी अधिक थके-माँदे हैं।

दोपहर को छाछ भर पिया था इसलिए भूख तो लगनी ही ठहरी, किंतु इस समय थोड़ा लेट जाने का ख्याल था। हमें सबसे ज्यादा चिंता थी कल की यात्रा की। अगले दिन पैदल चलने की शक्ति नहीं थी।

अभी हम किन्नौर देश नहीं पहुँचे। अभी तीन एक मील और चलना पड़ा। मान्योरी की धार आई। यहाँ से हम असली किन्नौर देश में दाखिल हुए। यहाँ पर स्त्रियाँ ऊर्ण सारी पहने थीं। हाँ, ऊर्ण सारी को ऊनी साड़ी न मान लीजिए। यह काफी लंबा-चैड़ा पतला कंबल होता है, जिसे स्त्रियाँ दाहिना कन्धा खोले काँटे से इस प्रकार पहनती हैं, कि सिर को छोड़कर सारा शरीर ढक जाता है। किन्नौर देश की स्त्रियाँ पुरुषों की भाँति टोपी लगाती हैं, जिसके तीन भाग में उठे कनपटे जाड़ों में नीचे गिरकर कनटोप का काम देते हैं।

रास्ता तिब्बत-हिंदुस्तान सड़क का था और वह बहुत परिश्रम से बनाया गया था इसमें शक नहीं, किंतु वह कितनी ही जगहों पर कठिन था। हम आसानी से

दुकान और सराय के पास पहुँच गए। सराय के धुपहले और शायद खटमल-पिस्सुओं से भरे बराँडे को न पसंद कर मैंने दुकान की छाँह पसंद की।

दुकान में काफी आलू पड़े थे और गुड़ पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। मेरे खाने खरीदने की वहाँ कोई चीज न थी। पास के कटे खेत में अपनी राबरी डाले खंपा पड़े थे। खम तिब्बत में चीन की सीमा पर एक प्रदेश है। शायद इनके पूर्वजों में से कुछ किसी समय खम से खानाबदोशी करने इधर आए हों। इन लोगों का कहीं घर नहीं है। इनका काम है छोटा-मोटा सौदा खरीदकर इधर से उधर बेचना। जाड़ों में ये मंडी, शिमला, हरिद्वार, दिल्ली तक पहुँचते हैं और गर्मियों में सतलज और गंगा की घाटियों से पश्चिमी तिब्बत।

पास में खड़े खंपा बच्चों को देखकर मैंने उनसे तिब्बती भाषा में कुछ कहा। उनके कान खड़े हो गए। एक तरुण और उसकी माँ पास आईं। तिब्बती भाषा में बात करते देख उन्हें आश्चर्य हुआ। मैं बनिये के आदमी से पीने के लिए पानी माँग रहा था। तरुण ने कहा- मैं चाय लाता हूँ। यद्यपि मै केवल ठंडा पानी चाह रहा था, किंतु तरुण के सत्कार को कैसे ठुकरा सकता था ? माँ चाय बनाने चली गई। मैं तरुण से बातचीत करने लगा। मेरी दृष्टि उसके स्वच्छ, स्वस्थ और प्रसन्न मुँह पर थी। उन्हें देखकर मेरे मन में भी यह ख्याल उठा- इन्हीं की भाँति निद्र्वंद्व हो गदहा, खच्चर और तंबू लिए एक देश से दूसरे देश में घूमूँ। काश ! मैं बीस बरस का हो जाता, फिर इसी तरुण से कहता- लो दोस्त! अब मुझे भी अपने परिवार में शामिल कर लो।

शाम तक हमें नचार पहुँचना था। हम धीरे-धीरे आगे बढ़े। अब चढ़ाई थी। चढ़ाई पूरा करने के बाद अब हम देवदारों के सुंदर वन में थे। सारे रास्ते का यह सबसे सुंदर भाग था। सारा पर्वत सदा हरे रहने वाले देवदारों से ढँका था। बीच-बीच में कुछ गाँव भी मिले। एक गाँव सड़क से नीचे पास ही था, जिसमें मंदिर था। अठारह बीस खूँद का सुङरा गाँव यही है। इसी के पास किसी गुफा में बाणासुर की भार्या ने सात संतानों को जन्म दिया था।

23 मील की यात्रा पूरी करके साढ़े पाँच बजे हम नचार पहुँचे।वहाँ बंगले में रुके। रात को मैं इत्मीनान से सोया। वहाँ ढिल्लन साहब मिले। ढिल्लन साहब ने बताया -

इधर बहुत भालू हैं। वह आदमी को कम किंतु गाय, भेड़, बकरी को मारकर खा जाते हैं। ज्यादातर काले भालू हैं, किंतु ऊपर कंडों में भूरे भालू भी सुने जाते हैं। देर तक दिमाग तरह-तरह के विचारों में डूबा रहा कि यह घोर जंगल है। यदि भालू इधर आ जाए तो ! अंत में नींद आ गई। भालू सपने में भी नहीं आए।

सबेरे हाथ धोकर ढिल्लन साहब के यहाँ चाय पी। स्नान की बात मत पूछिए। सप्ताह में एक बार स्नान मैं यहाँ के लिए पर्याप्त समझता हूँ, नहीं तो हिमालय की पवित्र वायु का माहात्म्य ही क्या रहेगा ? नचार से तीन मील वाङ्तू के पुल तक उतराई ही उतराई।

वाङ्तू बंगले पर कोई घंटा भर में पहुँच गए। अब आठ मील और रहते थे। यहाँ विश्राम करने के लिए काफी समय था। अभी कल का भोजन पच नहीं पाया था। अतः पानी ही पिया। यहाँ के चश्मे के शीतल मधुर जल को अमृत कहना

अत्युक्ति न होगी। बंगले के आस-पास ऊँची-नीची जमीन है। दो-तीन चूली (खुबानी) के वृक्ष भी थे। चार घंटा विश्राम के बाद चलने का निश्चय किया।

- राहुल सांकृत्यायन

राहुल सांकृत्यायन का जन्म (9 अप्रैल 1813-14 अप्रैल 1963) उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद में हुआ। ये हिंदी के प्रमुख साहित्यकार थे। राहुल सांकृत्यायन ने देश-विदेश की यात्राएँ कीं एवं हिंदी में 'यात्रावृत्तांत' को साहित्य की मान्य विधा के रूप में स्थापित किया। ये छत्तीस भाषाएँ लिख, पढ़ एवं बोल सकते थे। 'वोल्गा से गंगा', 'मेरी जीवन यात्रा' इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

किन्नौर देश = हिमाचल प्रदेश का एक रमणीक भाग जो तिब्बत की सीमा पर बसा है।

सत्कार = आदर-सम्मान

अत्युक्ति = बढ़ा-चढ़ा कर कहना

अभ्यस्त = जिसने अभ्यास किया हो, कुशल

भार्या = पत्नी

ठमकना = चलते-चलते रुक-रुक जाना

गत = दशा

खानाबदोश = जिनका कोई घर, ठौर ठिकाना न हो

माहात्म्य = महत्व

निद्‍र्वंद्व = बिना द्वंद्व के (बिना लड़ाई-झगड़े के)

चश्मा = झरना

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क) लेखक ने यात्रा में यातायात के किस साधन का उपयोग किया और क्यों ?
(ख) थोड़ी दूर चलते ही क्या घटना घटी और इससे लेखक के किस गुण का पता चलता है ?
(ग) सराहन के डाक बँगले पर पहुँचते समय लेखक की दशा का वर्णन कीजिए।
(घ) देवदारों के घने वन में चलते समय लेखक के मन में क्या-क्या विचार आ रहे थे?
(ङ) लेखक ने किन्नौर प्रदेश की स्त्रियों के पहनावे की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

2. सोच-विचार: बताइए -
(क) यदि आप को कभी पहाड़ों पर जाने का अवसर मिले तो आप क्या तैयारी करेंगे ?
(ख) पहाड़ी जनजीवन और मैदानी जनजीवन में क्या समानता और क्या अंतर है ?

3. अनुमान और कल्पना -
(क) यदि रास्ते में खच्चर बीमार हो जाता तो लेखक अपनी यात्रा कैसे पूरी करते ?
(ख) लेखक को देवदार के सघन वन में चलने में बड़ा आनंद आ रहा था क्यों ?

4. भाषा के रंग -
(क) नीचे लिखे शब्दों को बोलते हुए अपनी कॉपी में लिखिए -
सांकृत्यायन, विद्याधर, निद ्वंद्व, माहात्म्य, मान्योरी, क्वार्टर, ग्यगर, वाङ्तू, अत्युक्ति
(ख) उदाहरण के अनुसार उपयुक्त शब्दों को जोड़कर वाक्य पूरा कीजिए -
घोड़ा ठमकने लगा। बिजली चमकने लगी।
पानी .... कोयल ....
पक्षी .... बादल ....
कुत्ते .... मेढक ....

(ग) नीचे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-
अकेला, निश्चिंत, विश्राम, अभ्यस्त, हिमालय
(घ) नीचे दिए गए वाक्यों को ठीक करके लिखिए -

- ले नहीं जाया जा सकता पहाड़ में अकेला खच्चर।
- मालूम हुआ मेला गए हुए हैं चैकीदार साहब।
- धीरे-धीरे आगे बढ़े हम।

(ङ) पढ़िए, समझिए और करिए -
ऊँची और नीची - ऊँची-नीची रात और दिन - रात-दिन
आगे और पीछे - ....
आस और पास - ....
अंदर और बाहर - ....
राजा और रानी - ....

5. तुम्हारी कलम से -
अपनी किसी यात्रा के विषय में लिखिए -

- कहाँ गए थे ?
- क्या-क्या तैयारियाँ की थीं ?
- किस साधन से गए थे ?
- रास्ते में क्या-क्या देखा ?
- उस स्थान की खास-खास बातें ....।

6. अब करने की बारी -
(क) लेखक ने जिन-जिन स्थानों की यात्राएँ कीं वह कहाँ-कहाँ स्थित है ? उन्हें मानचित्र में भी ढूँढ़िए।
(ख) आपके आस-पास कुछ लोग ऐसे होंगे जिन्होंने कभी पहाड़ी यात्राएँ की होंगी। उनके अनुभवों को सुनिए और अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1...
....

2...
....

8. इस पाठ से -

(क) मैंने सीखा -..

(ख) मैं करूँगी/करूँगा
-...

20.राष्ट्रगौरव कलाम

47HDTD

'मिसाइल मैन' के नाम से विख्यात डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम) का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम् कस्बे के समीप धनुषकोटि गाँव में हुआ था। इनके पिता जैनुल आब्दीन और माँ का नाम आशियम्मा था। बालक कलाम ने अपने माता-पिता से अनुशासन, ईमानदारी, उदारता एवं ईश्वर में असीम श्रद्धाभाव रखना सीखा।

अब्दुल कलाम की आरंभिक शिक्षा रामेश्वरम् के प्राइमरी स्कूल में हुई। वर्ष 1950 में विज्ञान में स्नातक करने के बाद वर्ष 1957 में मद्रास इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी से एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा किया। वर्ष 1958 में अपने वैज्ञानिक कैरियर के आरंभ में ही कलाम ने भारतीय फौज के लिए एक छोटा हेलीकाप्टर डिजाईन किया। 1962 में अब्दुल कलाम रक्षा अनुसंधान को छोड़ भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान में कार्य करने लगे।

अब्दुल कलाम के नेतृत्व में 1980 में रोहिणी नाम के उपग्रह को सफलतापूर्वक पृथ्वी के निकट स्थापित कर दिया गया। इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए 1981 में भारत सरकार द्वारा इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

1982 में डॉ. कलाम भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के निदेशक बनाए गए। इस दौरान अग्नि, पृथ्वी व आकाश जैसी मिसाइलों के प्रक्षेपण में कलाम ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्ष 1992 में अब्दुल कलाम रक्षा मंत्री के

विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध्ा और विकास विभाग के सचिव बने। वर्ष 1997 में अब्दुल कलाम को विज्ञान एवं भारतीय रक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत के सबसे बड़े सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1974 में पोखरण में प्रथम परमाणु परीक्षण के कार्यक्रम में कलाम एक दर्शक की तरह मौजूद थे, वहीं पर 2 मई 1998 में द्वितीय परमाणु परीक्षण का ऐतिहासिक कार्यक्रम उनकी देखरेख में संपंन हुआ। वहीं से 'जय जवान-जय किसान' के साथ-साथ 'जय विज्ञान' का भी नारा बुलंद हुआ। इस कार्यक्रम की सफलता ने डॉ. कलाम को देश का सबसे बड़ा परमाणु वैज्ञानिक बना दिया। इसके बाद देश-विदेश के कई विश्वविद्यालयों ने इन्हें डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के रूप में इस सर्वोच्च पद की शपथ ली। राष्ट्रपति के रूप में वर्ष 2002 से 2007 तक का इनका कार्यकाल देश के लिए बड़ा ही गौरवशाली रहा। 27 जुलाई 2015 को मेघालय के शिलांग में एक कार्यक्रम के दौरान व्याख्यान देते समय अचानक इनकी तबियत खराब हो गई और 84 वर्ष की आयु में इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

मिसाइल मैन कहे जाने वाले अब्दुल कलाम ने अपने शोध से देश को कई शक्तिशाली मिसाइलें दीं। डॉ0 कलाम देश को वर्ष 2020 तक परमशक्तिशाली एवं आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे।

डॉ. कलाम राष्ट्रपति पद पर आसीन होते हुए भी बच्चों की जिज्ञासाओं का तुरंत उत्तर देने के लिए तत्पर रहते थे। यहाँ बच्चों द्वारा पूछे गए कुछ सवाल और डॉ. कलाम के उत्तर दिए जा रहे हैं -

प्रश्नकर्ता ः आर. अरविंद, कक्षा: तीन, सेंट मेड्स स्कूल चेन्नई।

क्या हमें आप अपने बचपन की कोई यादगार घटना सुना सकते हैं ?

डॉ. कलाम ः मेरे कक्षा पाँच के शिक्षक श्री शिवसुब्रह्मण्यम् अय्यर की एक बात मुझे याद है। एक दिन कक्षा में वे हमें यह बता रहे थे कि कोई पक्षी कैसे उड़ता है। उन्होंने हमें रामेश्वरम के समुद्र तट पर ले जाकर उड़ते हुए पक्षी दिखाकर इसका

जीवंत उदाहरण भी दिया। वह ऐसी यादगार घटना थी, जो मेरे मन-मस्तिष्क में हमेशा के लिए बैठ गई। इसी से मुझे आगे विज्ञान पढ़ने की प्रेरणा मिली।

प्रश्नकर्ता ः सरयू मकर, कक्षा: पाँच, वाल्मीकि नगर हिंदी माध्यमिक शाला, नागपुर **बचपन में हमें किस भाषा को प्रमुखता देनी चाहिए ?**

डॉ. कलाम ः मैं स्वयं माध्यमिक शिक्षा तक की पढ़ाई अपनी मातृभाषा के माध्यम से पूरी की है। कॉलेज और उससे आगे की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम की संस्थाओं में हुई। मेरा मानना है कि हम कॉलेज में भी माध्यम के रूप में मातृभाषा का चुनाव कर सकते हैं। चूँकि युवा अपनी मातृभाषा में ही सोचता है। उसी में अपनी बात सहजता से कहने में सक्षम होता है। पर इसमें कोई दो राय नहीं कि वैश्विक स्तर पर संपर्क के लिए हमें अंग्रेजी जैसी एक संपर्क भाषा की नितांत आवश्यकता है।

प्रश्नकर्ता ः अर्श पटेल, कक्षा: पाँच, चंदुलाल विद्यामंदिर, मंुबई।

यदि हम आपकी तरह बनना चाहें तो हमें क्या करना चाहिए ?

डॉ. कलाम ः जब आप युवावस्था में कदम रखें, तभी आपको जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर लेना होगा। हमेशा कुछ बड़ा सोचो। जैसे ही यह अनुभूति हो कि आप आखिर बनना क्या चाहते हैं, तभी उस दिशा में प्रयास और श्रम प्रारंभ कर दो। जी-तोड़ मेहनत करो। ज्यों-ज्यों आप आगे की ओर बढ़ोगे, आपका सामना बाधाओं तथा कठिनाइयों से होगा। आपको अपने अंदर दृढ़ साहस पैदा करना होगा। समस्याओं को पराजित करने में महारत हासिल करनी होगी, तभी जीवन में सफल हो पाओगे। पहले यह जरूरी है कि आप निरंतर ज्ञान अर्जित करो।

प्रश्नकर्ता ः चिराग जैन, कक्षा: सात, बांबे कैंब्रिज, अंधेरी (पश्चिम), मुंबई।

वह कौन-सी बड़ी चुनौती है, जिसका सामना हमें आज करना पड़ रहा है?

डॉ. कलाम ः भारत को सन् 2020 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करना और देश के एक अरब से अधिक नागरिकों के चेहरों पर मुस्कान देखना। यही राष्ट्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है।

प्रश्नकर्ता ः हर्ष चांडक, कक्षा: सात, डॉ. एस. राधाकृष्णन विद्यालय, मलाड, मुम्बई।**आपकी दृष्टि में साहस की परिभाषा क्या है ?**

डॉ. कलाम ः अपनी जान की परवाह किए बिना दूसरों को संकट या विपत्ति से बचाना ही साहस है।

प्रश्नकर्ता ः सत्यम, कक्षा: दस, जिला स्कूल, मुंगेर।

जो भी बच्चे आपसे मिलते हैं, वे कहते हैं कि वे एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर आदि बनना चाहते हैं लेकिन किसान, मजदूर और कलाकार भी किसी राष्ट्र के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं। हम ऐसे ही परिवारों से आते हैं। हमारे लिए आपका क्या संदेश है ?

डॉ. कलाम ः किसान, मजदूर, कलाकार और दस्तकार-ये सभी हमारे राष्ट्र के अभिन्न अंग हैं। राष्ट्र निर्माण में हमें उन सभी की सेवाओं की समान रूप से आवश्यकता है। आप सभी को चाहिए कि अपने-अपने क्षेत्रों में, खूब उन्नति करें।

प्रश्नकर्ता ः एस. कार्तिक, कक्षा: 12, अमर ज्योति इंग्लिश स्कूल, बंगलूरू।

कई छात्रों के बड़े-बड़े लक्ष्य होते हैं पर आर्थिक तथा अन्य समस्याओं के कारण वे इन्हें प्राप्त नहीं कर पाते। वे अपना लक्ष्य आखिर कैसे प्राप्त करें ?

डॉ. कलाम ः स्कूल में पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करने पर छात्रवृत्ति प्राप्त होगी। साथ ही उच्च शिक्षा के लिए बैंकों से ऋण लेने हेतु पात्रता भी बनेगी। जीवन में ऊँचा लक्ष्य निर्धारित करने पर बाधाएँ तो आती ही हैं। हमें कठोर परिश्रम और उत्कृष्ट कार्यों से इन्हें पराजित करना होगा। विघ्न-बाधाओं से व्यक्ति को पराजित नहीं होना चाहिए।

अभ्यास

शब्दार्थ

सक्षम =समर्थ

पराजित करना =हराना
वैश्विक स्तर =विश्व स्तर पर
महारत =कुशलता
अवस्था =उम्र
निरंतर =लगातार
लक्ष्य =उद्देश्य
अर्जित =हासिल
शोध =खोज
आपदा =विपत्ति

1.बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क)डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
(ख)डॉ. कलाम ने किन-किन पदों पर कार्य किया ?
(ग)'जय विज्ञान' का नारा कब बुलंद हुआ ?

2.सोच-विचार: बताइए -
(क)कलाम की तरह बनने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
(ख)राष्ट्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती क्या है ?
(ग)कलाम जी ने साहस की क्या परिभाषा बताई है ?
(घ)राष्ट्र निर्माण में योगदान हेतु कलाम जी ने क्या संदेश दिए ?

3.तुम्हारी कलम से -
आप बड़े होकर क्या बनेंगे, इस बारे में आपका भी कोई सपना होगा। लिखिए -

- आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं ?
- आपने यह बनना ही क्यों चुना है ?
- आप इस सपने को पूरा करने के लिए क्या-क्या करेंगे ?

4.भाषा के रंग
नीचे लिखे शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए -
जैसे वर्ष + इक = वार्षिक
संस्कृति + इक =

धर्म +इक =
अर्थ +इक =
साहित्य + इक =
मंगल +इक =
समाज + इक =

5.अब करने की बारी -

(क)कलाम जी के बारे में एक बात और - उनके शिक्षक ने जीवंत उदाहरण से उनके अंदर विज्ञान विषय के प्रति रुचि उत्पन्न कर दी थी। क्या आपके भी किसी अध्यापक ने आपको इस प्रकार की प्रेरणा दी है ? अपना अनुभव साझा कीजिए।

(ख)तुम्हारे आस-पास ऐसे बहुत से सफल व्यक्ति होंगे जिनसे तुम प्रभावित होगे या जिन्हें तुम बहुत पसंद करते होगे। उनके व्यक्तित्व, क्रियाकलाप, सफलताओं के बारे में जानने हेतु आप अपने शिक्षक की मदद से कुछ प्रश्न बनाइए। इन प्रश्नों के माध्यम से उनका साक्षात्कार लीजिए।

(ग)अब्दुल कलाम के विषय में अपने शिक्षकों तथा पुस्तकालय के माध्यम से और भी जानकारी एकत्र कीजिए।

(घ)अपनी कुछ खट्टी-मीठी यादें अपने कक्षा के साथियों से साझा कीजिए -

- विद्यालय में पहला दिन
- मेले की मौज
- दीपावली की शाम
- साफ-सुथरे स्कूल की खुशी
- होली का हुड़दंग
- दावत

6.मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1..
....

2..
....

7.इस पाठ से -
(क)मैंने सीखा-...
(ख)मैं करूँगी/करूँगा
-..

यह भी जानिए -

किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन एवं कार्यों के बारे में जानने के लिए हम उसका साक्षात्कार या इंटरव्यू लेते हैं। अखबार, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो व दूरदर्शन आदि में इनका प्रकाशन/प्रसारण होता है। साक्षात्कार के समय हम अपने प्रश्न उस व्यक्ति से पूछते हैं, जिनका वह उत्तर देता है। इन उत्तरों को लिख अथवा रिकार्ड कर लिया जाता है। उत्तरों को लिखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि विचारों की भाषा यथासंभव वही हो जो उस व्यक्ति ने प्रयोग की है।

21.रघुकुल-रीति

47R9V1

बहुत समय पहले की बात है। अयोध्या में राजा दशरथ का राज्य था। एक दिन दरबार में मंत्रणा चल रही थी तभी द्वारपाल अंदर आया। उसने सूचना दी कि महर्षि विश्वामित्र पधारे हैं। महाराज दशरथ तत्काल अपना आसन छोड़कर खड़े हो गए। महर्षि की आगवानी करने द्वार की ओर बढ़े और उन्हें लेकर दरबार में आए।

महर्षि के स्वागत-सत्कार के बाद राजा दशरथ ने कहा, "आज्ञा दें महर्षिवर! मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" "राजन! मैं जो माँगने जा रहा हूँ उसे देना आपके लिए कठिन होगा" विश्वामित्र बोले। "आप आज्ञा दीजिए, महर्षि! मैं उसे पूरा करने के लिए तत्पर हूँ। बिल्कुल नहीं हिचकूँगा।" राजा दशरथ ने कहा "मैं एक यज्ञ कर रहा हूँ। अनुष्ठान लगभग पूरा हो गया है लेकिन दो राक्षस उसमें बाधा डाल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उन राक्षसों को केवल एक ही व्यक्ति रोक सकता है। वह राम हैं। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को मुझे दे दें ताकि यज्ञ निर्विघ्न पूरा हो सके।" विश्वामित्र ने कहा। राजा दशरथ पर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह अचकचा गए। उन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि मुनिवर उनके प्रिय राम को माँग लेंगे। दशरथ चिंता में पड़ गए।

विश्वामित्र दशरथ की दुविधा समझ रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं राम को केवल कुछ दिनों के लिए माँग रहा हूँ। यज्ञ दस दिन में संपन्न हो जाएगा।" महाराज दशरथ पुत्र-वियोग की आशंका से काँप उठे। दरबार में सन्नाटा छा गया। दशरथ की दशा

देखकर मंत्री चिंतित थे, पर चुप थे। महर्षि वशिष्ठ शांत थे। इतने में दशरथ काँप कर बेहोश हो गए। होश आया तो डर ने उन्हें फिर जकड़ लिया। संज्ञाशून्य होकर दोबारा गिर पड़े।

किसी अनिष्ट की आशंका से सभी दरबारी सशंकित थे। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे। महर्षि और महाराज के बीच संवाद में कुछ बोलना उचित भी नहीं था। मुनि वशिष्ठ चुपचाप आकर महाराज दशरथ के पास खड़े हो गए।

थोड़ी देर बाद दशरथ की चेतना लौटी तो उठे। स्वयं को सँभालते हुए उन्होंने महर्षि विश्वमित्र से विनती की, "महामुनि! मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ है। वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? राक्षस मायावी हैं। वह उनका छल-कपट कैसे समझेगा? उन्हें कैसे मारेगा? इससे अच्छा तो यही होगा कि आप मेरी सेना ले जाएं। मैं स्वयं आपके साथ चलूँगा। राक्षसों से युद्ध करूँगा। "मैं राम के बिना नहीं रह सकता, महामुनि! एक पल भी नहीं। आप राम को छोड़कर जो चाहे माँग लें, उसे मत ले जाइए।

महर्षि विश्वामित्र ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। उन्हें अपने यज्ञ के नियम याद थे। क्रोध करने से यज्ञ खंडित हो जाता। अनुष्ठान अधूरा रह जाता। महर्षि विश्वामित्र बोले "आप रघुकुल की रीति तोड़ रहे हैं, राजन। वचन देकर पीछे हट रहे हैं। आप जानते हैं कि मैं स्वयं दुष्ट राक्षसों का संहार कर सकता था लेकिन मैंने संन्यास ले लिया है। अगर आप राम को मेरे साथ नहीं भेजेंगे तो मैं यहाँ से खाली हाथ लौट जाऊँगा।"

बात बिगड़ती देखकर मुनि वशिष्ठ आगे आए। महाराज दशरथ को समझाते हुए कहा - "राजन, आपको अपना वचन पूरा करना चाहिए। रघुकुल की रीति यही है। प्राण देकर भी आपके पूर्वजों ने वचन निभाया है, आप राम की चिंता न करें। महर्षि के होते उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" महाराज दशरथ की चिंता कुछ कम हुई पर मन अब भी खिन्न था। गुरु वशिष्ठ ने कहा, "महाराज, महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष हैं। तपस्वी हैं। अनेक गुप्त विधाओं के जानकार हैं। वह कुछ सोचकर ही यहाँ आए हैं। राम उनसे अनेक नई विद्याएँ सीख सकेंगे। आप राम को महर्षि विश्वामित्र के साथ जाने दें। राम को उन्हें सौंप दें।"

दशरथ ने मुनि वशिष्ठ की बात दुखी मन से स्वीकार कर ली लेकिन वह राम को अकेले नहीं भेजना चाहते थे। उन्होंने विश्वामित्र से आग्रह किया कि वे राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण को भी ले जाएँ। महर्षि विश्वामित्र ने महाराज दशरथ का यह आग्रह स्वीकार कर लिया।

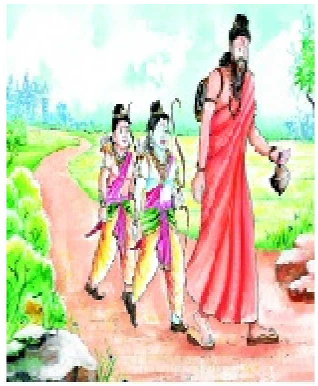

राम और लक्ष्मण को तत्काल दरबार में बुलाया गया। महाराज दशरथ ने उन्हें अपने निर्णय की सूचना दी। दोनों भाइयों ने सिर झुकाकर उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

इसकी सूचना माता कौशल्या को दी गई। बताया गया कि राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ वन जा रहे हैं। नितांत गंभीर माहौल में स्वस्तिवाचन हुआ। शंखध्वनि हुई। नगाड़े बजे। महाराज दशरथ ने भावुक होकर दोनों पुत्रों का मस्तक चूमकर उन्हें महर्षि को सौंप दिया। दोनों राजकुमार बिना विलंब किए महर्षि के साथ चल पड़े। बीहड़ और भयानक जंगलों की ओर। विश्वामित्र आगे-आगे चल रहे थे। राम उनके पीछे थे। लक्ष्मण राम से दो कदम पीछे। अपने धनुष सँभाले हुए। पीठ पर तूणीर बाँधे। कमर में तलवारें लटकाए।

अभ्यास

शब्दार्थ

गहन = गूढ़, गहरी

तत्पर = तैयार

सिद्ध पुरुष = वह व्यक्ति जिसे योगादि में सिद्धि प्राप्त गई हो

अनुष्ठान = धार्मिक कृत्य

संज्ञा शून्य होना = बेसुध होना

आशंका = भय
बिजली गिरना = सन्न रह जाना
सशंकित = डरा हुआ
अनिष्ट = अशुभ
खंडित = अपूर्ण
सूचक = सूचना देने वाला
संहार = नाश, ध्वंस
खिन्न = दुखी, उदास
बिछोह = अलग होना, वियोग
आग्रह = हठपूर्वक प्रार्थना
नितांत = अत्यधिक
स्वस्तिवाचन = मंगल पाठ
तूणीर = तरकस

1.बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -
(क)राम कौन थे ?
(ख)विश्वामित्र ने महाराज दशरथ से राम को क्यों माँगा ?
(ग)विश्वामित्र अपना क्रोध क्यों नहीं व्यक्त कर रहे थे ?
(घ)गुरु वशिष्ठ ने महर्षि विश्वामित्र के साथ रहने पर राजकुमार राम को होने वाले लाभों के बारे में महाराज दशरथ को क्या बताया ?
(ङ)पाठ में आए नामों के लिए कुछ सम्मानपरक शब्द लिखे गए हैं। उन्हें छाँटकर नीचे लिखे नामों के सामने लिखिए-
विश्वामित्र-..
दशरथ-..
वशिष्ठ -..
2.सोच-विचार: बताइए -
(क)आपको किन-किन बातों पर क्रोध आता है ?
(ख)क्रोध आने पर आप क्या करते हो ?

(ग)क्रोध से आपको क्या हानि अथवा लाभ होता है ?
(घ)किसी को कोई बात कब समझायी जाती है ?
(ङ)आपको कब, किसने, किस बात पर क्या समझाया ?

3.भाषा के रंग -

(क)शब्द एक जैसे, अर्थ दो -

नीचे कुछ शब्दों के जोड़े लिखे हैं, जिसके अर्थ अलग-अलग हैं। इन्हें इस प्रकार अपने शब्दों में प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।

कुल-कूल
गृह-ग्रह
वंश-किनारा
घर-आकाशीय पिंड जैसे पृथ्वी

(ख)नीचे लिखे शब्दों को सही वर्तनी में लिखिए -

वशिष्ट -.....................
राक्षस -......................
सन्यास-.....................
महर्सी -......................
आर्शीवाद-...................
रिति-.........................

(ग)अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

बिजली गिरना-...
संज्ञा शून्य होना -...

4.तुम्हारी कलम से -

विश्वामित्र के साथ राम व लक्ष्मण के जाने की इस घटना को अपने शब्दों में लिखिए।

5.अब करने की बारी -

(क)इस कथा पर अपनी कक्षा में अभिनय कीजिए।
(ख)इससे आगे की कथा ज्ञात कीजिए -

- अपने पुस्तकालय से पुस्तक लेकर
- टेलीविजन, कंप्यूटर अथवा मोबाइल फोन पर

- अपने बड़ों से पूछकर

6.मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -
1..
....
2..
....
7.इस पाठ से -
(क)मैंने सीखा -...
(ख)मैं करूँगी/करूँगा
-...

कितना सीखा- 4

1.नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए अर्थ बताइए -
गंतव्य, स्मृतिशाला, श्रद्धा, शिष्य, गुरु, परिश्रम, प्रस्थान, अस्तबल, अनुसंधान, जिज्ञासा, जीवंत, ज्येष्ठ।
2.नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए -
आकाश, ताजा, छाँव, मित्रता, सुयश, जीत, विश्वास
3.चार-चार शब्द लिखिए जो उपसर्ग और प्रत्यय के योग से बने हों।
4.नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए -
गंगा, पवन, पेड़, आग, पुत्र, पुस्तक
5.नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ सहित अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
घी के चिराग जलाना, हक्का-बक्का रह जाना, कलेजा धक-धक करना
6.उत्तर दीजिए -
(क)खरगोश को किस बात का विश्वास था ?
(ख)वीर का मान कब बढ़ जाता है ?
(ग)नगर का नाम अंधेर नगरी क्यों पड़ा था ?
(घ)यात्रा में कुछ ही दूर जाने के बाद घोड़ा क्यों ठमकने लगा ?

(ङ)किस कार्यक्रम की सफलता ने डॉ. कलाम को देश का सबसे बड़ा वैज्ञानिकबना दिया।
(च)महर्षि विश्वामित्र दशरथ के पास क्यों गए थे ?
7.ये कथन किनके हैं -
(क)जय जवान जय किसान ....
(ख)आराम हराम है ....
(ग)उत्पादन बढ़ाओ, खर्च घटाओ और अपव्यय बिल्कुल न करो ....
8.उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग कीजिए -
(क)संयुक्त राज्य अमेरिका एक विशाल देश हैं
(ख)तुमने यह क्या किया
(ग)अरे तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए
9.पेड़ों के महत्व पर स्लोगन लिखिए। पोस्टर बनाइए।
10.कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए-
यहीं कहीं पर बिखर गयी वह,
....
उसके फूल यहीं संचित हैं।
....
11.पाठ्यपुस्तक की कहानी 'रघुकुल रीति' को अपने शब्दों में सुनाइए।
12.विद्यालय में आयोजित किसी प्रतियोगिता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
13.आपको अपने ग्राम प्रधान/सभासद का साक्षात्कार लेना है। उनसंे पूछने के लिए पाँच सवाल बनाइए।
14.असंगत शब्दों पर घेरा लगाइए-
(क)हाथी, घोड़ा, पालकी, ऊँट,
(ख)जौ, सेब, केला, संतरा
(ग)कॉपी, किताब, कलम, अलमारी।
15.संगत शब्दों में तीन-तीन शब्द और जोड़िए-
(क)गुलाब, गेंदा, गुड़हल ....
(ख)गेहूँ, चना, मटर ....

अपने आप-4
परमवीर चक्र

परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च वीरता सम्मान है। यह सैन्य सेवा तथा उससे जुड़े हुए लोगों को अद्वितीय साहस, उच्चकोटि की शूरवीरता एवं त्याग का परिचय देने पर प्रदान किया जाता है। यह हमारे देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' के बाद सबसे प्रतिष्ठित सम्मान है जिसे महामहिम राष्ट्रपति विशिष्ट समारोह में अपने हाथों से प्रदान करते हैं। यह सम्मान थल सेना, जल सेना तथा वायु सेना तीनों सेनाओं के वीरों को समान रूप से दिया जाता है। 26 जनवरी 1950 से प्रारंभ किया गया यह सम्मान मरणोपरांत भी दिया जाता है।

अभी तक कुल 21 शूरवीरों को 'परमवीर चक्र' प्रदान किया गया है। इनमें से 14 को मरणोपरांत यह सम्मान प्रदान किया गया है।

सबसे पहली बार परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को 3 नवम्बर 1947 में मरणोपरांत दिया गया। जबकि अभी तक सबसे कम उम्र (मात्र 19 वर्ष) में यह सम्मान कमांडर योगेंद्र सिंह यादव को 6 जुलाई 1999 में जीवित रहते प्रदान किया गया है।

उत्तर प्रदेश के जिन शूरवीरों को अभी तक 'परमवीर चक्र' सम्मान से विभूषित किया गया है, उनके नाम हैं-

1. नायक जदुनाथ सिंह राजपूत-वर्ष 1948, जन्मस्थान-शाहजहाँपुर (मरणोपरांत)
2. हवलदार अब्दुल हमीद- वर्ष 1965, जन्मस्थान - गाजीपुर (मरणोपरांत)
3. लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे - वर्ष 1999, जन्मस्थान- सीतापुर (मरणोपरांत)
4. कमांडर योगेंद्र सिंह यादव - वर्ष 1999, जन्मस्थान- बुलंदशहर (जीवित)

हमें मातृभूमि के इन सपूतों पर सदैव गर्व करना चाहिए।